पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

अंक 67–68 (संयुक्तांक) मार्च–जून 2013

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

सह–संपादक
विष्णुदेव, सान्त्वना,
सुशील कुमार तिवारी, हीरा लाल 'हीरा'

सज्जा
आस्था

कंपोजिंग
कम्प्यूटर्स प्वाइंट
भृगु आश्रम, बलिया

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

संपादक
अशोक द्विवेदी

विशेष प्रतिनिधि
सुशील कुमार तिवारी (नई दिल्ली), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), विष्णुदेव तिवारी (बक्सर, आरा), विजय राज श्रीवास्तव (लखनऊ), गंगा प्रसाद 'अरूण', अजय कुमार ओझा (जमशेदपुर), डॉ0 ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डा0 कमलेश राय (मऊ, आजमगढ़), डा0 वशिष्ठ अनूप विनोद द्विवेदी (वाराणसी), आकांक्षा (मुम्बई) आनन्द सन्धिदूत (मिर्जापुर), मिथिलेश गहमरी, कुबेर नाथ पाण्डेय (गाजीपुर), हीरालाल 'हीरा' (बलिया), प्रभात कुमार तिवारी (तूरा, मेघालय), रामानन्द गुप्त (सलेमपुर, देवरिया), प्रशान्त द्विवेदी (कोलकाता)

संपादन-कार्यालयः-
टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001 एवं
श्री राम बिहार कालोनी, जिला जेल के पीछे, बलिया
फोन-05498-221510, मो0-08004375093
e-mail :- ashok.dvivedipaati@gmail.com

एह अंक पर सहयोग- 30/-
सालाना सहयोग राशि - 130/- (डाक व्यय सहित)

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ : ओसे पत्रिका परिवार क सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में.......

हमार पन्ना
- माई के इयाद/3
- सियासत के ताल मतरा आ देस–दुरदसा/4

इयाद के ऐना
- कैलाश गौतम – 1. हाय रे गंगा / 5
  2. जेतने रागी ओतने डफली/ 6–7

अस्मिता चिंतन
- भोजपुरी के बचावे के बा त.../ ओम प्रकाश सिंह/ 8

दस्तावेज
- राहुल सांस्कृत्यायन के नाटक 'नइकी दुनिया' / 9–23

आत्मकथा
- हमरा के हीन मत समझीं/डा0 आशा रानी लाल/ 53–55

कविता/गीत/गजल
- वशिष्ठ अनूप/7
- अक्षय कुमार पाण्डेय/24
- शशिप्रेमदेव/23
- मिथिलेश गहमरी/ 24
- ब्रम्हेश्वर नाथ शर्मा/ कवर–3

कहानी
- नइ के चलऽ/ प्रेमशीला शुक्ल/25–28
- खँड़हर/ओमजी प्रकाश/ 29–32
- अँजोर के अँकवारी/ डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव/ 33–35
- केकरा के कोसीं/ अतुल मोहन प्रसाद/ 50–51

विमर्श/आलोचना
- 'बउधायन' : बौद्ध धर्म आ संस्कृति के अद्‌भुत दस्तावेज/डा0 अशोक द्विवेदी/ 36–40
- भोजपुरी लोक के भावबोध के प्रतिबिंब : भोजपुरी कहानी/ विष्णुदेव तिवारी/ 41–49

लघुकथा
- जरूरी काम करावे वाला आदमी/विनोद द्विवेदी/ 52
- हरदी–नीम/राजगुप्त/ 51

ललित लेख
- भाषा ज्ञान के भूत/ अनन्त प्रसाद रामभरोसे/ 56

किताब–चर्चा/समीक्षा
- 'परिवार सतक' : दोहा के बहाने परिवारिक सरोकार/ डा0 भारवि/ 57–58
- मानवीय संवेदना के दिशा तलाशत ''भूमिहीन''/कन्हैया सिंह 'सदय'/ 58–60
- भोजपुरी में जपनिया छंद : 'लुतुकी'/शिवजी पाण्डेय/ 61–61

संस्था/साहित्यिक रिपोट
- विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया इकाई के सालाना गतिविधि/ 62–63
- 'पाती' के अक्षर–सम्मान–समारोह/ 63–64

[एक] माई के इयाद आ ओकर नसीहत

हमहन का परम्परा में 'माई; (माँ) के सर्वोच्च दर्जा (देवतो– पित्तर ले बढ़ि के) मिलल त साइत एही से कि ऊ हमन के जीवन आ व्यक्तित्व के आकार देबे वाली जननी हऽ। माई कबो धरती, कबो प्रकृति कबो देवी का रूप में बखानल गइल। ऊ माइये हऽ जेवन अपना सन्तान के रच्छा खातिर जमराजो से लड़े के साहस राखेले। तमाम दुख–तकलीफ आ संकट में अपना छाती से लगा के संरक्षा देबे वाली, अपना दूध से जियावे वाली माई पहिल गुरू, पहिल–संरक्षक आ पहिल संस्कारक हवे। माई के अराधना देवी आ दुरूगा रूप मे कइलो का बाद एगो युग –सत्य ईहो बा कि माई के आस्था आ विश्वास भरल ऊ पूजनीय स्थान अब नइखे रहि गइल। अब जबकि माई के इयाद खातिर 'मदर्स डे' मनावल जा रहल बा, ऊ एगो खास दिन मोबाईल पर माई के गोड़ लगला आ कुशल छेम पुछले तक सीमित हो के रहि गइल बा। औपचारिकता – पूर्ति में नया जमाना क बेटा– बेटी या तऽ माई के इयाद क के चुपा जालन स, या कवनो गिफ्ट से भा मीठ बचन बोल के प्रेम क इजहार क देलन स। सोचे वाली बाति ई बा कि माई एह एक दिन के खाना पूर्ति आ देखावटी नेह छोह में बन्हाये वाली चीझु हो सकेले ?

माई, जेवन सगरी दुख, उपेक्षा अपमान आ तिरस्कार का बादो, समर्पित होके अपना संतान के सेवेले जवन अपना संतान के छोट–छोट खुशी आ तरक्की पर अगराइ के न्यौछावर होले, जेवन अपना संतान के हर संकट आ अभाव से बचावे खातिर कुछु उठा ना राखेले, जवन अपना सुख–सुविधा, आराम के त छोड़ीं, अपना भूखि आ नींन के खियाल ना करेले, ऊ माई खाली एगो हाड़–मांस के पुतरी ना नु हऽ। माई–पिता, गुरू भाई, मित्र आ सलाहकार का रूप में संतान के जिनिगी के राह देखावेले। अथाह ममत्व का बादो ओके डाँट फटकारि के गलत आ सही के अन्तर समुझावेले, अन्हार से अँजोर तक ले जाले, जरूरत परला पर अपना संतान के गलती पर ओके कठोर दण्ड से बचावे खातिर मय अछरँग अपना कपार पर ले लेले। माई क खाली 'देवकी' (जननी) रूप ना हऽ, 'जसोदो' (पालक) रूप हऽ, ऊहे 'जीजा बाई' बनि के 'शिवजी' बनावेले। अगर सर्वेक्षण करावल जा त पता चली कि सत्तर प्रतिशत माई अपना संतान खातिर, अपना 'निज' के विकास आ सपना के भुला जाली सन। संतान माई के ऊ 'कबित्त' हऽ जवन खराबो रहला पर ओके हमेशा नीक लागेला– 'निजी कबित्त केहि लागि न नीका'। घीव के लड्डू टेढ़ो भला। अगर सचहूँ संतान के 'मदर्स–डे' मनावे के बा त माई के निष्ठा, प्रेम आ आदर से इयाद रखला का साथ ओकरा सेवा के संकल्प के चरितार्थ कइला के बा। ओइसे त माई के रिन (करजा) से उरिन भइल सम्भव नइखे, बाकि मन, बचन, कर्म से ओके एही के उपाय आ उतजोग करत रहे के चाही। माई के गहिराई आ बिस्तार एगो दिन में ना बान्हल जा सके। माई स्थिर ना, गति हऽ। ऊ अपना संतान का दिल में निरन्तर धड़के वाली धड़कन हऽ। माई ऊ अदृश्य शक्ति हऽ जवन अपना संतान के चेहरा के हाव–भाव आ ओकरा एगो कथन मात्र से ओकरा भीतर छुपल मरम के जानि जाले। ओकरा रूचि अरूचि आ इच्छा के पहिचान जाले। बे बतवले संतान के भूख, नींन, क्रिया, प्रतिक्रिया के अंदाजा लगा लेले। माई के महता बखानल ना जा सके, ऊहे आदि हऽ त अनन्त ऊहे हऽ।

ऊ संतान धन्य बाड़न जेवन अपना माई के एह रूप में स्वीकार कइले बाड़न। माई का समरपन आ आदर्श का अनुसार खुद के गढ़े आ बदले के कोशिश कइले बाड़न। धन्य बा ऊ संतान, जवन अपना कल्पना, अपना सोच आ व्यवहार में 'माई' का प्रति निष्ठावान आ कृतज्ञ बा। धन्य बा ऊ सन्तान जेके माई के नेह–छोह, दुलार, फटकार, नसीहत, आ आशीष मिल रहल बा।

[दू] सियासत क ताल मतरा आ देस के दुरदसा

सियासत गजब क चीजु हऽ। आपन छबि बनावे खातिर दोसरा क छबि बिगाड़े के पड़ेला। आपन चमकावे खातिर दोसरा प धूर डालल, सियासत करे वालन क हुनर हो गइल बा। बलुक आपन खोट मेटावे खातिर दोसरा के खोट देखावल आ अपना किरकिरी पर लीपापोती कइल, सत्ता का सियासत क जानल पहिचालन ह्थकंडा हो गइल बा। खिस्सा कहल जाला कि मलिकार आ पहरेदार जब घरकचे में अझुराइल रही त बहरवार का देखी? आपदा से निपटे के तइयारी आ तत्परता खातिर जिमवारी लिहल आ झटपट कारवाई कइला में देरी ना करे के चाहीं, बाकि हमन का देस के मालिक–मुख्तियारन का घिचिर–फिचिर आ लापरवाही का चलते कबो पाकिस्तान, कबो लंका कबो बंगलादेस आँख देखावत, मुख बिरावत रहेला आ चीन बीस बीस किलोमीटर भितरी घुसि के घसनाठ अस पटा जाला। अउर ना तऽ टोकला पर घुडुकबो करेला।

मलिकार आ ओकर लंबरदार सरदारन का जिम्मे जबानी जमाखर्च जादा बा। विरोधी पाटी आ विरोध करे वाली जनता के झँपिलावे बरगलावे आ बेजरूरत पुलिस–सी.बी.आई का जोर पर फँसा के हुरपेटला का अलावे अगर एह सियासी राजनीतिज्ञन के कुछु आवेला त सिरिफ तिकड़म, घोटाला आ भ्रष्टाचार। एह राजनेतन के देस आ देस का जनता के फिकिर कम, आपन आ अपना परिवार क चिन्ता जादा रहेला, तब्बे न एह देस के नागरिक दोसरा देसन मे ओछ आ असुरक्षित मानल जाला। दोसरा देस में खैर छोड़ीं, अपने देस में ऊ कतना सम्मानित आ सुरक्षित बा ? मय साधन–सुविधा आ सुरक्षा त सियासतदान, अफसरशाह आ ताकतवर लोगन का चक्कर में चक्कर मार रहल बिया। सबसे दुख के बात ई बा कि हमन किहाँ 'विश्वास' पर संकट बा, ना पुलिस, ना सी.बी.आई., ना न्याय–व्यवस्था आ ना सरकारी तंत्र कवनो के विश्वसनीयता ताल ठोंक के देखावे बतावे लायक नइखे त एकरा पाछा सिरिफ एकहीं कारन बा कि हमहन का लगे मजबूत, इमानदार आ विश्वसनीय नेतृत्व नइखे। सबकुछ बदल देबे, ठीक–ठाक कर देबे के निर्णायक इच्छा शक्ति नइखे। मनसा–वाचा–कर्मणा तालमेल आ गति नइखे। अइसना में देस आ देस का आम लोगन क दुर्दसा ना होई त का होई........? सोचे वाली बात ई बा कि का एह कुलि खातिर हमहन का जिमवाद नइखीं जा ?

" सरधांजलि "

गंगा–संस्कृति के निष्ठावान साधक– ***डा० वीरभद्र मिश्र***

भोजपुरी के समर्पित कथाकर– ***गिरिजाशंकर राय*** 'गिरिजेश' आ

यशस्वी कवि ***श्री श्रीकृष्ण तिवारी***

के

'पाती' परिवार के विनम्र सरधांजलि...।

इयाद क ऐना

कैलाश गौतम

बरिस 1944 में (डिग्घी) चन्दौली (उ0प्र0) में जनमल कवि कैलाश गौतम के जथारथ–बोध, समाजिक, राजनीतिक जथारथ क नीमन–बाउर, संगति–विसंगति का गहिर बोध आ मानवीय मूल्यन का चिन्ता से उपजल–बनल हऽ। उनकर कविताई अपना लोक संवेदन आ ठेठ भाषिक तेवर से, भोजपुरी में आपन अलग पहिचान आ सम्मान बनवलस। समाजिक–राजनीति क व्यवस्था का विद्रूप प' उनकर सहज टिप्पणी जतने सटीक ओतने धारदार लगेले। बनारसी बोली के ठेठ तेवर, उनका कविताई के मौलिक विशेषता हऽ। अपना समय के उकेरत उनकर कविता अजुओ ओतने प्रासंगिक बा, जतना लिखे का समय रहे। पढ़वइयन का आस्वाद खातिर उनकर कुछ कविता इहाँ दिहल जा रहल बा। खास तौर पर 'गंगा' के दुर्दशा प लिखल कविता, स्वार्थी आ लुटेर लोगन का साथ साथ गंगा पर सरकारो का बनावटी चिन्ता के पोल खोलत, आस्थावान गंगा–संस्कृति प्रेमियन का हिया में विषाद घोरे आ सचहूँ गंगा जइसन पवित्र नदियन खातिर कुछ सोचे आ उतजोग करे खातिर दिहल जा रहल बा। ओइसहीं नाटकीय राजनीति का एह समय में, जतना डफली ओतने राग बा; त बिना सन्मति, बिना विवेक आ बिना एकता के कवनो भारी बदलाव क उमेद, एगो चमत्कारे जस लागी।

❑ **संपादक**

[एक] हाय रे गंगा...

ई देखा सुजनी, संजोग
बइद के घर में रोगै रोग
हाय रे गंगा वाह रे लोग।।

आंख भरल हौ मुंह उतरल हौ
जइसे कवनो गाढ़ परल हौ
आंख में आंख डाल के देखा
माथे पर चिन्ता क रेखा
अब गंगा बाजार में रहिहन
ना काशी–हरिद्वार में रहिहन
सबहीं दुहै निचोड़ै में हौ
सोना चानी जोड़ै में हौ
हाड़–हाड़ त देह भइल हौ
हंसी ठिठोली रेह भइल हौ
गंगै पर सब टूट रहल हौ
हिक भर अपने लूट रहल हौ
हाय रे गंगा वाह रे लोग।।

ऊ आदर सत्कार भूल जा
परब अउर तिहुवार भूल जा
खड़ा भूत अस शहर देखला
घाट घाट पर जहर देखला
बिना जान क लहर देखला
गगा भइलीं नहर देखला
नाव नियर मझधार में गंगा
का देखीं अखबार में गंगा
खूब आज खैरात बंटत हौ
पइसा त इफरात बंटत हौ
अइसे में जे हाथ न धोई
अगिले जनम छुछुन्नर होई
हाय रे गंगा वाह रे लोग।।

अइसैं रो–रो बहल करा तू
घाट पकड़के रहल करा तू
तोहैं देख जिउ धक से होला
अइसन काहें, बोला–बोला
खूब दउरलू खूब परइलू
कहीं बन्हइलू कहीं टंगइलू
आंख में कीचँर मुंह पर फेफरी
रेत में जइसे हाँफै मछरी

दूध बतासा पान सोपारी
सब हीं जाई बारी–बारी
कथा कीरतन भजन हेराई
अब के गाई पीर पराई
हाय रे गंगा वाह रे लोग।।

सब तोहरै उद्धार करत हौ
आपन बेड़ा पार करत हौ
घाट के खातिर मार होत हौ
नई गोल तइयार होत हौ
खाली सोरैसोर हौ माई
साँसत में जिउ तोर हौ माई
तोहई से हौ भाड़ा भत्ता
तोहीं आज तुरूप क पत्ता
अइसैं तू हर साल झुरइबी
हम्मैं कवनी ओर बोलइबी
ना अइबी पहिचान में अब तू
रहबी बस गोदान में अब तू
हाय रे गंगा वाह रे लोग।।

छोटका बड़का तीरथ रोइहैं
पुक्का फार भगीरथ रोइहैं
गागर रोइहैं सागर रोइहैं
रतनाकर–पद्माकर रोइहैं
आर–पार क माला रोइहैं
घाटै घाट शिवाला रोइहैं
झंडी रोइहैं झंडा रोइहैं
घर में बइठल पंडा रोइहैं
बालू बालू नइया रोइहैं
धै धै पेट खेवइया रोइहैं
बस हमरे सरकार न रोइहैं
दइब क ठेकेदार न रोइहैं
हाय रे गंगा वाह रे लोग।।

एक दिना हम सपना देखली
गंगा क इनजेकसन निकली
मरै के बेरी सब लगवाई
ईहै अंतिम रही दवाई
असली नकली ना फरियाई
छोटकी सिसिया ढेर बिकाई
गंगा देसी घिउ हो जइहैं
सौ–सौ रूपया बूंद बिकइहैं
सीसी में बोतल में गंगा
बड़े–बड़े होटल में गंगा
तरह–तरह के रेट में गंगा
बैपरियन के पेट में गंगा
हाय रे गंगा वाह रे लोग।।

●●●

[दू] जेतनै रागी औतनै डफली

जेतनै रागी औतनै डफली
राम व्यवस्था कबले बदली !

घर घर में हौ ईहै चर्चा
नौ क लकड़ी नब्बे खर्चा
फिर सबके बैकूफ बनौलें
झंडा, नारा भासन पर्चा
फिर वइसै तरसावे पानी
फिर वइसै तरसावे बिजली।

पानी महँगा खून ह सस्ता
चकाचौंध में गायब रस्ता
का छोटका का बड़का देखा
सबहीं क हौ हालत खस्ता
अपराधी से डरैं सिपाही
सनमुख होतें झाँकैं बगली।

कोर्ट बिकत फैसला बिकत हौ
गुन्डन में अब जिला बिकत हौ
बैपारिन में सउदा जइसै
नेतन में इन्डिया बिकत हौ
असली बस लेबिल हौ ऊपर
भित्तर माल भरल हौ नकली।
अपने के गरियावैं मिसिरी
कौनो काम न आइल डिगिरी

चौबिस पन्नी तीन पंच में
सोरह पन्नी बड़े चउघरी
साधू के धुकधुकी लगल हौ
सधुवाइन के आवे मिचिली।

देश में आग लगावै वाले
दुनिया के भरमावै वाले
कल भी रहलैं आज भी हउवें
उल्लू सभै बनावे वाले
अब ना मानब फोरब भंडा
बहुत दिना हम तोपलीं ढँकली।

जहवाँ गइलीं ढाढ़ो रानी
पड़ल पहुँचते पाथर–पानी
झुट्ठा बाबा पैर पुजावैं
मुंह देखैं ज्ञानी विग्यानी
कोने में रोवत हौ देखा–
गान्ही जी क चर्खा–तकली।

जेतनै रागी औतनै डफली
राम बेवस्था कबले बदली ?

●●●

दू गो ग़ज़ल

❑ वशिष्ठ अनूप

[एक]

केहू राहि रोके, केहू रोके नारी
मचल बा अजब गाँव में मारा–मारी।
भला आदमी कइसों इज्जत जोगावे
लफंगा चले चार पहिया सवारी।
कहूँ बैल–बछड़ा न एक्को देखाला
बँचल बा दुआरे प कुक्कुर–बिलारी।
शहर में बसे के लगल होड़ सबमें
कटल आम–महुआ, बिकल खेत–बारी।
कहीं ढोल कऽ थाप नाहीं सुनाता
बहुत सून लागेला होली–दिवारी।
कमाए गइल पूत आइल न अबतक
अगोरे दुवारी प' बुढ़िया बिचारी।

[दू]

तुहार ध्यान अकेले में जब्बे आ जाला
कई चिराग अन्हारे में जगमगा जाला!
गजब क चाल, नयन में कमाल कऽ जादू
होस कऽ पाँव अचक्के में डगमगा जाला!
हँसेलँ फूल खिलखिला के कई रंगन के
अजीब गंध से घर–द्वार महमहा जाला!
बेचारा चाँद डेराइल रहेला तोहरा से
तोहके देखेला त बादर में ऊ लुका जाला!
घुमड़ि के जब बरसि जाले याद कऽ बदरी
मन त भीजेला मगर प्रान तड़फड़ा जाला!

●●●

अस्मिता–चिन्तन

भोजपुरी के बचावे के बा त गीत गवनई के ऊपर उठे के पड़ी

❑ ओम प्रकाश सिंह

भोजपुरी खातिर चिंतित रहे वाला अनेके संस्था सोसाइटी बन गइल बाड़ी सँ, जवन हमेशा भोजपुरी खातिर कुछ ना कुछ करत रहेली सँ. कबो आन्दोलन कर के, त कबो सम्मेलन समारोह कर के। ध्यान देब त देखब कि एहमें साहित्यकारो मिल जइहें बाकिर अधिकतर ऊ लोग मिली जेकरा भोजपुरी भाषा साहित्य से कवनो लेना देना नइखे। ओह लोग बदे भोजपुरी लक्ष्य ना माध्यम हियऽ आपन हित साधे के। बाकिर भोजपुरी के चिंता करे वाला साहित्यकारन से पूछीं, पत्र पत्रिका निकाले वाला प्रकाशक संपादक से पूछीं त पाएब कि कुछ अच्छा लिखाते नइखे. नियमित रूप से पत्रिका के प्रकाशन कइल मुश्किल हो जाला, काहे कि काम लाएक, मनजोग रचना ना मिल पावे. अधिकतर साहित्यसेवी किस्सा कहानी, गीत गज़ल कविता लिखे में लागल रहेलें. बाकिर सही मानीं भोजपुरी के बढ़ावे के बा त भोजपुरी में हर तरह के रचना आवे के चाहीं. खास कर के समसामयिक विषयन पर निबंध, ललित निबंध, कृषि आधारित लेख, विज्ञान से जुड़ल लेख, शोध साहित्य, इतिहास, वगैरह बहुत कुछ बा जे भोजपुरी में लिखाए के चाहीं. बाकिर कतना लोग बा, जे एह पर ध्यान देत बा?

भोजपुरी आजु गलत कारण से चरचा में रहे लागल बिया. भोजपुरी के विरोधी कम, भोजपुरी के तथाकथित शुभचिंतक भोजपुरी के बदनाम करे में अधिका व्यस्त बाड़ें. उ ई जाने सोचे के कोशिश ना करसु कि भोजपुरी में काहे बढ़िया रचना, बढ़िया गवनई, बढ़िया फिलिम नइखे आवत? कबो सोचनी ह, कि पिछला बेर कवन बढ़िया उपन्यास आइल बा भोजपुरी में? गद्य के कवन बढ़िया किताब आइल बा भोजपुरी में? कहानी संग्रह, कविता संग्रह, गजल संग्रह के हम आलोचना नइखीं करत। उहो लिखात रहे, के चाहीं। बाकिर भोजपुरी के मान सम्मान बढ़ावे खातिर भोजपुरी में अउरियो विषय पर लेख, किताब लिखाए छपे के चाहीं।

समय बदलत रहेला. एक जमाना रहे जब पत्र पत्रिका छोड़ कवनो दोसर माध्यम ना रहे आपन विचार जतावे के, जनावे के, देखावे के। तब पत्र पत्रिका अखबारे लक्ष्य रहत रहुवे आपन रचना छपवावे खातिर. आजु हर लेखक, हर विचारक स्वतंत्र बा आपन बात बतावे, प्रकाशित करे खातिर. सोशल मीडिया बाड़ी सँ, ब्लॉग के विकल्प बा, बाकिर कतना भोजपुरिया एकर इस्तेमाल करत बाड़ें? ब्लॉग शुरु करे खातिर त कवनो खरचो नइखे लागे वाला. नेट पर जाईं आ ब्लॉगर डॉट कॉम पर आपन ब्लॉग शुरू कर दीं। वर्डप्रेस डॉट कॉम पर आपन ब्लॉग शुरु करीं. एहमें कवनो रुपिया नइखे खरच होखे वाला. अब रउरा कहब कि रउरा नेट इस्तेमाल करे ना आवे. बहुत बढ़िया. जी एहले बढ़िया बात कुछ ना हो सके। घर परिवार में कवनो लइका लइकी त होखबे करी, जवन नेट के इस्तेमाल करत होखे. ओकर सहायता लीं. ओकरा से आपन ब्लॉग लिखवावल करीं नेट पर. एहसे राउर ब्लॉगो प्रकाशित होखी आ नयकी पीढ़ी के एगो सदस्य जाने अनजाने भोजपुरी से जुड़ियो जाई।

एक बेर शुरु त होखीं, फेर देखब कि कइसे भोजपुरियन के भीड़ बढ़े लागी नेट पर. जब हम अँजोरिया शुरू कइले रहीं तब कवनो दोसर साइट ना रहुवे भोजपुरी में. आजु सैकड़ों साइट बाड़ी सँ. दुर्भाग्य से ओहमें से अधिकतर गाना आ सिनेमा से जुड़ल बाड़ी सँ. गाना आ सिनेमा से अँजोरियो जुड़ल बिया, बाकिर साहित्य के नजरअंदाज कर के ना. साहित्य के प्रमुखता दे के, नवहियन के जोड़ेला फिलिम आ गीतो गवनई से जुड़ल रहे के पड़ेला. बाकिर ब्लॉग शुरू करे खातिर कवनो मजबूरी नइखे। अपना ब्लॉग का बारे में दोसरा के बताईं, दोसरका अपना ब्लॉग का बारे में बताई. रउरा ओकरा ब्लॉग के देखीं, ऊ राउर ब्लॉग देखल करी. हर आदमी का लगे आपन विचार रहेला आ नेट से बढ़िया दोसर कवनो माध्यम नइखे आजु का दिन में एह काम खातिर। एहसे जेतना जल्दी होखे नेट से जुड़े के उतजोग करीं।

. भोजपुरी जिए, एह खातिर संवैधानिक मान्यता से अधिका ओकरा सामाजिक मान्यता, साहित्यिक मान्यता के जरूरत बा। पढ़े वाला केहू आई कि ना, एकर इंतजार मत करीं. रउरा लिखत रहीं, प्रकाशित करत रहीं देर सबेर ओकरा के देखे पढ़हू वाला अइबे करिहें।

●●●

दस्तावेज (नाटक)

नइकी दुनिया

❑ राहुल सांकृत्यायन

[नाटक के खेलाड़ी]

1.	बटुक	मुखिया खेलाड़ी
2.	रामधनी	बटुक के बाप
3.	सुकरूल्ला	गँवई पंच
4.	सुखारी	सरपंच
5.	रामदेव सिंह	बूढ़ बाबू
6.	विसुनदेव परसाद	बूढ़ देवान
7.	रमेसर तिवारी	बूढ़ बाभन
8.	सोना	बटुक के मेहरारू
9.	जगरानी	बटुक के आजी
10.	सुगिया	गँवई पंच
11.	बतुलिया	गँवई पंच
12.	महदेई	गँवई पंच

[अंक : एक]

(गीत गावल जातिआ)

नइकी दुनिये के बसौले, ई कुलि दुखवा जाई ना
जहवाँ न केहुए छोट बड़ लोगवा, सब्बै भाई–भाई ना।
केहुके त गाँजल बाड़े अनधन सोनवा, केहु भुखिया तड़फे ना,
केहु त नहाला नित अतर–गुललवा, केहु पनिया तरसै ना।
कबहुँ न देखल जे घमवा–बतसवा, नाही जड़वा जनले ना,
कोठवा बइठि के धोखवा के बलवा, से जगवा लुटलै ना।
आवा हो आवा मोरे भइया बहिनिया, सब हिलमिल लागी ना,
चमवा के छाड़ि जब कमवा पियार होई, तबे भुखिया भागी ना।

(रामधनी सिंह ओनकर मतारी जगरानी अइली)

जगरानी – बबुआ ! तें पहिले जब गान्ही बाबा के नून बनौला में जेहल गइले, मारि खइले, ओहू बखत हमार करेजा काँपत रहल।

रामधनी – काहे माई ! रजपूतिन के करेजा काँपी, लइका के जेहल गइला में ?

जगरानी – तब जेहल जाये के बात पहिले पहिल सुनली नू ! आउर तें हमार एकेगो बेटा, एकैगो बतिहर जिनगीके अवलम्। केतना अतवार केतना एकादसी रखनी। बाबा बैजनाथ किहाँ जाके धरना देहनी, तब भगवान् तोरा के देइले। जब तू कोखि में अइले, तब से तोरा के अँखिये बना के रखनी। कै बेर सोगियानौनी डाइनि तोरा पर नजर गड़ौली सौ, मुदा कालभैरव बाबा के गंडा जब से तोरा गर में डार देहनी तौने दिन से सलतनत भइलीं।

रामधनी – गंडा त केतना दिन से हम तूर के फेंक देहनी।

जगरानी – तू नु तूरि फेंकला, मुदा जबले घरे सुतत रहला, तबले हम खटिया में बान्हि देत रहनी। आ जब पतोहिया आइल त ओही के कहलीं – 'बेटा ! हेई गंडा आठो पहर बतीसो घरी पहिरले रहिहा।' ओइसे त हमार एको बात ना माने, मुदा ई बाति मानि गइलि।

रामधनी – त माई ! तोरा के अपना पतोहिया के मुवला के दुख नइखे ?

जगरानी – दुख काहे ना होई, बबुआ ! मुदा ऊ बड़, बेकहल रहे। अब त बेचारी के भगवान ले गइले, अब सिकाइत कइला में अपराध बा।

रामधनी – गाँव के लोग त कहत रहै, कि जगरनिये के मुँह करजीरी लेखाँ तीत ह, ऊ पतोहिया के फुटलिउ आँखि देखै ना चाहे।

जगरानी – कवन कहलै ह सोगियानौनी, हमरा के पहिले नु बतावे के चाहत रहल।

रामधनी – त तें झगरै नु करतिस् ?

जगरानी – हमार घर फोरि देहलीं बबुआ। इहै गाँव भरि के भतराचबौनी मिलि के।

रामधनी – मति गरियाउ माई ! अब त पतोहिये नइखे, घर कैसे फोरिहैं ?

जगरानी – पतोहि ले आइब नू।

रामधनी – पतोह ले अइलू, कि गाँव भरि के भतराचबौनी मिलि के तोहरा घर के फोरि दीहें, आ तोहरे के अपराध लगइहें, कि जगरानी एगो पतोह के त मुवौली, अब दूसरो के मुवावै चाहत बाड़ी। आ कतहूँ पतोह जब्बर मिल गइल ? हमरा त कै के दिन ले घरे ना आवै के परैला, आ जे झोंटाझोंटी क के हमरा बुढ़िया मतारी के मुवा देलस्, त हम का करब ?

जगरानी – तोर गुन हम मानब बबुओ ! तें कबो मेहरारू के पच्छ ना लेहले, गाँव भर के पुतकाटी पतोहिये लेखा तोराँ के बिगारे चहली, बाकी तोर नेति तनिको ना डिगल।

रामधनी – कैसे डिगित माई ! तें हमरा के पालि–पोसिके बड़ कइली, कि तोर पतोह ? आ मेहरारू के मुअला पर केतना मेहरारू मिलिहँ, मुदा मतारी मुअला पर मतारी ना नु मिली।

जगरानी – (आँखि में लोर भरिके)– ऐसन बेटा कौनो मतारी के बा ? भुइली में त ना हवै बेटा ! पाँच बरिस हो गइल पतोहिया के मुअला, अ केतना बेटिहा आवत बाड़न। ऊ हरपालपुर में हमरा नइहर के बेटी निम्मन बा, एहि साल बियाह होइ जाव।

रामधनी – जो महिन्ना में ई पाँचो–सात दिन जे तोहरा हाथ के बनावल, भात मिलत–आ, एहू के छोड़ावे के मन होय, त बियाह के बात करिहा। भले बारह बरिस के नाति बा, ओही के गंडा पहिरावा।

जगरानी – ऊ गंडा पहिरी ! ओकर चले त हम कौनो बरत ना करे पाईं। तीन बेर पलखत पाँते हलुवा में नून डाल देहलस्। बेटा ! बरजू ना, सुरुजनरायन के बरत तोरला में बड़ पाप होला।

रामधनी – तुहईं बरजा, तोहरे नू मुँहे बेसी लागल बा।

जगरानी – हम त बरजि के हारि गइनी। ऊ देवता–पित्तर के का मानी ? (एने–ओने देखिके आसते से) ऊ त सुकुरुलवा के घरे जाके मुरगी के अंडा खाला। एक दिन ले आके हमरा के कहलस्–इयवा ! इहै नरबदेसर के पिंडी तोरा के पूजा करे के ले अइलीं हा।' साँचे बबुआ ! उज्जर–उज्जर चमकत रहै, जैसे हमरा गुरुबाबा के पूजा में नरबदेसर बाबा बाड़न्।

रामधनी – त तें एको दिन पूजा कइलिस् कि ना माई ?

जगरानी – बड़ उतपाती लइका ह बबुआ ! आ कहाँ से कूलि अक्किल सीखि गइल बा। हमरा से नइकी मौनी नयका लुग्गा मँगौले, फेनु हमरै हाथे गत्ते से ओही पर रखवौले। हम समुझनी, साँचे नरबदेसर बाबा हवे।

रामधनी – त बेलपत्तर–बत्तर चढ़वली कि ना ?

जगरानी – हम अबहिन ले तुलसी माई के जल ढारि के गोड़ लगले ना रहनी, हम नहाये में लगनीं, ऊ धउरि के बेलपत्तर उतारि ले आइल।

रामधनी – त तें समुझलिस् कि नाती अब देवता–पित्तर के बड़का भगत हो गइल बा ?

जगरानी – हाँ, बबुआ ! ऊ कहलस कि इयवा ! मेहरारू के सालिगराम के पूजा बरजित ह, मुदा नरबदेसर

बाबा आ तुलसी माई ई दूनो परानी के पूजा नइखे बरजित।

रामधनी – त तें तुलसी माई के नरबदेसर के मेहरारू समुझि लेहलिस्।

जगरानी – ओहि बखत ऊ जैसे बतियावत रहे, हम कुलि बिसवास क लेतीं बेटा !

रामधनी – त तें पूजा–डंडवत कइलिस् माई ?

जगरानी – मति किछु पूछा बेटा ! ओकरा कहलै लेखँ फुलकै हाथे पानी में बुड़ाके मौनी में रखनी। बेलपत्तर चढ़ाके धूप, आ मिसरी के भोग लगौनी। फेनु हम चाहत रहनी चनाइमिरितवा के तुलसी माई के थाला में ढारे के, त ऊ कहलस्, ना इयवा ! चरनाइमिरित दूसर महादेव के ना नरबदेसर बाबा के हा, एमे से हमरो के थोरा देके थोरा अपनेहू पिउ। गुरु बाबा इहै चरनाइमिरितवा नु देले।

रामधनी – त तें पियलिस् माई !

जगरानी – आ–ा–क्, आ–ा–क्, आ–क्–का–क्–का–क्।

रामधनी – (धउरि के गरदन सुहराव लगले।) जाये दे माई। ऊ बड़ बदमास लइका ह। तें मरलिस् ना ?

(बीच में नाती बटुक ठठाके हँसत चलि आइल)

बटुक – इयवा के बाति हम कुलि सुनली हाँ बाबू।

जगरानी – तें सुनले हा कुलि बाति ?

बटुक – तनि बतिया पूरा क देवे दे त इयवा ! फेनु एगो बड़ निम्मन बात सुनायेब, सुनि के तोर मन खुस हो जाई।

रामधनी – माई के तें हरान करेले, (चिल्ला के) अच्छा ले आवतानी छड़ी।

जगरानी – (नाती के अँचरा में लुकवाके)– ना बबुआ ! लइका खसूर करेला, त, ओके मारे के ना नू।

रामधनी – त तुँही नू सहकावत बाडू माओ ! नाही त हम एक दिन में ठीक क देतीं।

जगरानी – किछुओ करै हमरै नु नाती हा। (बटुक आजी के अँचरा में लुकाइल बाप की ओर मुँह फेर के हँसत–आ)

रामधनी – औ ई जे माई के नरक में भेजलस्। नासकेत के कथा में नरक के बात सुनले नु बाड़ी माई !

जगरानी – कै बेर बबुआ। आ ओहू से बेसी विरह–विलेख त गरुनपुरान में बा। गुरुबाबा पतोहिया के मुअला पर सुनौले रहलन्।

रामधनी – संसकीरत तें कैसे बुझलिस् ?

जगरानी – नरक के बखान जेहवाँ रहल, ओकर अरथ नु क के सुनौले रहलन्।

रामधनी – हाँ, माई ! हमरौ मन परत–आ। त बोल माई ! जवन नाती तोरा के कुम्भीपाक औ रौरव नरक में भेजत–आ, ओकरा के तें दुइओ छड़ी ना मारे देत बाड़िस्, ई निम्मन हवे ?

जगरानी – मुदा बेटा ! जुरते बता देहले, आ हम साति दिन खाली पानी पी के उपास रहनी।

रामधनी – छाड़ माई ! छाड़ एइसन बेटा के हम घर में ना रहे देब।

(हाथ बढ़ावत बाड़ै, जगरानी अउरि लुकवा के)

जगरानी – ना मोर सुग्गा। इहै एगो बतिहर बा (आँखि में लोरि भरि के) एकरा के घर से निकरला पर हम ना जीअब। लइका के खसूर छमा न करे के होला। हमार कुलि पाप धोवा गइल, सात दिन बरत रखला से बचवा ! आ मोर नाती जे ना बतौले होइत, त बरत ना नु कइले होतीं, फेनु त अनचक्के में नू जमराज एकै बेर सजाय सुनौते।

रामधनी – त माई ! तोरा पूरा बिसवास बा नू, कि अब तोरा के नरक में ना जाये के परी ?

जगरानी – हाँ बेटा ! हम गुरुओ महराज से पूछि लेहले बानी।

रामधनी – का ? कि अंडा के धोवन पियला के पराछित सात दिन के उपास से हो नू जाला ?

जगरानी – अंडा के नाँव लेहब बबुआ।
रामधनी – तब का पुछलिस् हा ?
जगरानी – कि भूलि–चूक से कौनो खसूर हो जाय, त सात दिन के उपास से छूटि जाला कि ना ?
रामधनी – खसूर माई ! छोट बड़ केतना तरह के होला। पहिले इहौ पूछे के चाहत रहल नू, कि ई छोट खसूर हा, कि बड़।
जगरानी – ई कैसे पूछिती बेटा। फेनु गाँव भर सुनि लीत, त रजपूतन के मेड़र में मुँह दिखावे लायक रहता?
बटुक – (मुँह निकार के) समुच्चा गाँव जानत–आ इयवा !
जगरानी – (घबरा के) समुच्चा गाँव ! तें त ना कहले ?
बटुक – ना इयवा ! एगो खसूर भइल उहै बहुत रहै। रमदेइया फूआ ढुक्का लागि के कुलि देखलस्।
जगरानी – (गुस्सा से लाल होके हाथ मलत)– आ रमदेई ! ससुरा चलि गइलू, नाहीं त आज जगरानी के महाभारत देखतू।
रामधनी – ई त भुइली भर के रजपूताँव जानि गइल, अब का करे के ?
जगरानी – (रोवत) अब हमार घर बूड़ल। हे भगवान् ! अब के हमरा नाती के आपन बेटी दी।
बटुक – ना दी, त हम कुँआरे रहब इयवा ! तें रोअत काहे बाड़िस ?
जगरानी – (अउरि जोरसे रोवत्) के हमरा पिंडा–पानी दी ! हाय रामजी।
बटुक – तोरा के पिंडा–पानी हम देब इयवा ! मति रोउ, मति रोउ इयवा ! नाहीं त हमरो रोआई छूटति–आ।
जगरानी – (आँखि पोंछि के)– ना मोर अँखिया ! तें मति रोउ।
रामधनी – तं माई ! तोरा नरको से बेसी डर बिरादरी के बा नूं ?
जगरानी – बरत–उपास, दान–पुन्न से नरक से अदिमी बँचि सकेला बेटा ! मुदा बिरादरी के कोप से बाँचे क त कौनो उपाइ ना नु बा।
बटुक – बिरादरी काहे कोप करी इयवा।
जगरानी – इहै जे रमदेइया–ओके हैजा उठा ले जाउ।
रामधनी – हैजा मति माई ! हैजा गाँव भर खातिर आवेला, एगो अदिमी खातिर ना।
जगरानी – उहै रमदेइया जे गाँव भर आग लगौलस्। अब त तहार हुक्को–पानी बन्न भइल नू ?
बटुक – हुक्का–पानी के बाति मत कर इयवा ! ऊ केहू ना बन्न न सकेला।
जगरानी – कैसे बबुओ !
बटुक – रजपुताँव में केकर लइका बा, जे सुकरुलवा आ हमरा साथे अतवारै अतवार मुरुगी के अंडा ना खात–आ ?
जगरानी – (संतोख देखावत्)– साँचे बबुओ !
रामधनी – देखु माई ! एक अदिमी के चरनाइमिरित पियला–खइला से त तें रोवे लगलिस्, आ गाँव भरि के सुनला से तोरा मन में खुसी होति–आ।
जगरानी – अब हमरा के केहू जात से छाँटेवाला नइखे नू ?
बटुक – हमनी का जानत रहनी इयवा ! ई त बनारसी काका के एक दिन खात देखनी, ओही दिन से हमनिओ परकनी। भुइली के बारहगो लइका हमनी बानी। अतवारे अतवार सुकरुलवे के घरे बारहगो हमनी खातिर ओ एगो सुकरुलवा खातिर तेरह अंडा उसिनल जाला।
जगरानी – राम–राम ! ओही के बधना के पानी से।
बटुक – अंडा जब ओकरा घर के बा, त पानी में कवन छूत लागल बा ?

जगरानी – मति खो बबुआ ! ऊ कइसन उज्जर–पीयर रहेला ? ओहि दिन जे ते फोरि के खइले।
रामधनी – तोरा समने माई ?
बटुक – उहै नरबदेसर के एक दिन खइनी, अउरि फेनु कहाँ ?
जगरानी – मति खो बबुआ गुरुबाबा अइहैं, त सुनिहें नरक में कइसन–कइसन साँसत सहे के परेला।
बटुक – ओइसन–ओइसन खिस्सा इयवा ! किताब में बहुत लिखल बा। आ नरक में जाई त समुच्चा भुइली के रजपुताँव जाई, तब नू इयवा ! तोरा के जाय के परी।
जगरानी – हमरा ना जाय के परी, हम त सात दिन बरत कइले बानी।
बटुक – आ हम जे अतवारे अतवार नरबदेसर के खा के तोर चूल्हा–चौका, बरतन–भांडा पवित्तर करतानी।
जगरानी – (मुँह गिरा के) हे राम जी।
रामधनी – जाय दे माई ! दुनिया उलटति–पलटति–आ।
जगरानी – साँचे बबुआ ! हमरा आँखे के समने दुनिया कहाँ से कहाँ चलि गइलि। हमरे नु हाड़–मांस ह ई हमार नाती, आ बरहे बरिस में देवता–पितर धरम–करम सबकै उपहास करत–बा।
रामधनी – अउरो दिन बीते दे माई ! फेनु देखिहे कइसन धरती तरकै उप्पर होले।
जगरानी – कुलि होई बेटा ! कुलि होई, भगवानै औतार ले के आवैं त धरम बँची।
बटुक – आँ जे कछ–मछ से सुअर ले औतार लीहैं, त इयवा ! हमनी हुनकरा के ना छाड़ब।

(परदा गिर जाता)

[अंक : दू]

(उरदी में लपटेन बटुक सिंह गावत बाड़न)

ढाहा भइल पुरनका घर ई, नइकी नेवँ करा तइयार।
नई हवेली सिरजा भाई, नयका होई अब संसार।।
स्वारथ लागि समर ई ठनले, राछछ जरमन औ जापान।
चहैं बँचावे पुरना घरवा, राखै तीन्–फुल्लन के सान।।
गहि के तेगा जूझत बाड़ैं, जग के सबै मजूर–किसान।
लाल फउजि के पाछे–पाछे हाथ में लेहले लाल निसान।।
अन बिन तलफत जँहवाँ लइका, जहँवा उठत गरीब क आह।
जहँवा तीन फुलत दुई–चरिके, ऊ संसार दिहब हम ढाह।।
रात अन्हरिया कुलि बीतल बा, आइल पह फाटे के बेर।
काटा रछछन के मूँडी धरि, तिनको अब न लगावा देर।।

(रामधनी सिंह आ जगरानी आके)

जगरानी – (फौजी वरदी देखि के आँख से खुसी झलका के)– मोर नाती देखते देखत केतना बढ़ि गइल।
रामधनी – बढ़ी ना एकइस बरिस के हो गइल।
जगरानी – कवनु दरजा मिलल ह, बबुआ ! अब कौनो बात मनो ना नु परै ?
रामधनी – लपटेन माई ! ई उरिदी लपटेन क हऽ।
जगरानी – उरिदिया त निम्मन लागतिआ, मुदा ऊ सुनि के मन दुकैसन होत–आ।
रामधनी – का सुनि के ?
जगरानी – कि हमार बबुआ लड़ाई में जइहें।
बटुक – देस खातिर नु इयवा ! देसै खातिर बाबू कै बेर जेहल गइले।

जगरानी – ऊ गान्हीबाबा के लड़ाई रहे, ओमे बरिस–छ महीना जेहल में रहि के लउटि आवे के रहे।

रामधनी – हमहूँ इहै बात बेरी–बेरी समुझौनी, बाकी आज काल के लइका हमनी के बात ना नु सुनै माई!

बटुक – त बाबू ! चाहत बाड़ा, दुनिया ओही ले आ के गोड़ तोर के बइठि जाय, जहाँ ले गान्ही जी तोहरा लोग के पहुँचौले ?

रामधनी – गान्ही जी के सती के रहता निम्मन ह बटुक बेटा !

जगरानी – ओहि बखत जब बबुआ पहिले–पहिल नून बनावे गइल, आ हम पुलुसे लाल मुरैठा देखनी, त गन्हियोजी के बात हमरा के जबूने लागल, बाकी इ नाती के रंग–ढंग देखि के बुझाता–गान्हिए जी के रहतवा निम्मन बा।

बटुक – गान्हीजी के रहता ओही दिन कौनो काम के ना रहि गइल, जौना दिन गान्हीजी के चेलन के हाथ से मजूरन–किसानन के गला रेताइल।

रामधनी – गला रेताइल, कि किसान सहकि गइलन्। अब असामी बर–बेगारी, जरिबाना–सलामी किछुओ बात पूछत बाड़न् ?

बटुक – बाबू ! जब–बेगारी आ जरिवानै–सलामी लेबे के रहल, त देस के नइयाँ ले–ले जेहलखाना काहे गइला ?

रामधनी – अंगरेजन के हाथ से आपन राज लेबे खातिर।

बटुक – आपन राज, कि जिमदरवन आ सेठवन के राज ! आ केकरा मद्दत से ? किसानन के मद्दत से गरीबन के मद्दत् से ! आ फेनु ओकनिये से बर–बेगारी आ जरिबाना–सलामी असूल करे के ?

रामधनी – ना जेहल गइल होतीं त डिस्टिकबोट के चेरमैन भइल होइतीं ?

जगरानी – चेरिमौने ना बबुआ ! होऊ जे लाट साहेब के का कहावेले ?

रामधनी – कोसिल माई !

जगरानी – ऊ नइखे माई बबुआ ! माई हम नु हवीं ? कोसल कहा, ऊ कोसल के जे बबुआ हमार लोमर भइल बाड़न्, अहौ एही जेहलियै गइला से नु ! गान्ही जिउके रहता निम्मन रहल ह, बबुआ ! ओमे हेई लड़ाई में मूवे के ना नु रहल हा।

बटुक – गान्ही के नाँव मति ले इयवा ! सुनि के जिउ जरता। जरमनवा जपनिया – दूनो रछछवा अनधन त लुटते बाड़ैं, दस बरिस के लइकिनों के ईंजत ना छाँड़स्।

जगरानी – ईंजत लेलँ बचवा !

बटुक – आ उप्पर से बाबूजी के गान्ही महतिमा कहत बाड़न, कि मेहरारून के ईजत बँचावे के काम मेहरारूने के नोह–हात पर छाड़ि देवै के चाहीं। इयवा ! तें ही बताव, हमरा जियला के धिरकार ना होई, जे केहू तोरा ओर हाथ बढ़ौले, औ हम तोरा के हात–नोह से काटै–बकोटै पर छाड़ि दी।

जगरानी – (काँपि के)– एइसन राछछ बाड़न् ?

बटुक – पूछ बाबूजी से, ई रोजे खबर के कागद पढ़ैले।

जगरानी – साँचै बेटा !

रामधनी – ई बात साँच ह माई ! मुदा–

जगरानी – तब त बेटा ! भाई–बहिनि के ईंजत बचावे खातिर जिओ देहला में कौनो हरज नइखे।

बटुक – जपनिया रछछवा हमरा देस के सिवाना पर चहुँपि गइल बा, हमनी के जा के सिवाने पर नु रोके के चाही, नहीं त भुइली में पहुँचि गइला पर किछु सँपरी ?

रामधनी – गान्हियो जी त सती से लड़ै के कहत बाड़न्।

बटुक – बोलु तेंही इयवा ! राछछ सती–फती के मनिहैं ?

जगरानी – ना बबुआ ! ज सती से काम चलित त रामजी के ना औतारे लेवे के काम रहल, न रवना से लड़इये करे के।

बटुक – एको सीता के ईजत बँचावै खातिर त लंका ढाहै के परल, रामजी सीताजी के ना नु कहि देहले कि जाँय, ऊ रवनवा से हात–नोह चला के इज्जत बँचावस्।

जगरानी – औ दरोपदी के खाली चीर खिंचला पर महाभारत नधि गइल ?

बटुक – जपनिया जरमनवा राछछ ईजत लेके लरकोरीमेहरारून के छाती से लागल बेटा के साथै संगीन खोभि के मुआवत बाड़न इयवा ?

जगरानी – दुध–पिउवा बच्चा के !

बटुक – औ एहि तरे लइका मेहरारून के मुवा के ईजत ले के चाहत बाड़न् अपना मुलुक के बनियन के राज चलावे।

जगरानी – बनियन के राज !

बटुक – ई लड़इयै बनियन के कारन भइल। बनिया के मतलब जात के बनिया ना इयवा ! हमरा देस में रजपुतौ, बाम्हनो सूद पर रुपया देत बाड़ें, दुकान–गोला खोलले बाड़न, कल–कारखाना चला रहल बाड़न्। एहि सब के बनिया कहल जाई। आजकाल एगो रूस के छाड़ि के समुच्चा दुनिया में बनिया–सेठन् के राज बा।

जगरानी – बनिया–सेठन् के राज ?

बटुक – हाँ इयवा ! हिनुतानी में गान्ही महतिमा अब ओही सेठवन के अंगुरी पर नाचत बाड़न्।

रामधनी – ई गलत बात ह माई !

बटुक – अच्छा इयवा ! ते ईमाने धरम से पूछ त, कि बंबई के सेठ पाँचे दिन में सात लाख रुपैया गान्हीजी के हाथ में दे देहलँ कि ना ?

रामधनी – ऊ त दुसरा काम खातिर देहलैं।

बटुक – हमहूँ नइखीं कहत कि गान्हीजी के पेट में ऊ सात लाख जाई, ओनकरा बकरी के दूध–धिउ फर–फरहरी में जे रुपया दू रुपया रोज लागैला, ओकर इतिजाम एगो बरधै के सेठ क सकेला। मुदा जे बेसी पूजा चढ़ावेला, ओकर महतिमो लोग गीत गावैला कि ना इयवा ?

जगरानी – "सुर–नर–मुनि की ऐही रीती। स्वारथ लाइ कंरहि सब प्रीती।" बबुआ ! रमायन में हम आजै के पाठ में पढ़नी हाँ।

रामधनी – गान्हीजी के स्वारथ नइखै माई !

जगरानी – बेटा ! सुर–नर–मुनि से बढ़ि के जे तू गान्ही महतिमा के कहबा, त ई हम मानै के तयार नइखीं।

बटुक – हाँ इयवा ! गान्हीजी हिनुतानो में बनियन के राज करावे चाहत बाड़न्।

जगरानी – सुनतानी बबुआ ! गान्ही जिउ अपनेहू बनिये हवें ?

बटुक – जाति के बनिया के राज ना इयवा ! अरे जे केहू बनिया के काम करत–आ बिल्लाइत–अमिरिका जरमनी–जपान के बनियन लेखा; से बनिया। ऊ चाहत बाड़े हिनुतानो में बनिया–राज कायम होउ। मुदा एही बनियन के राज खातिर पचीसे बरिस में दु–दुगो बड़का लड़ाई हो गइल, ओही लड़इया में नू हमार बाबा मुवले ?

जगरानी – (आँखि में लोर भरि के)– रामधनी के उमरि रहलै बबुआ ! तोहार बाबा सूबेदार।

बटुक – गाहक–और खदुकन के सरमेटै खातिर इयवा ! बनिया ओहि बेर लड़ाई कइले रहलन। जरमनवा

बनिया सब चाहत रहलन् दुनिया भर में हमार रोजगार बात चले, ओही से ऊ लड़ाई भइल। पचीस बरिस बितला पर जरमन बनियन के पायकै हिटलरवा फेनु ओही मतलब से लड़ाई सुरू कइलै। आ अबकी बेर ऊ बड़का राछछ बनि के आइल बा। गाँव के गाँव उजारत, लाखन मेहरारू–लइकन के मारत, जिल्लाके बरबाद कइल चाहत–आ। समुच्चा दुनिया के जीति के लोग के पसु लेखाँ बना के राखे चाहता–आ जौना में फेनुं केहू किछू बोले लायक ना रहि जाय।

रामधनी – अँगरेजो त हमनी के सुराज नइखे देत, फेनु हमनी काहे के लड़ै जाई ?

बटुक – जरमनवा के छोट भाई जपनिया राछछ जौन हांग–कांग के आधा सहर के बड़का–छोटका घर के रंडीखाना बना देहलैं, ऊ जपनिया जे भुइली में आ जाई, त हमार ईजत लूटी कि अंगरेज के?

जगरानी – भुइली में कहाँ एकोगो अंगरेजिन मेहरारू बा ?

बटुक – त इयवा ! पहिलका लड़ाई में गरीब के बेटा आपन समुझि के लड़ाई में ना गइल रहै, ऊ गइल रहे अपना बनिया–मलिकन के हंसेड़ी बनि के। हमनी हँसेड़ी बनि के नइखी जात इयवा। हमनी जातानी एहि रछछवन के संहार करै, आ ओही साथे बनियन के राजो के संहार करे।

जगरानी – त बबुआ ! सुराज के तेहूँ नु मानत बाड़ें ?

बटुक – हँ इयवा ! मुदा हमरा सुराज में भुइली में एको घर गरीब ना रहे पाई, केहू के लइका भूखा न रहे पइहँ। केहू मसलद पर बैठल–बैठल घिउ–मलीदा खा–खा मोटा के भइंसा ना होये पाई, ओ न केहू काम करत–करत सिटुकि के लकड़ी बनै पाई।

जगरानी – त, तें एगो नइकी दुनिया बनावैं चाहत बाड़े बबुआ !

बटुक – आजकल के दुनिया के करोड़न जवान एही खातिर मूवै जात बाड़े इयवा ! करोड़ में करोड़ों अदिमी न मू जइहँ। हमनी के इहै नेति बा।

(परदा गिरत–आ)

[अंक : तीन]

(जगरानी के समने बटुक औ ओनकर मेहरारू सोना गावत बाड़ै)

सरग समान देस हमनी बनौली हाँ,
जँहवा न केहु बा भिखारी, मोरि इयवा।
सऊँसे मुलुकवा के एक घर कइ देली,
सब हवै अपने सवांङ, मोरि इयवा।।1।।
सरजू–नरैनी से नहरा बनौली हाँ,
गाँवै गाँवै पनिया पटावै, मोरि इयवा।
खेते खेते हरवा चलत बा मोटरवा के,
कबहूँ न पड़ैला अकाल, मोरि0।।2।।
घरे घरे लइकी, लइकवा पढ़त बाड़ैं,
केहु नाहि मुरुख अजाना, मोरि0।।
गाँवे गाँवे नाटक–सिनेमा चलत बाड़ैं,
देखताड़े लइका सयान, मोरि0।।3।।
छोट बड़ जाति न धनिक ओ गरिब बाटै,
नहिं केहु रजवा हमार, मोरि0।
नहि जमिदरवा न केहु बनिजरवा बा,
नाही बेटा सुदिया सवाई, मोरि इयवा।।4।।

बटुक – बताव त इयवा ! पुरनकी दुनिया निम्मन रहे, कि नइकी ?

जगरानी – हमरा अँखिये दुनिया कहाँ से कहाँ चलि गइल ? होऊ चमरौटी के पता नइखे।

सोना – चमरौटी ना रहला के अपसोस त नइखे इयवा ?

जगरानी – अपसोस काहे होई बछिया ?

बटुक – आ पतोह बेकहल बा ?

जगरानी – (उसांस ले के)– अब अपसोस होले बच्चा ! साँच हम तोहरा मतारी के बड़ दुख देहनी।

बटुक – तें त अबौ उहे नू बाड़िस् मुदा नतोहिया के त कब्बो गारी ना देलिस्।

जगरानी – बुझाता–हमहूँ ऊ नइखीं बबुआ ! हजार तरह के गारी हमरा जीभ पर रहे, मुदा अब बरिसन हो गइल, कौनो मुँह से निकरति–आ, कुलि भोर परल जाति–आ।

सोना – इयवा ! मन पार के त बोल, त तोर नतोह कुलि गारिन के लिखि घाली, आ इयवा–नतोह दूनो के नाँव से छाप दीहल जाई।

जगरानी – ना बछिया ! लोग का कही ?

सोना – कही का ? ई कुलि गारी दस–पनरह बरिस में भुला जाई, फेनु एही कितबिये से नू लोग जानी कि पुरनकी दुनिया में कइसन–कइसन गारी चलत रहल हा।

जगरानी – ना बेटी ! जगरानियो नू बदनाम हो जइहें।

सोना – अच्छा त तोर नाँव ना रही, हम लिखि देब कि जहाँ–तहाँ से बहुत मेहनत से संगिरहा कइनी हाँ।

जगरानी – जाये दा, बेटी ! का करबू ऊ कुलि गारी–फारी लिखि के।

सोना – देखत ना बाड़े इयवा ! "सारन समाचार" में रोज एकाध गो पुरनकी कथा, बियाह–सादी के गीत छपेले।

जगरानी – पढ़त बानी बिटिया ! आ दु–तीनि गो कथा हमहूँ लिखलीं नु हँ।

सोना – आ इयवा ! देखले नु कथा के साथे तोर फोटवो छपल रहै।

बटुक – बोलु इयवा ! पुरनकी दुनिया में लिखाड़िन में तोर नाँव होइत ?

जगरानी – लिखाड़ी ! जिनिगी भर रमायन पढ़त रहि गइनीं, अच्छर लिखहू ना सिखले रहली। ई त नइकी दुनिया में जब अपनी बोली में केताब आ अखबार छापै लागल, तब नु हमरौ चटक खुलल हा ?

बटुक – आ बोल इयवा ! हमरा अंडा खइले से तें डेराइल रहले ?

जगरानी – हाँ, बबुओ ! हम समुझत रहनी, रजपूतवा जात से छाँट दीहें, फेनु नाती के बियाह कहाँ होई?

सोना – त राजपूत के बेटी ना नु मिलल इयवा ! आखिर कायथे के बेटी सोनिया तोर नतोह भइल नूं ?

जगरानी – (सोना के गरे लगा के)– मोर बछिया रजपुतन के बेटी से का कौनी कम बाड़ू। आ रजपुत के बेटी त कै गो तयार रहली, बबुवे ना नु बियहलै।

बटुक – रजपुत के बेटी ना बियहले से तोरा के अपसोस त नइखे इयवा !

जगरानी – सोना ऐसन नतोह ना नु मिलित बबुआ !

बटुक – ई कहाँ अँचरा के खूँट धरती पर राखि के तोरा के गोड़ लागे ले ? हमरा जाने में त इयवा ! ई नतोह निम्मन नइखे। कह त एके घर से निकार बाहर करीं ?

जगरानी – हम हाथ में केताब लेहले खुरसी पर बइठल, रहीले, त ओसे ई मति समुझा बबुआ ! कि हमार आँख अपना चारो ओर देखत नइखँ। पुरनकी दुनिया में मेहरारू मरद के गोड़ के पनही समुझल जाति रहै, आ तुलसियो बाबा लिखि देहलन् "ढोल गँवार सूद्र पसु नारी। ए बस ताड़न के अधिकारी"।।

बटुक – त इयवा ! तोरा ताड़न मिलल रहे ?

जगरानी – तोहरा बाबा सुबेदार के कुलि जिनगी त पलटनिये में बीति गइल, कबहुँ दु–तीनि बरिस पर दू–एक महिना के छुट्टी आवस्।

सोना – त इयवा ! तें अकेले घर अगोरत रहलिस् ? बटुक एइसन करे, त हम त पचास बेर एनके कान धँके उठाई बैठाई।

जगरानी – ई कान धँके उठावल–बैठावल मरदै के हाथ में रहै बेटी। मुदा सूबदार कबो हमारा देह पर हाथ न छोड़ले।

बटुक – जानत बाड़े इयवा ! काहे पहिले के मरद मेहरारू के देहि पर हाथ छोड़ि सकत रहे, आ आज तोर नाती बटुक सोनिया के हरूस बचनै ना बोलि सकेला।

जगरानी – कहु बेटा !

बटुक – सोनिया त आजिकाल भुइली के पंचाइत के सरपंच नु हा, जब सरपंच ना रहै, तबो पनरह सै रुपया साल के मेहनत करत रहै; आ हम कमातानी बरहै सै रुपया।

जगरानी – छ सौ रुपया त हमरौ खिस्सा–कहानी लिखला में "सारन समाचार" से मिलि जाला।

सोना – इयवा ! तें आपन जिनिगी के हाल एगो किताब में लिखि घलती, त निम्मन होइत। तोरा कलम में बड़ जोर बा।

जगरानी – हमरा बुझात रहे बेटी ! कि गारियै में हम गाँव भर में फरकोर रहबि। नइकी गारी बना–बना के देवै में हमरा हब्बास बड़ खुलल रहै।

सोना – उहे गारी के हब्बास अब कलम में नू खूलल हा। इयवा ! तोर बूढ़ अदिमी के लिखहू में नु तकलीफ होले। हमार मन करत–आ, तें बोलु आ हम लिखत जाईं।

जगरानी – तोहरा बेटी ! गाँव के इंतिजामे से कहाँ छुट्टी मिलति–आ।

सोना – त बटुक के कहु इयवा ! ई लिखिहें।

जगरानी – सोचतानी बेटी ! पहिले एइसन जे घरे–घरे चूल्हा फुँकात, त आठ–नौ घरी त तोहार चुल्हिए तर बइठलै बिति जाइत, फेनु ई गाँव के काम, ई लिखल–पढ़ल कइसे होइत ?

बटुक – इयवा ! तेंही नु बागी भइलिस्, जब पहिले–पहिल गाँव भर के चूल्हि एक कइल् गइल्।।

जगरानी – हमही ना बबुआ ! दस गोड़ी औरिउ रहनी। आ तीन गो बाबा जिउ लोग रहे।

बटुक – त हमनी जबरजस्ती ना नू कइलीं ? छोड़ि देहली, कहनी–दा एहि पगलिन के कोरवरै सीधा, आपन बनावे खाँय।

जगरानी – अ दुइये महिन्ना में कुलि चिरई फुर्र से उड़ि गइली।

सोना – औ तें अकेले चूल्हा फूँकत रहि गइले नु इयवा !

जगरानी – हम सबकरा से पाछे चूल्हा छोड़नी बेटी। इहे मुढ़ताई।

(गाँव पंचाइत के पंच सारी–जूता पहिरले तीनिगो मेहरारू आ अधबहिया कुरता जंधिया जूता में दुगो मरद आवत देखइलें।)

जगरानी – बेटा ! अब हम जातानी तोहरा लोगन के पंचइती के काम होई।

(जगरानी चलि गइली, पाँचो पंच चहुँपि गइलन्)

सब – सुन्नर साँझ साधी बटुक के, सुन्नर साँझ साथी सोना के।

(सबै हाथ मिलावल)

सुकुरुल्ला – ईया त ना नु रहली हाँ, बटुक भइया !

सोना – तें बड़ चवुल्ली हवे सुकुरुआ ! इयवा के बड़ हैरान करैले।

सुकुरुल्ला – ना सोनिया मोर सोने के भौजी ! उहे अतवार के ज हमनी सब लइका अंड़ा उसिन के खाई,

उहै बतिया। मुदा बटुक भइयवा जे इयवा के चरनाइमिरित पियौले, ऊ सुन के त हँसत–हँसत हमनी के पेट फाटै लागल। आ सुगिया त औरो सुनि के लोट–पोट हो जाले।

सुगिया – हमहीं ना सुकुरू देवर ! बतुलिया के ना देखला।

बतुलिया – आ महेदेइया बहिन त कहत रहे, आजो जे इयवा ओइसे पूजा–पाखंड करित, त हमनियो के मोका मिलित।

महदेई – सुखारी भसुर से पूछ, बतुलिया बहिन।

सुखारी – महदेई ! दुनिया भर तोहार देवर, आ हमही अभागा भसुर बने के बानी।

महदेई – एगो भसुरो नु चाहेला ?

सुखारी – मुदा, ना हम हरखुयै महतो से उमिर में बड़, न तोहरै से, फेनु भसुर कइसे ?

महदेई – इमान से कहतानी सुखारी भसुर ! सुगिया आ बतुलिया गवाही दी हँ, चिट्ठी डरला में तोहरै नाँव परि गइल, हम का करीं ?

सुखारी – हमहूँ चिट्ठी डरले रहली, त भौजाई में महदेई के नाँव निकसल।

महदेई – जेकरा गाँव भर भौजाई सेकरा चिट्ठी डरला के कवन काम ? तूँ हमार भसूर हवा। ओ देखा पुरखन के चाल छाड़ै के ना, तनी हमरा से देहिं ना छुवावे के। नाहीं त भसुर आ भवेह दूनों के नरकों में ठेकाना ना मिली। अच्छा चला बइठा खुरसी पर भसूर जी ! अब पंचाइत के काम होई। सोना सरपंच के आँखि लाल–लाल भइल बा। (सब लोग बइठि के)

सोना – मंतिरी सुकुरूल्ला पहिले पुरनकी बइठकी के लेखा नुइहै। आ आजि की बइठकी में जिल्ला–पंचाइत पंच साथी बटुकों के काम हवै, एहि बासते उनहूँ के रहै के कहल जात–आ।

सुकुरूल्ला – पहिला बइठकी में बहुत कहाइल ना रहे, एहि बीच में पंचाइत के हुकुम पर कवन–कवन काम तमील भइल, कवन–कवन हो रहल बा, ऊ सुनावे के बा। धूरदहताल से भुइली के रसोईघर में एक मन दस सेर मछरी रोजिन्ना आवत रहल हा, अब पंचाइत के हुकुम से दु मन बीस सेर क दीहल गइल। बइसाख के महिन्ना आइल, अब मछरी दूना निकारि के चिट्ठाके मौताबिक गाँवे–गाँवे भेजल जाति–आ।

महदेई – मुदा सरपंच सोना ! दयालपुर का सेनुआर क रसोइया लोग सिकाइत करत–आ, कि मछरी हमनी किहाँ अबेर से चहुँपति–आ, गमकियो जाति–आ।

सुकुरूल्ला – साथिन महदेई के कहल ठीक ह। मुदा अब ऊ सिकाइत ना होये पाई। हमनी के पास लोरी कम रहलि ह, परसों साँझि के बीसि गो नइकी लोरी सारन सहर से चहुँपि गइली। दिन भर के फँसावल मछरी एगो बड़का जालीदार घइला में पानिये में राखल जात बाड़ी, आ पहर भर राते से लोरी छूटे लागत बाड़ीं।

सुगिया – एकर मतलब भइल, कि सुरुज उगत–उगत मछरी सब जगह चहुँपि जाति–आ।

सुकुरूल्ला– हाँ !

सुगिया – आ फसिल कइसन बा साथी मंतिरी !

सुकुरूल्ला – हमरा जवार में गोहूँ सड़तर–पड़तर चालिस मने बिगहा भइल हा। भुइली में त खाली मछरी आ साग–भाजी के कारबार बा। आलू के हिसाब त साथी सब जनते बाड़े। पियाज खूब निम्मन लागल हा, सौ मने बिगहाँ जाये के उमेद बा। आलू खनते, कलकतिया खाद दियाइल हा।

बतुलिया– आ ककरी खरबुज्जा ?

सुकुरूल्ला– ककरी, खरबुज्जा, लौकी, कोंहड़ा, करैला आँ दूसरो फल, तरकारी बड़ निम्मन बा। खरबुज्जा के बीया लखनऊ से मँगावल गइल ह। मालुम होते–आ कवनो पानी के फेर बा, अपने इहां के

जनमल ओही खरबुज्जा के बीआ से ओतना मीठा खरबुज्जा ना होखे। हमरा साथी कमकर, कमकरिन लोग बड़ मुहतैदी से काम करत–आ। दलपति सिटहल राउत, मूँगा के टोली के काम के बहुत सराहना करत बाड़ें।

बतुलिया – मुँगा बहिन के टोली तीस–मने कट्ठा आलू उपरजलैं ई साथी लोग के मालूम बा।

सुखारी – औ मुँगिया कहत रहल, कि हमनी के पियाजो दस मन कट्ठा उपराजब।

सुकुरूल्ला – अउरि त कुलि बात हो गइल, एगो बड़की बात पर हमनी के राय करे के बा। भुइली, एकमा, हंसराजपुर, आमडाढ़ी ओगर्रह दस गो गाँवन के बसगित के एक जगह बसावे के, बात सारन से पुछाइल बा। दसो गाँव एपर विचार करता–आ। हमनिओ के एहि बतिया के फैसला त गाँव भर से लेबे के परी, बाकी एहि पंचाइतों के आपन राय कौनो निहिचय करै के चाही।

सुगिया – हमरा से जेकरै से बात भइल बा, ओमे केहू केहू बूढ़ लोग कहत–आ कि पुरखन के डीह छोड़ल निम्मन नइखे। बाकी त सब लोग के कहतब इहै बा कि एक जगह बसिगित बसि जायेब निम्मन ह। बिजली त तार पर बा, एहि बासते भुइली में का धुरदह के चँवर तक में मछरी मारे खातिर लागि गइल बा। मुदा पानी के नल एक जगह से दस गाँवन में ले गइला में लोहा के पंप बहुत लागी। एक जगह दसो गाँवन के बसि गइला से ओकर खरच बहुत कम होई। हमनी के नहानघर में नल के लागल बहुत जरूरी बा।

सुखारी – आ पैखानो के अब अदिमी से ढोआवै के काम नइखे, उहो नल से हो सकेला, आ गाँवे–गाँवे नल लगौला में बहुत खरच होई।

सोना – इसकूल, असपताल नाटकघर सब बाते के इंतिजाम अच्छा होई। बटुक साथी ! सारन में हमनी के बड़का पंचाइत के का राय बा ?

बटुक – सिवान–गोपालगंज की ओर आधा जिल्ला से बेसी में बड़का बड़का गाँव बसि गइलै।

सुखारी – हमहूँ हथुआ की ओर देखनी, मार उज्जर उज्जर पक्का घर रात के बिजुली से जगमगात, चारो ओर साफ–सुत्थर हरियर–हरियर बगइचा, दूब–बिछावल खेले के मैदान देखि के मन खुस हो जाला।

सुगिया – हम समुझतानी, समुच्चा बसती के नाव लेनिनपुर और मोहल्ला के नाँव भुइली, एकमा, हंसराजपुर....... राखि देहला में बुढ़वाँ लोग के मन रहि जाई।

बतुलिया – इहै राय हमरो बा।

सब – हमनी सब के इहै राय बा।

सोना – त इहे राय पास। आज के बइठक के काम खतम भइल।

(सब लोग चलि जात–आ)

[अंक : चार]

(जगरानी, रामदेव सिंह, बिसुनदेव परसाद और रमेसर तिवारी चारों बूढ़ एगो गांव के चेहरा खुरसी पर मंच के समने बइठि के चाय पी रहल बाड़न्।)

जगरानी – हमनी के पुरनकी दुनिया से लइकन के ई नइकी दुनिया कइसन् निम्मन बा रामदेव बाबू ?

रामदेव – का निम्मन बा ? एकनी के बोलहूं के लूर नइखै। छोट–बड़ किछुओ ना जाने, सब के 'साथी' 'साथी' कहँले। एनकरा खातिर सबे धन बाईस पसेरी। होऊ न देखा सुखरिया चमरा के, ऊ लेनिनपुर के मालिक बनल बा !

जगरानी – मालिक नइखे रामदेव बाबू ! सरपंच हवे।

रामदेव – उहै एक्कै बाति हा। पचास पुहुति से हमार खनदान परसा में राज करत चलि आइल। हमरा के

लोग कहत रहै, बाबू रामदेव परसाद नरायन सिंह। जब गढ़ से निकसत रहनी त बीस गो मोसाहिब, आ पट्ठा जवान पाछे–पाछे चलै। परसा के ऊ बाजार कहाँ बा, अब त कुलि पंचइतिया अपना हाथ में ले लेहलस।

जगरानी – मुदा पहिले परसा में रोजिन्ना पंच–पंच सै रुपया के सेब–अंगूर ना नू बिकत रहे। आज देखीं नु पंचमहला मकान में कै सै तरह के चीज सजाय के राखल बा। मोलौ भाव करै के काम नइखे, दाम लिखि के कागज साटल बा।

रामदेव – ई सेब–अंगूर चमार–सियार के मुँह में जाये लायक हा ? हमनी के राज में साँवा–मँडुवा आध पेट मिलत रहल, आ अब देखा उहै सुखरिया चमार लेनिनपुर के–नाहीं पुरनके नाँव राखल जाई एकमा–भुइली के–मालिक भइल बा।

(एही बखत सरपंच सुखारी, सोना, बतुलिया, तीनि गो अउरी मेहरारू–मरद के साथे कान्हे पर फरूहा रखले समने से निकरलैं। मेहरारूनों के पोसाक जूता, जंघिया, अघबहियाँ–कुरता और कपारे पर घाम रोकैवाला टोप मरदै जइसन बा। रामदेवसिंह पहिलेइ उठि के खड़ा भइ गइलै। सुखारी टोप के दाहिना हाथ से उठा के हँसत बोललै)

सुखारी – सब बूढ़ा साथी लोगन के सुन्नर सबेर। (फेनु ऊ लोग आपुस में किछु बतियावतै चलि गइल।)

रामदेव – (बइठि के मुँह बिचुका के)– देखा नु जगरानी बहिन ! तू हऊ भुइली के निकुम्ह रजपुत, आ हम एकसरिया भुइंहार कुल भुंइहारन में सिरताज, से ई चमार–सियार, जोलहा–धुनिहा के सामने खड़ा होखे के पड़त–आ ?

जगरानी – ऊ जबरदस्ती नइखे नू करत ? बाकी देखतानी रामदेव बाबू! अपने हमनियों से पहिले ठाढ़ हो गइनी ?

रामदेव – जौना बखत हमार मोटर परसा बजार से निकरै, त कुलि बनिया–बकाल ठाढ़ हो करिहांव दोहरि के सलाम करै, सेही रामदेव सिंह के सुखरिया के सलाम करे के परत–आ।

जगरानी – ना करी त सजाय ना नु करी ?

रामदेव – उपहास करे लगिहैं बहिन ! एक दिन परसा में हमरै भेख बना के मोटर पर निकरले रहें, आ परसा के आजकल के इ बड़की पकिया सड़क पर खड़ा हो के भुइं के हाथ चहुँपा चहुँपा के 'सलाम सरकार' कहि–कहि हमरा नाँव पर हँसत रहले। का करीं, खून के घोंट पी के रहि गइनी। ना भइल पुरनका दिन, नाही त हलखोरसिंहवा से पकड़ि मँगवा के गढ़ पर धुरछक उतरवा देतीं।

जगरानी – त रामदेव बाबू ! अपना के ई नइकी दुनिया निम्मन नइखै लागत ? अपने चाहतानी कि ओहीतरे लोग करिहाँव दोहरा के सलाम करौ, ओही तरे लोग पेट मँडुवा–कोदो पर गुजर करौ, आ सेब–अंगूर ना खाव, ओही तरे हाड़–हाड़ निकरल लइका लंगा फिरै ?

रामदेव – चारि जुग से बड़का–छोटका चलि आइल ह, पाँचों अँगुरी बरोबर ना होले। कहा बिसुनदेव बाबू !

बिसुनदेव – साँचे कहतानी सरकार ! हमरा रसूलपुर के कायथ अ परसा के बाबू ई राजा देवान के नाता चारों जुग से चलि आइल बा। हमनी के ऊ अपनी जिनगी भर निबाहै के बा।

जगरानी – आ हई अपना नातिन सोनिया के फरूहा कान्ह पर ध के चलत नइखै देखत ?

बिसुन – पगरी उतारि लेहले जगरानी बहिन ! तुँहही बतावा ई निम्मन बा ?

जगरानी – कायथ के बेटी राजपूतिन के पतोह होय, ई निम्मन बा ?

बिसुन – इहौ अनेति हा, मुदा का कइल जाव, इनरवै में भांगि घोरा गइल बा, दुनियवै नु बौरा गइल बा!

रमेसर तिवारी – बरेजा में हमरै घर भर–बलुक केहीं हमरे भर–नेति रखले बा। पुरिखा रामजी के मंदिर बना गइल रहलै, से दूनो साँझ जा के हम पूजा करीले, आ रामजी से बिनईले कि हे भगवान् !

कहिया अकलंकी औतार लेबा ?

जगरानी – तिवारी जी ! हमरा नतिया बटुकवा के जानेला नु ?

रमेसर – तोहरा नतिया के के ना जानी, उहै नू कपतानी छाड़ि के एहि जवार में ई कुलि खुराफात रचलस्, आ पहिले दूसरा जाति में बियाह कइले। बिसुन बाबू ! नराज मति होइहा।

बिसुन – हमार चलत होत त तिवारी जी ! एहि छौंड़ी के दीदा रहल बियाह करै के ? आ देखत नइखी हमरै समने जंघिया पहिरले टोप लगौले चलल जातिआ, देखि के बोलति–आ 'सुन्नर सबेर' जनुक एनकरा ना कहला से सबेर सुन्नर ना होई।

जगरानी – अरे बिसुन बाबू ! चीन, जापान, रूस, बिल्लाइत, अमिरिका सबे जगह 'सुन्नर सबेर', 'सुन्नर दुपहर', 'सुन्नर सांझि', 'सुन्नर रात', 'सुन्नर दिन' कहल जाला, ओही से हमनियो के लइका कहत बाड़ें, एमे बाउर का बा ?

रामदेव – जगरानी बहिन ! तू हमनी बूढ़न में सबसे बड़, बाकी तू लइकन के पछ लेलू, ई काहें ?

जगरानी – नइकी दुनिया में लोग के हम बेसी सुखी देखतानी। देखीं, हमरा समूचना सारन जिल्ला में केहू भूखा–भिखमंगा लौकत–आ ? आ खाये के बताईं, लेनिनपुर, परसा, भै कौनो गाँव के रसोईघर में जा के देखीं, एतना निम्मन भोजन अपनेहूँ के जेवनार में बनत रहल हा ?

बिसुनदेव – हमनी के जिमदारी, मोलहू साहु के रोजगार आ चाउर के मील इहै कुलि छीनि–झपटि के नु ई छप्पन परकाल बन रहल बा !

जगरानी – खाली ओतने से गाँव भर छप्पन परकाल ना खाइत बाबू ! देखत नइखीं होऊ बिसुन बाबू के नातिन सोनिया कान्हे फरूहा लेके जाति बिया। ई जे समुच्चा मरद–मेहरारू जाँगर चलावत–आ ओही से ई छप्पन परकाल बनता–आ।

बिसुनदेव – हमरा नातिन के नाँव मति ला जगरानी बहिन ! हम मनावतानी भगवान् से कि अब हेई कुलि मति देखावा।

रमेसर तिवारी – साँचै कहत बानी विसुन बाबू ! हमरा गाँव में त गिरीस के घर बहि गइल। ओनकरा नतोहन में कौनिउ जाति नइखै बचल। हमनी के घरे मेहरारू के ईजत रहल हा।

बिसुनदेव – खवास–खवासिन छोड़ि केहू परछाई ले ना देखि सकत रहल हा, से देखीं हई कसबी–पतुरिया लेखा मुँह खोलले घूमति बाड़ी। माँझी से सारन ले ई रेल के सड़क का बनति–आ, एहि लोग के रूप के बजार लगावै के मौका मिलि गइल हा।

जगरानी – एइसन मति कहीं देवान् जी ! हमनियो के नु बेटी पतोह बाड़ी। अपने सब नहकै पुरनका दिन के झंखत बानी। ऊ अब फेनु लउटि के न आई। देखतानी, हमनी के जमाना में एक घर के दस घर दस घर के चालिस घर बँटाते जात रहल हा, आ अब देखी समुच्चा देस एक घर बनि गइल। मेहरारू मरद सब ओही एक घर के सवाँग हवै। जे काम करै लायक बाटे, सेके देह चोरावे ना दीहल जात–आ। जे देहि से बेकाम बा, तेकरा के खाये–पीये, पहिरे–ओढ़े के इंतिजाम देस करता आ। लइका लइकिन के पोसे–पाले, पढ़ावे–लिखावे के एइसन सुन्नर इंतिजाम कौनो जुग में रहल हा ? हमरा त देखि के अँखिया पतियाय ना, कि एही छपरा जिलवा के धरतिया में एतना अन–धन कहँवा लुकावल रहे। हमनी पुरनकी दुनिया के अदिमिन के ई सरग एइसन नइकी दुनिया के देखि के खुस होये के चाहीं।

(एही बखत मरद मेहरारू फरुहा लेहले गावत अइलन)

उठू–उठू रे ते मुखबन्हुआ, उठु रे धरती के अभगवा।
बा न्याय बजर घहरावत, जनमत बढ़िया संसरवा।।1।।

पुरुविल फेनु नाही बान्हीं, उठु रे अब–नहि तें बन्हुआ।
नई नेव उठत बा जगवा, ना रहलै अब सब होइबै।।2।।
आ जुटहु संघतिया समुहे, ई आखिरि बेर लड़इया।

(पर्दा गिर जात–आ।)

●●●

दू गो ग़ज़ल

❑ शशि प्रेमदेव

[एक]

हमनी–लेखा माथ प' बोझा ढोवल भारी ना सँपरी।
नवका जुग कऽ सरहँग लड़िकन से, बनिहारी ना सँपरी।

भलहीं कवनो होटल–ढाबा में बरतन माँजी बाकिर–
पुरुखन का धरती प' रहि के खेती–बारी ना सँपरी।

जेकरा बेंवत बा ऊ जाके भोग चढ़ावे देवकुर प'
हमरा से तऽ रोज–रोज दीहल रँगदारी ना सँपरी।

अब तऽ सुलह–सपाटा कऽ कवनो उपाइ सोचऽ बबुआ–
ए ऊमिर में दुसमन सँगे मारा–मारी ना सँपरी।

बहुत करी तऽ करिया के, ऊ साँवर कहि के बेचि दिही,
'प्रेमदेव' से एकरा ले, बेसी हुँसियारी ना सँपरी !

[दू]

झंझट नइखे पाथर से भगवान बनावे में।
जुग लागी बाकिर धरती के चान बनावे में!

ओधिर जरि के राखि हो गइल् सज्जी खाड़ फसल
एधिर बाझल रहलीं, हम खरिहान बनावे में!

पिछुवारा समतल कइलीं तऽ आँगन खाल भइल्
जिनिगी बीतल मुश्किल के आसान बनावे में!

अपना से तऽ, लाख उमचलीं, मोथो ना उखड़ल
जूटल बानीं मेहरि के परधान बनावे में!

कबुर बनि गइल ओकरा खातिर सीसा क बँगला
चूकि गइल् जे एगो रोशनदान बनावे में!

●●●

अक्षय कुमार पाण्डेय के दू गो कविता

(एक) – लइकी !

एऽ लइकी,
समय कऽ रेंगनी पर
एतना मत सूख कि
उड़ा ले जाय हवा कहीं अउर
घाम तेज बा!

तोर नासमझ साँस
ओनइस कऽ
गलत पहाड़ा इयाद कऽ लेले बा
हुस्न जिस्म बाजार बलात्कार आ हत्या

छन्द कऽ टुटला क मतलब
ई ना भइल कि
कविता पूरा उघार हो जाय

मर रहल बा
तोरा दिमाग कऽ
सबसे मजबूत नस
तू भगवान कऽ सुन्दर गढ़न
साबुत सरधा हई
मत पार कर
नंगई कऽ हद
नपुंसक हो जाई समय।

(दू) – लगभग उघार लइकी

मौसम बेमार बा
सूरज कऽ सिरहाना
मत लड़ छन्दन से
छन्द तोरा लड़ाई कऽ हथियार ना हऽ

जब कविता गीत बन रहलि बा
समय उल्टा पाँव
जंगल जा रहल बा;
मर रहल बा
माटी कऽ सोन्ह सुगन्ध
बाँचल पुरवाई,
जवानी पर बा
पछिमा बयार,
बेहया कऽ पतई झर रहल बा
सदी कऽ मुहान पर
हँस रहल बाड़ी सऽ
थेथर हँसी
फुलझरी नियर
घवाहिल भाषा कऽ भूगोल पर
थिरकत
देह कऽ बाजार में
लगभग उघार लइकी।

ग़ज़ल

❑ **मिथिलेश गहमरी**

दिल में बसेरा कइले बा जब दुख–दरद संसार के
महफिल में, हम कइसे गजल तोहके सुनाईं प्यार के

मधुमास में हालत अगर समसान–जइसन हो गइल
बाटे जरूरत अब कवन एह बाग में पतझार के।

सातो जनम में कैद कर पाई ना आँगन के अन्हार
राखल रहे जो ताख पर बस एगो दीया बार के।

एह पार ले ओह पार के सपना देखावल मत करीं
पहिले बताईं कइसे पवँरी नाव बिनु पतवार के।

पानी के सोझा आग के माथा झुकाहीं के पड़ी
बिसवास जो नइखे त रउवा देखलीं ललकार के।

'मिथिलेश' हर ईंसान जब बेजान बाटे प्यार बिन
फिर बात काँहें होत बा हथियार के, तकरार के।

●●●

कहानी

नइ के चलऽ !

❑ प्रेमशीला शुक्ल

लाल–पीयर फूलन से सजल कार में फैसन गठरी बनि के बइठल रहली। लकदक भारी बनारसी साड़ी, ऊपर से ओहू से भारी सान्तीपुरी चादर के लमहर घुघ्घुट– 'फैसन' के जीव अफनात रहे। एही में एतना नगीचे बइठल एगो मरद। रतिए से फैसन साँसति में पड़ल बाड़ी। ई बिधि, ऊ बिधि–सबमें ई मरद आ ई पहिराउरि फैसन के पाछे पड़ल बा। मन त करता कि इनिके कोहनियाइ के चित्त करीं, घुघ्घुट फेंकी आ दउरत बाबा लगे भागि जाईं। फैसन सोचते रहली कि आँखि का आगे बाबा आ गइले। कार का लगे बाबा आइल रहले। माथे पर हाथ धइले। "बेटी" – बस एतने फैसन का सुनाइल। फैसन बाबा के देखिओ ना पवली। ई घुघ्घुट मलेच्छ। बाबा के आवाज बड़ा डूबल–डूबल रहे। कइसे होइहें बाबा ?

बहरा बड़ा गहमा गहमी रहे। कई लोगन के आवाज। 'नीबिया के डाढ़ि' का बाद "इयरी पियरी पेन्हि के निकल भगमानो सासु हो, आरे परिछऽ ना पूत बहुआरि त घरवा के लछिमी" सुरू हो गइल रहे। साथे–साथे माँग बहोरले के बिधि। सासु के नाम भगमानो हऽ, फैसन का पता चलल आ ऊ घर के लछिमी हई। ससुरा में मान–सम्मान मिली, फैसन अन्दाज लगवली। अगिली बिधि दउरी में डेग डरला के रहे। सासु अँकवारी में भरले डेग डलवावे लगली। आगे–आगे उनकर बेटा हाथे में दही के नदिया लिहले। पाछे–पाछे निहुरल फैसन सिन्होरा सम्हरले। दहिने–बायें कुछु लउकत ना रहे। कब्बो–कब्बो अगिली दउरी में से उठत रँगल मरदाना एड़ी झलकि जाव–एँड़ी–तनिके ऊपर हड्डी के एगो लमछर उभार, तनी अउरी ऊपर मसुगर गोड़, ओपर करिआ–करिआ रोआँ आ आरी–आरी फहरत पियरी के कोर। फैसन के रोआँ ठाढ़ हो गइल।

गीत चलत रहे– 'नइ के चलऽ दुलहिन, नइ के चलऽ हो, जइसे बँसवा नवेला ओइसे नइ के चलऽ हो।' सुनते फैसन तनी अउरी निहुरि गइली। ध्यान बँटि गइल। जीव अफना गइल। 'केतना नईं, नइए के त इहाँ आइल बानीं'– फैसन अपने से कइली।

मन कइल, तनि के खड़ा हो जासु आ जोर से कहसु– 'देखीं सभे, रउरे दुलहवा से तनिको उन्नइस नइखीं।'

बाति मनें में रहि गइल।

फैसन अपना माई–बाप के अकेल संतान रहली। डील–डौल में ऊंच, अतिसे निर्भीक फैसन के नैन–नक्स त साधारण रहे बाकी अजीब मोहनी रहे फैसन में कि एक बेर देख ले त बेर–बेर देखे के मन करे। जवने पहिरें, उगि जास। एही गुने फैसन कहइली। छोटपन में खेलत फैसन के देखि, के राही–बटोही पूछि बइठें– 'केकरि बेटी ह ?' उमिर का साथ फैसन के ई खासियत बढ़त गइल। माई–बाप का दुलार से ढिठाइओ बढ़त गइल। जवन चाहें तवने करें, जइसे चाहे तइसे रहें। टोला–मोहल्ला के लोग बोल बोले। केहू कहे– 'बेटा पोसाताड़ी, आन घरे ना जइहें।'

फैसन आन घरे गइल चाहतो ना रहली।

छोटाइये से रसोई–रसोई खेलत फैसन से जब केहू पूछे– 'का बनता ?'

फैसन कहें – 'पूड़ी हलुवा'

'के खाई'

'सब खाई।'

जो केहू ई कहि दे– 'ससुरे चलि जइबू तब ?'

सब फेंकि–फाँकि के फैसन रूसि जास – 'ससुरा आन घर हऽ। आन घरे ना जाइब। ईहें पूड़ी–हलुवा बनाइब, सबके खिआइब।'

बाबा हँसे लागें। फैसन रोवे लागें। माई समुझावे लागें– 'जहिया के बाति बा तहिया के बा। आजुये का बिसूरे लगलू ?'

एक दिन ऊहो आ गइल। माई सूतल बाबा के जगावे लगली– 'पराया धन कहिया ले जोगइबि ? कहीं देखीं–सुनीं, बेटी बिआह जोग भइलीं।'

बाबा के नीन टूटल– 'हँ हो, दिन बीतत देर ना लागल।'

फैसन माई लगे पहुँचली– 'पराया धन कहिया से हो गइनीं ?'

'जहिया भुइयाँ गिरलू तहिये से। बेटी पराये धन होली। पालि–पोस के उनुके जोग पुरुष के बाँहीं धरावल माई–बाप के धरम ह।' –माई समुझवली।

'आ जो हम ना धरीं तब ?'–निरभीक फैसन सवाल क उठली।

'मुँहे करिखा पोतबू ? का कही गाँव–जवार के लोग ? केहू कुँवार बेटी रखले बा कि हम राखब ?' माई एक सँसिये बोलली।

बाति के अझुरात देखि फैसन बाबा आगे अइली।

'बाबा, हम बिआह ना करब।' फैसन बिना असमंजस के बोलत रहली– के तुहन लोगन के आगे–पाछे बा। हम तुहरे लोगन के लगे रहब। एक आदमी के रोटी ना दे सकेल तूँ ?'

'राम अइसन रोजी ना करें। तूँ अपना घरे अमला–फइला से रह, इहे हमार धन्नि भागि होई।' – बाबा बाति के सझुरावे की कोसिस में रहलें।

'तुहूँ कहताड़ऽ ई हमार आपन घर ना हऽ ? तुहूँ बेटी–बेटा में अन्तर करताड़ऽ ?' फैसन जिरह करे लगली।

बेटी के रोख देखि बाबा थहराइ के बइठि गइलें।

ईहे कहबू ? 'कब्बो तुहके बेटी बूझिके पोसलीं ? कब्बो गँसलीं–सजलीं, तुहके कवनो सासना–ताड़ना दिहनीं ? बाकी कइसे भुला जाईं आपन धरम ? तोहरे जोग बर के खोजि के तुहार बिआह कइल हमार धरम है। तुहके बिदा कइल हमार सपना ह।' बाबा थम्हि–थम्हि बोलत रहलें।

फैसन महसूस करत रहली कि बाबा के मुँह सूख गइल बा, ओठे फेफरी फाटि गइल बा।

बाबा फैसन का माथे पर हाथ फेरत कहलें– 'जो तूँ ना चहबू त ना होई बिआह। तुहरे खातिर

जमाना से उल्टा–चलब। सबकर जबाब दे लेब, सबसे हिसाब–किताब क लेब बाकी तोहसे ना।'

'फैसन का कपारे पर दूइ बून पानी चुवल।'

फैसन नइ गइली।

एक चिटुकी सेनुर के ई असर।

अस के गाँठि जोड़ाइल कि मन के सब गांठि खुलि गइल। जवन जनम से बान्हि–छान्हि के जोगवल रहल फैसन का बुझाए–सब ओन्ह दें। एही दिन खातिर त सब जोगवल रहे। कुछु बांचि न जाए, ना तन में ना मन में, रत्ती–रत्ती, मासा–मासा। फैसन एतना नवली, एतना नवली कि तारवा तर लोटि गइली। इहें उनुकर गति बा, मति बा, जीवन बा, मरन बा। पति उनुकर परमेसर हो गइलें। नवीनो एह जोग रहले। जेतने तन से सुन्नर ओतने मन से। आपन–आन सबके खयाल करे वाला, गाँव–जवार सबके जाने–समुझे वाला। फैसन जब अपना माई बाबा के चिन्ता करें त नवीन तोख दें– 'कइसन बात सोचेलू ? अपना माई–भाई के पूछब आ तुहरी माई–बाबा के छोड़ देब ? सब ठीक रही। निस्चिन्त रहऽ!' फैसन आ नवीन के देखिके सासु कहें सिव–पार्वती के जोड़ी ह फैसन के आसीर्वाद दें– 'पार्वती सम पति प्रिय होहू।' सच्चे, दूनूँ जने में अछोर प्रेम रहे। फैसन का ई जिनिगी भावे लागल।

बहुत कुछ बदलल फैसन का भीतर। नटखट, हठी, किसोरी फैसन का जगह अब गढ़ू–गम्भीर, विवेकी फैसन पूरमपूर औरत बन गइली। जइसे गंगा के वेग के सिवजी अपना जटा–जूट में सम्हारि के धरती पर भेजले होईं। बहुत कुछ बदलल, फैसल का बाहर। नइहर के गाँव–सीवान छूटि गइल, सखी–सलेहरि छूटि गइली, माई–बाबा के नेह छोह छूटि गइल। फैसन सोचें– "सचहूँ का ?" जबाब मिले– 'ना, छूटल ना, मन का भितरी समा गइल, अउरी गहिरा गइल। आ ओहूका भीतर से बाबा के भींजल आवाज आवे– तुहार बिआह क के का जानी नीक कइनीं कि बाउर, अब हमार इज्जति तोहरे हाथे।'

"फैसन भूईं लोटि जइहें, बाकी बाबा के इज्जति अकासे चढ़इहें।"–फैसन अपना से कहें।

घर में कुल चार परानी। दू मरद, दू मेहरारू–मुसमाति सासु, बिना बिआहल भसुर, फैसन आ नवीन। फैसन का अइला से ई घर भरि गइल, जिनिगी ढरहर हो गइल। पहिले रोटी बनावत के कब्बो नवीन की माई के हाथ जरे कब्बो रोटी। अब सोन्ह–सोन्ह पातर–पातर रोटी का साथे अनिवन बेंजन से थरिया भरल रहे। माई कहें–फैसन का हाथ में जादू बा, नवीन कहें–मोसल्लम फैसन में जादू बा।

फैसनो मगन रहली। बना के सबके खिअवला के बचपन के उनुकर सपना एह अँगना में पूरा भइल। एक्के चीज उनुका साले–परोसत के उनुकर अँगुरी भसुर जी की अंगुरी से छुवा काहें जाला। हर बेर फैसन कोसिस करेली कि ऊपरे से रोटी दोहरा दें, थरिया लामहीं से खिसका दें तब्बो कवनो ना–कवनो बिधि फैसन छुआइये जाली। फैसन जानत रहली कि ई पाप ह। फैसन अबहिन एह अधेड़बुन में रहबे कइली कि गजब हो गइल।

ओसारा में बइठल फैसन केस झारत रहली। चोटी गुथला का बाद सिन्होरा खोलि के सेनुर

छुवे खातिर सींक पर सेनुर उठवलही रहली कि सामने अपना भसुर जी के ठाढ़ देखली। ना खोंखल, ना खँखारल, कब इहाँ का अँगना में आ गइनीं। फैसन का उनुकी आँखी में पिसाच लउकल। झट से फैसन माथ तोपली आ घर में भगली। बड़ी देर ले उनुकर तरे के सांस तरे आ ऊपर के सांस ऊपर भइल रहे। का करें, केसे कहें? अम्मा जी से कहे के चाहीं बाकी कइसे ?

सोचत–बिचारत, राति के सासु के गोड़ चाँतत, बात उठवली– "अम्मा जी भइया जी के बिआह रउरा काहें ना कइनीं ?"

ओठङहल सासु उठि के बइठि गइली।

'तूँ ई बाति काहें पूछताडू ?' सवाल करत सासु हाँफे लगली।

'का बिआह करीं ओकर ? केकरे बेटी के जिनिगी जारीं ? ना कवनो रोजी ना रोजगार, दिन–राति बयाल्ला अस छिछिआइल, ना बेटी चीन्हे के ना बहिन। माई के कोखि कोंहारे को आँवौ हं। एही कोखी नवीन जनमलें, एही कोखी ई मलेच्छ। एकरा जनमले हमरी मुँहे करिखा पोताइ गइल। बाकी तूँ ई बाति काहें पूछलू?–सासू एकसंसिये बोलत चल गइली।'

फैसन दिन के बाति दोहरा दीहली।

सासु भारी साँस खींचत कहली–हूँ।

दोसरा दिने दूनूँ भाई चउका बइठल भोजन करत रहे लोग। सासु बाति उठवली– "बड़ जेठ का आपन धरम निबाहे के चाहीं। भयहू बेटी बरोबर होले अँगना में आवत के बोलि के भा खोंखिके आवे के चाहीं।"

अबहिन बतिओ पूरा ना भइल रहे कि सुनवइया बोल पड़ल – "ई त फैसन का सोचे के चाहीं। अँगना–ओसारा माथ उघार के बइठला के मतलब का ? सिंगार–पटार घर में के चीज ह। केहू देखाई त सब देखबे करीं।"

रसोई में बइठल फैसन के एँड़ी से कपार ले जरि गइल।

आगि में से निकलल बचपन के निर्भीक फैसन। अपना बाबा के पगड़ी अकासे उठवले, तनि के बोलली– "अँगना–घर के भेद समझवला के जरूरत नइखे। देखवइया की आँखी में टेकुआ डारे के ढंग बा हमरा।"

फैसन के ई नया तेवर, नया रूप देखि के जेठ जी त सहमिये गइलन; नवीन आ उनुकी माइयो के माथ ऊँच हो गइल।

●●●

कहानी

खँड़हर

❑ ओमजी प्रकाश

उतरत जाड़ा, फागुन क महीना, गँहू की खेतन में गोटाइल बालि। अभी पाके आ काटे में कुछ टाइम रहे। घूमन शुरूए से घूमन्तू, ए घरी खालिए रहलँऽ। न ढेर जाड़ा, न ढेर गर्मी। अइसना में उनकर मन घूमे खातिर बेचैन रहे। बिलारी की भागे सिकहर टूटल। रसड़ा में दरभंगियाँ रामलीला के तम्मू गिर गइल। घूमन देखे के मन बना लिहलँऽ। दिन की दू बजे पैदले चलि दिहलँऽ। छोटका लइका नन्हकुआ साथे लागि गइल। थोड़िके दूर गइला पर एगो खँड़हर नियर घर लउकल। बुझात रहे कि पहिले क कवनों सुनर–सुघर इमारत रहल होई। ओके देखि के नन्हकुआ पुछलसि... 'ए बाबू जी, ई केकर घर ह ?' घूमन कहलँऽ – ए घर क बहुते बड़ कहानी बा। चल, बतवतो बानी आ रस्तो कटि जाई।

घूमन कहे लगलँऽ। नन्हकुआ सुने लागल–पचीस–तीस बिगहा जमीन क मालिक। दुआरे चारि गो बैल, दू गो गाइ, एगो भईंस। दू गो हरवाह, एगो नोकर। पुरान जमींदार रहलँऽ। बड़े–बड़े आँखि आ बड़की–बड़की मोंछि। जेकरी ओरि ताकि देसु, ओकर पेसाब उतर जाय। जइसने डेरावन रोबदार चेहरा रहे, ओइसने उनकर नाँव–ठाकुर रुद्र प्रताप सिंह।

गाँव प्रधान आ सरपंच हरदम निर्विरोधे चुनासु। उनकी विरोध में खाड़ा होखे के केहूके हिम्मत ना रहे। बाकी जबसे गुप्त मतदान पेटी में पर्ची डालि के होखे लागल, ठाकुर साहेब परधानी खातिर कबो खाड़ा ना भइलँऽ। तबो परधान बनावला बिगड़ला में उनकर राय– मसविरा अबो एगो माने रखे।

बीचे में नन्हकुआ टोकि दिहलसि– बाबू जी, ई मतदान का होला ?

बीचे में टोकला से घूमन झुँझला गइलँऽ– 'सुन बउचट, अबे लइके रहि गइले। मतदाने नइखे जानत?'

नन्हकुआ सिटपिटा गइल– अच्छा कहऽ। फिर का भइल ? एगो इनार पर ढेकुलि देखि के घूमन क पियासि जागि गइल। कहलँऽ– रुक, पानी पी के सुहता लीहल जा। रहिला क भूजा गुड़ की साथे खा के पानी पी के सुहताइल लो। ऊ सुर्ती बनवलँऽ। चुटकी भर ओठे की तरे दाबि के चललँऽ। फिर कहे लगलँऽ– ठाकुर साहेब, उनकर जनाना इन्द्रावती, चारि गो लइका, तीन गो लइकनी। इहे उनकर परिवार रहे। जइसे–जइसे लइका लइकनी बड़ होत गइलँस, ओइसहीं खर्चा बढ़े लागल। बड़का लइका तनी ठस दिमाग क रहलँऽ। ढेर पढ़ि ना पवलँऽ। दूसरा–तिसरा जाना मार्तण्ड–मार्कण्डे पढ़े लिखे में ठीक रहल लो। गांव की स्कूल से पास कइला की बाद आगे पढ़े खातिर उहँलोके गाँव छोड़ि के शहर जाएके परल। ऊ लोग ठीक से पढ़ि लिहल लोग, बाकी दुनो जाने की पढ़ाई में कुछ खेतो बिका गइल। छोटका लइका अखण्ड माई–बाप के दुलरूआ रहलँऽ। पढ़े में त तेज रहलँऽ, बाकी दुलारे में रहि गइलहँऽ। सराहले धिया डोम घरे जाली। गाँव की स्कूल से आगे ना पढ़ि पवलँऽ। तीनो लइकनी चिट्ठी लिखे–पढ़े भर क घरहीं रहि के सिखली स।

ठाकुर साहेब क रुतबा अरियात–करियात में रहबे कइल। एसे बड़का लइका प्रचण्ड की बियाह में कवनों ढेर दिक्कत ना भइल। मार्तण्ड आ मार्कण्डे क बियाह दुआबा की एगो बड़ जमींदार ठाकुर रघुराज सिंह की जेऊवाँ लइकनिन से भइल। छोटका लइका, अखण्ड क बियाह ठाकुर रघुराज

सिंह की सार की लइकनी से बिना दाने दहेज लिहले हो गइल, काहें कि समधी की सार क माली हालत ओतना बढ़ियाँ ना रहे आ समधी जी क बड़ा दबाव पड़ल। ए चारो बियाह में ठाकुर साहेब बड़ा धूमधाम से, सज–बज के बरात ले गइलँऽ। चार–पाँच गो हाथी, सात–आठ गो घोड़ा, दू–दू गो ऊँट, डेढ–दू सौ बराती, सबकी खातिर बैलगाड़ी में छाँटी।

द्वार पूजा की पहिले हाथी, घोड़ा आ ऊँटन क जब पैसारी भइल त बुझात रहे कि आन्हीं आ गइल बा। गजबे क समां बन्हाइल रहे। ओ समय में बस कार कहिएँ कहीं देखे के मिलँसऽ। बाकी ठाकुर साहेब क एगो पुरान जान पहिचान तसीलदार साहेब एहू के इंतजाम हर बेरी कइए दिहलँऽ।

जब लइकनिन की बियाह क पारी आइल त उनके बहुते धावे धूपे के परल। एड़ी चोटी क जोर लगावे के परल। खासकर बड़की क बर खोजे में त कई–कई गो पनही खिया गइलीसऽ। उनकर मलिकाइन इंद्रावती हरदम उनसे कहसु– घबड़इला के काम नइखे। होइहें सोई जो राम रचि राखा। बबुनियाँ क बियाह बढ़िएँ घर में तय करबि।

आखिरकार बबुनियाँ क बियाह ठाकुर साहेब की फुआ की लइकनी की लइका से तय हो गइल। कहे खातिर त फूआ की लइकनिए की इहाँ बियाह होत रहे। कुछ लेबे देबे के ना रहे। लेकिन ऊ मरम त ठाकुरे साहेब जानत रहलँऽ।

बरइछा क दिन धरा गइल। ओ दिने नऊआ के बोला के मलिकाइन कहली–एगो सेनस नवकी समधिन (उ बेवा रहली) से कहि दिहऽ कि एगो जमींदार कि हाँ बारात भेजत बाड़ी। साज–बाज, गाजा–बाजा, बर–बरात भेजला में कवनो कसर मति छोड़िहँऽ। इज्जत क सवाल बा।

कहे खाती त फुआ अपनी भतीजा क बहुते उबार कइली। बाकी अपनी बेटी आ भतीजा की बेटी की इज्जत क सवाल बता के आठ भर खाँटी सोना क गहना बीखो अपनी आँखी की सोझा सोनार की इहाँ ठाकुर साहेब से बनववली। अपनी बेटी के ना देले रहली ऊ साध आज पूरा क लिहली।

बारात आइल। बियाह भइल। अरियात करियात में बारात आ ओकरी आव भगत क बहुत दिन ले चर्चा रहे। बाकी ठाकुर साहेब के ए बियाह में दाल चाउर क भाव बुझा गइल। दू बिगहा बिका गइल आ चुपे–चाप एक बिगहा कस्बा की बनियाँ के रेहन रखि दिहलँऽ। केतना पानी में बानी, उनके अपनी बेंवत अउर औकात दूनों क थाह लागि गइल।

एही बीचे मार्तण्ड–मार्कण्डे क नोकरी लागि गइल। ऊ अपनी–अपनी मेहरी के लेके शहर चलि गइल लो। प्रचण्ड–अखण्ड खेती बारी क काम देखे लागल लो।

ठाकुर साहेब के दीन–दसा खराब हो गइल। दूनों छोटकिन क बियाह ओही हिसाब से तय कइलँऽ। मलिकाइन क ए बेरी ओतना ना चलल। ठाकुर साहेब के त दबा ले जासु बाकी नौकरी करे वाला लइकन क बाति उनका माने के परल। दूनों की बियाह में मार्तण्ड–मार्कण्डे खर्चा उठावल लोग। बड़कियो बबुनियाँ सास की चुपे–चुपे रुपया–पैसा, कपड़ा–लत्ता जेतना सपरल मदद कइलसि। ठाकुर साहेब बड़की से कहलँऽ– बियाह बाद तोर पाई–पाई चुकता क देइब लइकी क धन खाइल ना जाला। बाकी कबो एको कउड़ी वापस ना कइलँऽ, न वापस करे के मन्सा रहे।

समय जात देरी ना लागेला। आदमी जन की जगह मशीन आ गइली स। ठाकुरो साहेब जमाना की साथे चले के कोशिश कइलँऽ। बैल बेचा गइलँसऽ। हरवाह हटा दिहल गइलँस। बैंक से कर्जा लियाइल। ट्रैक्टर किनाइल। कुछ दिन ले त एगो ड्राइबर रखल रहे, बाकी पोसाइल ना। हारि

पाछि के प्रचण्ड ट्रैक्टर ड्राइबर बनि गइलँऽ।

कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर। एगो समय रहे कि चमटोली क चमार ठाकुर रुद्र प्रताप की इहाँ हरवाह बने खातिर जुगत जोगाड़ लगावत फिरँसऽ। अब हाल ई हो गइल कि चमटोली क कुछ चमार जिनकर माली हालत ठीक हो गइल रहे, जमीन कीन लेले रहलँसऽ, खेत ट्रैक्टर से जोतवावेंसऽ। आ ओ ट्रैक्टर क ड्राइबर कवनो चमार नाहीं, ठाकुर साहेब क बड़का लइका प्रचण्डे रहलँऽ।

ठाकुर साहेब अब बुढ़ा गइलँऽ। साथे–साथे ऊ सुनर–सुघर महल लेखा उनकर घर गिरे परे लागल। तबो उपरे से सही घर के रँगा बन्हा के राखसु। भीतर कइसन बा केहू का जानी। हाथी के दाँत खाएके दूसर आ देखावेके दूसर।

ठाकुर साहेब के अब ढेर चलियो फिर ना जाव। बरामदा में एगो पुरान आराम कुर्सी लगा के बइठल रहसु। उनकी कान में कबो–कबो एगो गीत गूँजल करे–

'उपरा से ठटरी दिहल रँगाई, भितरा त छेद बा ! एमे कवनो भेद बा !'

कबो–कबो त कुछ मनढींठ लइका उनकी दुवारे से दउरत कहत भागि जाँसऽ–कुर्सी पर बैठे हैं, मूछों को ऐंठे हैं, सुबह व शाम। ठाकुर साहेब लाचारी में दाँत पीस के मन मसोसि के रहि जासु। कवनो चारा ना रहे। मनढींठ लइकन क का उपाय करसु।

एक दिन सबेरहीं ओही बरामदा में कुर्सिए पर बइठल–बइठल लकड़िया गइलन। केहू कुछ बूझि ना पावल, उनके का हो गइल ?

उनकी तेरही में चारो भाई परिवार की साथे बटुरा गइल लो। तेरही की बाद चारों गोतिन में हाँऊ–हाँऊ, किच–किच, उघटा–पुरान, ईहाँ तक कि झोंटा–झोंटवलो हो गइल। ई इहँवें ना रुकल। चारो भइअवनों में लाठा–लाठी क नउबत आ गइल। ठाकुर साहेब क बेवा, इन्द्रावती ठेंगुरी की सहारे कबो इहाँ बइठसु, कबो उहाँ बइठसु आ अपनी किस्मत पर रोवल धोवल करसु। पंच बटुरल। सभे कहल कि ए रोज–रोज की कचाइन से अच्छा बा– कि 'जमीन जायदाद बाँट ल जा आ चैन से रहऽ जा।'

बँटावारा में ट्रैक्टर की कर्जा क झमेला रहे। एगो गैरेज वाला मिस्त्री के औने–पौने दाम में ट्रैक्टर बेंचा गइल। कस्बा के बनियवों क कर्जा रहे आ रेहन खेतवो अभी ना छूटल रहे। ओही बनिया के खेत बेंचि के दूनों कर्जा के निपटावल गइल। बँचल खेत बँटा गइल। घर–दुवार बँटा गइल। बर्तन–भांड़ प्रचण्ड–अखण्ड के दिया गइल। ऊ लो अभी एके साथे रहे के राजी रहे लो। मार्तण्ड, मार्कण्डे अपनी–अपनी हिस्सा की घर में ताला लगा के, अपनी–अपनी हिस्सा क खेत अतवारू, कतवारू के बँटाई देके परिवार समेत नोकरी पर चलि गइल लो। अनाज बँटवावे साल में एक दू बेर आवे लोग। अनाज बेंचला पर मिले का त आवे–जाए भर क भाड़ा, आ एक दू किलो मीठा क पइसा। तबो उन्हलोग के मरम ना बुझाव। अतवारू–कतवारू क चानीं रहे।

कुछ दिन ले प्रचण्ड–अखण्ड एकही में रहे लो। देवरानी, जेठानी से तनी तेज मनावसु। रोज–रोज कुछ–न–कुछ हूँ–टूँ होइए जाव। ढेर दिन साथे ना कटल। ईहो दूनों भाई बँटवारा क लिहल लो। कई गो लकड़ी जबले एक साथे बान्हल रहेलीसऽ, ना टूटेलीसऽ। छितरइला पर जहाँ से चाह झट–झट तूरि दऽ। रुतबा दबदबा खतम हो गइल। बाप दादा की समय क इज्जत आबरू सगरी माटी में मिल गइल।

खेत बारी त बराबर–बराबर बँटा गइल बाकी बर्तन बाटे में झमेला हो गइल। एक–एक गो फुलही बटुली, एक–एक गो परात कठवत, एक–एक गो कलछुल, तीन–तीन गो थरिया कटोरी गिलास त बराबर आ गइल। बाकी कराही आ तावा ? अखण्ड कहलँऽ– हम छोट रहलीं तबे से भऊजी एही कराही में तरकारी आ एही तावा पर रोटी सेंकि के हमके खियवले बाड़ी। हम कहब कि ई कराही लावा भऊजिए की पास रहि जाव। तबले हंटुवा क माई, (आजकल अइसने बिना अर्थ क नाँव रखे के रिवाज चलि गइल बा।) निकलि के कर्कसइले कहलसि– बाँटि गइल, तऽ फाटि गइल। भऊजी होइहें तोहार। हमार केहू ना। हमके करहियो में चाँहीं आ तऊवो में।

बड़का भाई प्रचण्ड डेढ़सेरी उठा के कराही पर अइसन मरलेंऽ कि कराही क चारि खँड़ा हो गइल। छोटका भाई अखण्ड आरी से काटि के तावा क दू टूक क दिहलँऽ। देवरानि–जेठानि दू–दू टूक कराही क आ एक–एक टूक तावा क उठा के भीतर हो गइल लो।

घूमन आगे कहलँऽ– बाप में आ बड़का लइका में कबो पटरी ना होखेला। माई छोटका लइका क छोड़ि दूसरा इहाँ ना रहि सकेले। सास–पतोहि सुभाव से एक दूसरा के फूटलो आँखि ना सोहाला लो। बुढ़िया माई, मालकिन अब बुढ़िया माई कहासु, छोटका लइका के छोड़ि दूसरा इहाँ रहे के तैयार ना भइली।

घूमन आ नन्हकुवा के चलत–चलत साँझि हो गइल। किरिन डूबे लागल। रसड़ा पहुँचला पर नन्हकुआ देखलसि–सूट–बूट में दू गो आदमी, बिना मोछि–दाढ़ी क। ओकर हँसी ना अड़ाइल। कहलसि–'ए बाबूजी, ए बाबूजी ! हऊ दूगो कइसन आदमी ! घूमन मुसकी काटि के कहलँऽ– सवाल पर सवाल पूछले जात बाड़े। तोरा पेट में दाढ़ी मोंछि बा। कवनो अफसर बुझाता लोग।' बिना मोछिओ वाला लोग रोबगर होला, जइसन रोबगर मोछि वाला ठाकुर साहेब रहलँऽ। फिर एगो घर की ओर इसारा कइलँ– देख उहे बनियाँ क घर ह। उहँवे चलि के रहल जाई आ रात में दरभंगिया रामलीला देखल जाई।

उहँवा पहुँच के नन्हकुवा फूआ क गोड़ लगलसि आ घूमन सलाम कइलँ। फूआ छू–छू के नन्हकुवा के दुलरली, पुचकरली आ उन्हनलोके खियवली, पियवली। रात नौ बजे से एक डेढ़ बजे तक रामलीला देखल लोग आके सुतल लोग। सबेर भइल। किरिन फुटला ले नन्हकुवा सुतले रहे।

दतुवन–कुल्ला की बाद नन्हकुवा क फूआ भाई–भतीजा के सतुवा गुर मीस के खियवली। ऊपर से दू–दू गिलास माठा। बाप बेटा क पेट भरि गइल। फूआ भतीजा के रोकल चहली। 'फेर कबो रहि जाई' घूमन कहत बहरियइलन। राह में फेरु खँडहर परल। नन्हकुआ के फेर कहनी मन परल; पुछलस– "ए बाबू करहिया– तउवा का भइल ?" अउँजाइल घूमन कहलँऽ– 'तू एकदम से गान्हीं हउवे। जवना चीज के पकड़ि लेबे पाहि लगा के छोड़बे।" तबले बाप बेटा क नजर खँड़हर की ओर गइल। देखल लोग कि– देवरानि–जेठानी फुटलकी कराही की टुकड़ा में दुनो ओर से लइकन क मइला फेके जात रहे लो। पीछे से हंटुवा अपना तावा की टुकड़ा की बदला रूइया वाला मिठाई खातिर कबाड़ी वाला से पइसा लेत रहे।'

●●●

कहानी

अंजोर के अंकवारी

❑ डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव

बसिया के इयाद मत करीं। जवन सोझा बा उहे टटका बा। ओही से संतोष करे के बा। मंगरइल बाबा के देखते बानी। नब्बे के पुलुंगी छूए—छूए के भइल बाड़े। तबो उनकरा बुझाला कि दुनिया में देखे खातिर अभी बहुते कुछ बाकी बा। ससुरारी जाए के दुइये हाली मौका मिलल, दस बीस गो पहुनाइओ गइल होइहें। बाकिर जब पहुनाई के बारे में बखान करे लागेले त बुझाला अभी काल्हे के घटना ह। एगो साली मंगरइल बाबा के चेहरा पर जब हरदी लभेर देहली त ससुरारी भर में चर्चा होखे लागल।

बाबा के बेटा के इ सब बतिया सुनत अच्छा ना लागे। कहले— जइसे—जइसे बुढ़ौती के चढ़ाई होत बा इहां के दिमाग घिसकल जाता। चुपचाप बइठ के भगवान के भजन करे के चाहीं। इहांका त गाँव भर के कथा—कहानी में मन फंसवले रहतानी। अधीरजी ओतने। कवनो काम में देरी भइल कि आहुंड़ कूट के ध दीहें। नदी में पंवड़े खातिर ढुकल बानी त कबो—कबो उजबिजियाइयो के परेला। घर—गृहस्थी के काम में देर—सवेर लागले रहेला। इहां के तामादी से घर भर परेसान रहेला। दुआर पर के पुरनका ताखा में ना मालूम इहां के का भुलाइल रहेला जे बेर—बेर ओकरे ओर ताकत रहिले आ संझलौका में तनिको देरी हो जाला त दीया जरावे खातिर बेचैनी बढ़ जाला। बुझाला जे घर नइखीं अगोरत, ताखा अगोरत बानी। बाबा जब ब्लॉक आफिस से रिटायर भहनी त फिकिर ढुकल कि ना मालूम एह कुर्सी पर अब के बइठी। सुने में आइल कि बी.डी.ओ. साहेब खुद अपना साढ़ू भाई खातिर सिफारिस में लागल बाड़े। बाबा बड़ा बाबू के कुर्सी पर तेरह साल तक बइठनी। केतना केतना पब्लिक के काम उहां के कलम से भइल। अधरी के रजिस्टर आ फाइल के बीचे बइठल मंगरइल बाबा अपना ड्यूटी में कोताही ना कइनीं। आफिस में हमेशा लोग घेरले रहे। 'ए बड़े बाबू, जवन सेवा—पानी लागी तवन दियाई बाकिर हमार कमवाँ' फाइनल करा दीं। लोगन के बात सुनके बाबा थोरिक देर ले आँख मूंद के सोचीं फेन मुंह में फेंटाइल पान के पीक देवाल के कोना में जाके फच् दे फेंक के कुर्सी पर आके बइठ जाईं। ममिला तय करे में अब आसानी हो जाव। बातचीत होखे। फेन समिलाते रसगुल्ला के दोकान में इमिरती—रसगुल्ला के चभाई होखे। सिफारिश करे वाला आदमी हलवाई के हिसाब करस। ब्लॉक आफिस में पब्लिक सर्विस के इहे दस्तूर रहे।

ऑफिस में जेतना स्टाफ रहे ओमें मंगरइल बाबा फरके से बर जास। मूंड़ी पर के केस रूई के फाहा नीयर फहरात रहे। करिया कुच—कुच देह के करियो कुर्ता तोप ना सकत रहे। उनकरे देह के रंगे खातिर भगवान जी करिया रंग बनवले रहले। मंगरइल रंग भइला के कारण लोग उनकरा के लइकांइए से मंगरइल कहे लागल। बाप—महतारी के धइल नाम तोपा गइल। इस्कूल के सार्टिफिकेट में उनकर नाम सुन्दरलाल लिखल देखल गइल रहे।

देह करिया होखे भा गोर, जवानी उमड़ला पर आँख बेचैन हो जाला। बिछौना पर ऊँधी रह रह के टूटे लागेला। बाप—महतारी के ना रहला से आपन बियाह के फिकिर ढुक गइल रहे। दुनिया ~~के लोग के शादी—बियाह होत रहे, मगर मंगरइल के दुआर पर केहू झूठहूं पूछे ना आवे कि एहू घर~~

में एगो कुंवार लइका बइठल बाड़े। समय त बइठल ना रहेला। कोमल जवानी हरांठ–मोराठ देह में बदले के शुरु हो गइल रहे। इ अइसन दुख रहे कि मंगरइल केहू से कहहूं में लजास। आ ससुरी लाज अइसन चीजे ह कि लइकाईं के लंगटा देह से बुढ़ौती तक आदमी के साथे लागल रहेले। लाज कबो बुढ़ाले ना। एने ओने जवानी के भार ढोअत कवनो लड़की के देखस त मंगरइल के मन हरियर हो जाव। हो ना हो तनी पता लगावल जाइत कि इ केकरा घरे के बेटी ह। कवनो दोस्त कह देव–का ओने लार टपकावत बाड़। उ तहरा जात के ना हियऽ। मंगरइल के मन जातपांत के खूंटो तूरे खातिर बछरू नीयर छड़पे लागे।

जब कवनो उपाय ना लउकल त मँगरइल गाँवे के एगो बाबू साहेब के दरबार में हाजिर होके गुहार लगवले। लजात–लजात आपन लालसा जाहिर कइले आ इहो कि बिना घरनी के उनकर घर भूत के डेरा बन गइल बा। मन रह रह के चंउक जाता कि एह सउंसे घर में एक दिन भूत–प्रेत चुड़इल के बास होइए के रही। मँगरइल के पार घाट लगावे के पावर अब बाबुए साहेब में बा। बाबू साहेब साठ के उमिर तक देस दुनिया के बढ़ियां से समझ गइल रहले। जवार में नाहियों त चालीस पचास गो बियाह उनकरे अगुवई में भइल रहे। कवन लइका परी ना चाहेला, भा कवना लइकी के मन कामदेव जइसन पति पावे ना करेला। बाबू साहेब अपना बात में अइसन लपेटस कि शादी तइये हो जाव। इहे भरोसा लेके मंगरइल उनका दुआर पर हाजिर भइल रहले।

बाबू साहेब मंगरइल के रूप आ मन देख के छोहा गइले। महीना भर में एगो गरीब परिवार के लड़की से शादी तय करा देहले। गरीब बाप–महतारी पहिले त ना–नुकूर गइल। बाप कहले – कोयला के खान में हम आपन सोना के कंगना ना फेंकब। तबो उनका के समझावल गइल – रूप रंग लेके का चाटे के बा ? लड़की के बर–घर अइसन मिलो कि ओकरा खाए पिये, पेन्हे–ओढ़े में कमी ना होखो। धन–दउलत अइसन चीजे ह कि सभकर दुख हर लेला। मंगरइल के लगे एगो रंगे नू नइखे बाकिर अउर कवन चीज के कमी बा। कुछ बात भगवान आ किस्मतो पर छोड़ देबे के चाहीं। ऊँच–खाल समझवला पर बाप आखिर में तइयार हो गइले।

मंगरइल के बारात सजल। एक जना दोस्त मंगरइल के समझवले – जवना गाँवे बारात जाता ओहिजा के लोग थोरिको सा उरेब भइला पर गारी–गरीयांव करे लागेला। तहरा रंग पर बोल उठबे करी। मगर तू धीरज रखिह। एह मौका पर आपन मतलब देखे के बा। नीमन त इ होई कि कान में रूई ठूंस के पालकी पर बइठिह। बाहर के आन्ही–पानी कुछ सुनइबे ना करी। सब बीमारी देखले–सुनले से होला। मंगरइल सेही कइले। बियाह हो गइल। मेहरारू उनकरा आगे करिया हंड़िया ध देहली सन। घर में बइठल मरदू के सूरत पर नवकी कनिया तीन दिन ले लोर बहवली आ शिवजी के रहरह के कोसली – हमरा करम में तू अइसने करियाठ मरद ठोक देहलऽ। दसों साल शिवरात ब्रत कइला के तू अइसन फल दिहलऽ।

मंगरइल के मन अपना जनाना के खूबसूरती पर अगराइल रहे। धीरे–धीरे सब ठीक हो गइल। भीतर के प्रेम–मोहब्बत में आगे चलके जइसे भूंड़ फूट गइल। हहा के मेहरारू के माने लगले। तबे उर्मिलो महसूस कइली कि हेतना नेह–प्रेम भला दोसर मरद के दीहि।

एक रात मंगरइल अपना उर्मिला के समझवले – ताखा पर के जरत दीया देखत बाड़ू नू। अपना लाफ से दीया संउसे ताखा के करिया क देले बा। बाकिर अँजोर ओकरे से होता। करिया ताखा के गोदी में अंजोर बइठल बा। हमार अंजोर तू ही बाड़ू। तीन गो बाल–बच्चा भइल। सभके शादी–बियाह भइल। बेटा–लोग परदेश गइल, बेटी अपना ससुरा गइली।

उमिर चढ़ला पर मंगरइल बाबा कहाये लगले। बाबा कहाइल उनकर नीमन ना लागे। नौकरी से रिटायरो भइला के बाद अपना के एगो जवान से इचिको दब ना बूझस। उर्मिला हंसस। उहो त अब नानी–दादी बन गइली। दूनू बेकत के मेल–प्रेम देख के गाँव में परतर दीहल जाव। मंगरइल बाबा एक दिन उर्मिला से कहले – तहरा के भगवान हमरे खातिर बनवले रहले। उनका बात पर उर्मिला खूब हँसली। लेकिन भगवानो कबो कबो निठुर मजाक क बइठेले। बुढ़ौती में रीढ़ के टेढुआए के पहिलही उर्मिला के कठिन बीमारी ध लेहलस। दवा–बीरो में कवनो कमी ना भइल। उर्मिला के मन निरास होखे लागल – दिन पर दिन देह के कमजोरी बढ़े लागल। एक दिन उ अपना पति के बड़ी गौर से देखे लगली। मंगरइल चंउकले – हमरा के एह तरें काहे देखत बाड़ू उर्मिला ?

उर्मिला बोलली – हम का कहीं। हमरा बड़ी अफसोस बा। हम राउर रंग रूप के केतना कोसनी, राउर ह्रदया के ना पहचननी। हमरा से जब जब गलती भइल भा मुँह से हरुस–पातर निकलल, रउआ ओकर मांख ना कइनी। हमरा के क्षमा कर दीहनी। बुझात बा जे हमार नाव अब डूबे चाहत बा। कुछ साल अउरी राउर सेवा करे के लालसा रहल ह। बाकिर भगवान जी के मर्जी जवन होखे। हमरा वश में रहित त ताखा पर के करिखा पोंछ देतीं आ दीया के अंजोरे छोड़ के जइतीं। पर आपन सोचल कहाँ पूर... उर्मिला रोए लगली।

–चुप हो जा। बोखार में ज्यादा ना बोले के। तू ठीक हो जइबू उर्मिला। हमार अंजोर तूँ ही हऊ।

बोखार उर्मिला के ले गइल।

दुअरा पर बइठल–बइठल नब्बे साल के मंगरइल बाबा ओसारा के ताखा देखत रहले। धुँआइल ताखा के अंकवारी में दीया अपना लाफ से अंजोर कइले रहे। ओही अंजोर में उर्मिला कहीं लुकाइल रहली।

●●●

Anjoria.com

पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

विमर्श / आलोचना

('बउधायन' का प्रकाशन पूर्व 1980 में लिखाइल, समीक्षात्मक सम्मति के अविकल प्रस्तुति)

'बउधायन' : बौद्ध धर्म आ संस्कृति के अद्‌भुत दस्तावेज

❑ डॉ0 अशोक द्विवेदी

'बौद्धायन' के सम्पूर्ण अध्ययन–अवलोकन त हम नइखीं कइले एसे सम्भव बा हमरा से कुछ कम, बेसी भा उँच नीच कहा जाव, बाकिर ओकर जेतना रूप हमरा सोझा आइल बा, ओकरा आधार पर ई कहे में हमरा इचिको हिचकिचाहट नइखे कि 'बौद्धायन' इतिहास, परम्परा आ समसामयिकता के नेईं पर खड़ा अइसन विशाल महल बा, जवना के निर्माण आधुनिक दृष्टि से भइल बा। एम्में बौद्ध युगीन धर्म संस्कृति, दर्शन आचार–विचार आ दृष्टिकोण के अइसन मौलिक विवेचन बा, कि ई ओह युग जीवन का जीवन–मूल्यन के दस्तावेज हो गइल बा।

गुलदस्ता, फुलवारी आ बगइचा अलग–अलग चीज हउवन स। केहू गुलदस्ता में दस–पाँच गो फूल पतई खोंसि के छणिक सौन्दर्य या सुगन्ध के सृष्टि कर सकेला बाकि फुलवारी भा, बगइचा तैयार करे में मेहनत आ समय लागेला। फुलवारी में किसिम किसिम के फूले भर होलन ह, बाकिर बगइचा में हर एक किसिम के पेड़–पौधा लता आ फूल होलन स। बगइचा में गुलदस्ता नियर कसीदाकारी आ कलाकारी ना होके एगो सहज सोभाविक सम्पूर्णता होला। एह सम्पूर्णता में रंग–बिरंगा रूप रस गन्ध आ विस्तार का बावजूद अंदरूनी एकता आ संगठन होला। 'बौद्धायन' गुलदस्ता न होके एगो अइसने बगीचा हऽ, जवना में रचना शक्ति, मेहनत समय आ साधना लागल बा।

आन्तरिक कसाव आ संरचना के गठन का दृष्टि से 'बौद्धायन' में बहुत लोग का सपाट वर्णन आ बोर किस्सागोई लउकि सकेले, बाकिर ध्यान से पढ़ला–आ देखला पर एकरा भीतर अनुभूतियन के अइसन बिनावट नजर आई, जवन एह विशाल महाकाव्य के भीतरी संगति दे रहल बा। हालांकि एह संगति में बिखराव बा बाकिर ई बिखरावे साइत एकर सबसे खास आ मौलिक विशेषता बा उहो एह वजह से कि 'बौद्धायन', 'गीतिकाव्य' भा 'खण्डकाव्य' ना ह।

दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती भोजपुरी के धाकड़ लेखक हउवन। 'जेहल कऽ सनदि' आ 'जिनगी कऽटेढ़ राह' उनका मँजल लेखनी के प्रमाण बा। जे उनका गद्य के जानकार बा, ऊ अनासो उनका काव्य के– पँजरा आ जाई। 'बौद्धायन' में बिनल काव्यानुभूतियन के पड़ताल कइला पर एगो बाति स्पष्ट हो जाई की स्वामी जी के प्रतिभा कबीर नियर ध्वंसात्मक ना होके, तुलसी नियर रचनात्मक बा। 'बौद्धायन' मतिन रचना उनका रचना शक्ति के पुरहर प्रमाण बा। स्वामी जी के कवि उग्र या विद्रोही ना होके शान्त आ धीरज सम्पन्न बा।

जइसन कि नाँवे से जाहिर बा 'बौद्धायन' भगवान बुद्ध के जीवन चरित्र आ उनका दर्शन के केन्द्र बना के लिखल महाकाव्य हऽ। ई ना त 'किरातार्जुनीय', 'शिशुपालवध' आ 'रामचन्द्रिका' नियर अलंकृति प्रधान बा, ना 'महाभारत' आ 'पृथ्वीराज रासो' नियर शुद्ध कथात्मक। बलुक, 'बाल्मीकि रामायण', 'रघुवंश', 'नैषधचरित' आ 'रामचरित मानस' नियर चरित–प्रधान बा। भगवान बुद्ध नियर महानपुरुष आ क्रान्तिकारी दर्शन के प्रणेता के जिनगी के हरेक पहलू के उजागर करे वाला 'बौद्धायन'

में महाकाव्य के कुल्हि आधारभूततत्व बाड़न स। महान कथानक, महान चरित्र, महानशैली आ महान मानवीय संदेश से परिपूर्ण ई ग्र न्थ कुछ ममिला में होमर का 'इलियड' आ वर्जिल का 'एनीड' से भी आगा बढ़ि गइल बा।

'बौद्धायन' 31 सर्ग में शृंखलाबद्ध अइसन महाकाव्य बा, जवन 'महाकाव्य' सम्बन्धी मूलभूत धारणा के, अपना विस्तारे से तोरऽता। ई सर्गबद्ध होइयो के 'ईशान संहिता' में दिहल सर्ग–संख्या के सीमा लाँघि जाता...

अष्टसर्गान्नतु न्यूनं त्रिशंगच्चिनाधिकम्।
महाकाव्यं प्रयोक्तव्यं महापुरुष कीर्तियुक्।

अर्थात् महाकाव्य आठ सर्ग से कम ना होखे आ तीस सर्ग से अधिका ना होखे ओकरा भीतर कवनों महापुरुष के कीर्ति वर्णन होखे के चाहीं। होमर के 'इलियड' आ '–ओडेसी' में चौबीसेगो सर्ग बाड़न सऽ। 'पैराडाइज लास्ट' आ स्पेन्सर के 'फेयरी क्वीन' में बारहे सर्ग बाड़न स।

पौर्वात्य आ पाश्चात्य दूनो साहित्य शास्त्रियन का विचार से महाकाव्य के जवन एगो सार्वकालिक सर्वमान्य रूप होखे के चाहीं 'बौद्धायन' में मिल जाई। एकर लमहर कथानक एगो महान युगान्तरकारी पुरुष का जिनगी से जुड़ल बा। ई इतिहासिक होइयो के कवि–कल्पना के स्वतंत्र प्रयोग के हेठ नइखे करत। प्रसाद गुण सम्पन्न गरिमामयी शैली एह महाकाव्य के गति आ प्रवाह दे रहलि बिया। 'बौद्धायन' के एगो खास विशेषता इहो बा कि एमे जन–जन हिताय शान्ति दया आ करुणा के आलोक बिखेरत भगवान बुद्ध के 'लोकरंजक' रुप के वर्णन बा। आचार्य दण्डी अपना 'काव्यादर्श' का पहिला परिच्छेद 19वां छन्द में एह लोकरंजक रूप के महाकाव्य कऽ महत्त्वपूर्ण विशेषता मनले बाड़न।

ऐतिहासिक तथ्यन के प्रमाणिकता का ख्याले से 'बौद्धायन' भोजपुरी के एगो बेजोड़ कृति बिया जवना में भगवान बुद्ध के जीवन–दर्शन के प्रभावपूर्ण आ मर्मस्पर्शी बखान कइल गइल बा। एह बखान में ऊ कूल्हि ऐतिहासिक तत्व आ गइल बाड़न स जवना से बौद्ध धर्म के उदार आ संतुलित रूप के प्रचार प्रसार आ प्रभाव के इचिको बल मिलल बा। एह सृजन–संपादन में स्वामी जी के युग–बोध काबिले तारीफ बा।

'बौद्धायन' के बीज रूप 'अँजोर' त्रैमासिक का जरिये प्रकाश में आइल रहे। 'अक्तूबर' 60 वाला अंक में स्वामीजी का टिप्पणी का साथ 'बउधलीला' शीर्षक से एकर शुरूआत भइल। अट्ठारह–उन्नीस बरिस पहिले के ई टिप्पणी 'बौद्धायन' के रचनाभूमि के समुझे में सहायक हो सकेले– 'भगवान बुद्ध के अवतार कब आ कहँवाँ भइल आ अवतार भइला पर कइसे उहाँ का समाज सुघार कइलीं एह बाति के विचार कइके प्रबन्ध–काव्य का रूप में 70 पन्ना के एगो पोथिए रचलि बा।'

ओह घरी के ई संक्षिप्त रचना कइसे 'बौद्धायन' बनि गइल, ई सोचला पर कवि के जीवट, कल्पना–आ रचना–शक्ति के सहजे अनुमान कइल जा सकऽता। हो सकता रचनाकार का मन में ई विचार आइल होखे कि 'हम एके भोजपुरी के एगो पूर्व आ विशिष्ट कृति बना दी।' जे होखे बाकिर अपना विषय वस्तु (सब्जेक्ट मैटर), विस्तृत ढाँचा का भावबोध का कारन ई भोजपुरी साहित्य में एगो अनोखी (यूनीक) कृति हो गइल बिया। एम्मे राजकुमार सिद्धार्थ से बुद्ध आ 'महाबोधिसत्व' बने के

प्रक्रिया कऽ रोचक–प्रामाणिक प्रस्तुतीकरण बा बौद्ध–धर्म आ दर्शन के तात्विक विवेचन का साथे ओकरा फैलाव आ प्रभाव के वर्णन बा। समसामयिक परिवेश आ संस्कृति का साक्षात्कार का दृष्टि से 'बौद्धायन' सचहूँ एगो युगप्रवर्तक महाकाव्य बा। अइसे संस्कृत में महाकवि अश्वघोष 28 सर्ग में 'बुद्ध चरित' पहिले लिखले रहलन।

संस्कृत, पालि आ अपभ्रंश का गम्भीर ज्ञान का, बिना बौद्ध–धर्म के आंतरिक–ऐतिहासिक मूल्य समुझल कठिन बा। दण्डी स्वामी सरस्वती जी सम्भवतः ओह कूल्हि बौद्ध–ग्रन्थन के अध्ययन कइके, उन्हनी के पचालेले बाड़न–तब्बे ऊ एके अपना भावभूमि पर फेरू से रचे में सफल हो सकल बाड़न। अगर अइसन ना रहित त 'बौद्धायन' में मौलिकता नाँव क कवनो चीझु ना रहित।

मानवतावादी विचारन के संवाहक का रूप में सरस्वती जी के एकही धारणा तनी खटकऽतिया; ऊ ह उहाँ के अवतारवाद में विश्वास। श्री राम, श्रीकृष्ण नियर उहाँ का गौतम बुद्ध के अवतार कऽ वर्णन कइले बानी। 'पाप–समुद्र' का फफइला से चारू ओर भयावनि लहरि उठलि रहे आ डगमग करत धर्म के नाइ भँवर में परि गइल रहे। अपना भक्तन के दुर्दशा आ उत्पीड़न देखि के दयासिन्धु के हिया पसीज उठल आ उहाँ का कपिलवस्तु में अवतार लिहनी। उहाँ का अवतार लेते धर्म के दिव्य उजाला फइलल, अन्हार के परदा फाटल, अधर्म के आतंक खतम भइल आ दया–करुणा के स्निग्ध धारा बहि निकलल। इहेना–

बीतलि रात, बिहान भइल
साँसि लेत, अँगड़ात हिमालय तनिका जोति देखवलसि
उरुवा भइया खोंढ़रा घइलनि
चमगादुर भुसहुल कऽ कोना
ठग, लबार के ठगई भागलि
सीदति काटि साधुता जागलि
उड़सल जादू टोना;
कपिलवस्तु में चक्का ऊगल
जुग कऽ सूरुज चमकि उठल।

एह तरे भगवान बुद्ध का देह–धारण से पहिलहीं उनकर अस्तित्व, अतना प्रकाशमान रहे कि पूरा परिवेश में परिवर्तन आ गइल। युग कऽ सूरज का रूप में उनकर उदय भइल जबकि इतिहास आ परंपरा में भगवान बुद्ध एगो साधारण राजकुमार का रूप में धरती पर आपन गोड़ धइलन; वातावरण के देखलन–सुनलन आ ओसे प्रभावित भइलन। सांसारिक दुःख, नश्वरता आ अशांति से ऊबि के मन क्षुब्ध भइल, एगो अकेलापन–एगो बैराग–उनका मन में समा गइल आ ऊ सत्य आ शांति का खोज में निकल परलन। एह सत्य का खोज–यात्रा में उनका शांति आ ज्ञान के प्राप्ति भइल, ऊ महाबोधिसत्व जइसन अलौकिक स्थिति में चहुँपि गइलन। तब जाके बौद्ध धर्म मतिन उदार आ मानवतावादी दर्शन कऽ जन्म भइल आ ऊ देश–देशांतर में फइलल–पसरल। कहे के मतलब ई कि अवतार का लक्षणन से उपरोक्त स्थिति मेल नइखे खात।

स्वामी जी का रचना–विधान में उनका संवेदनीयता आ कल्पनाशक्ति से समाविष्ट अनुभूतियन

के रचाव कऽ एगो अलगे महत्व बा। प्रकृति के मनोहारी चित्र उकेरत खा ई संवेदनीयता आ कल्पनाशीलता अउर गहिर हो जातिया। एगो चित्र देखीं –

जेइसन नील कसीदा काढ़ल
दइबी तम्मू आसमान कऽउ
सुघर, सोनहुला, लाल गुलाबी
जहँवा सोभत बाड़न लाखन
किसिम–किसिम के फूल।

ध्वनि–चित्र आ रूप–चित्र का दृष्टि से 'बौद्धायन' में अनेकन गो लाइन मिलि जाई जवना के विवेकसम्मत व्याख्या कइला पर एकर भाषिक रचाव आ ओकर आंतरिक सुघराई खुलिके उजागर हो जाई। ध्वनि आवर्त तऽ 'बौद्धायन' के रचना विधान के एगो खास विशेषता बा –

शरदरीतु का नील अकाशे। सोलह कला साजि के विहँसत
मंगल–विमल चनरमा उगि के सरगलोक से डेग बढ़ावत
अमिरित बरसावत। मिरितलोक में आवत
साथे साथ हजारन तारा
झूमि–झूमि आनंद मनावत

ईहे ना, 'कामायनी' मतिन भावन का मानवीकरण के कई गो उदाहरण 'बौद्धायन' में मौजूद बा। तृष्णा आ मृत्यु के वर्णन करत खा कवि कइसन प्रभावी भावचित्र उरेहे के कोशिश कइले बा। कविताई के सुघराई इहाँ देखे लायक बा–

टिसुना नई जवानी पवलसि
चमकि–झमकि के मटकी मारे
कले–कले मुसुकाय।
मउवति रानी पहिरि चुनरिया
काजर कइले राग कढ़ावे चुरुगे, चहकेले।

अब आइल जाव छंद पर। 'बौद्धायन' में मुख्यतः मुक्तछंद (फ्री–वर्स) के प्रयोग भइल बा। ई गौर करे वाली बाति बिया कि महाकवि निराला मतिन स्वामीजी छन्दन के छोट राह, छोड़ि के मुक्त रूप में आपन विचार व्यक्त कइले बाड़न। गति आ प्रवाह खातिर जेतना विस्तार मुक्तछंद में संभव बा ओतना साधारण छंदन में नइखे। स्वामी जी एकर प्रयोग अपना ढंग से बलुक, सोभाव नियर कइले बाड़न। कहीं–कहीं त उनका पंक्तियन के रचाव–बसाव, ध्वनि साम्य आ सहज अनुप्रास–आवर्त आ प्रवाह देखि के निराला जी के इयाद आ जाता–

झिर–झिर झरना
गुनगुनात
अँठिलात कलेकल
कतहीं थिरकत
डेग बढ़ावत

सातो सुर में गावत
आवत
श्री माई भगीरथि के चरन छूवे के।

पंक्तियन के सुगठन आ संबद्धता देखे जोग बा। ओतरे 'बौद्धायन' के भाषा भले ठेठ भोजपुरी भा 'निछक्का' भोजपुरी होखे, बाकिर स्वामीजी भोजपुरी के संस्कार–परिष्कार करे खातिर, ओके प्रभावी आ जानदार बनावे खातिर संस्कृत आ हिंदी शब्दन के लेवे में परहेज नइखीं कइले।

'बौद्धायन' मूलतः शांत रस प्रधान महाकाव्य बा, करुण रस एम्मे एकर सहकारी बा, बाकिर अउर रसनो के एम्में सुघर परिपाक भइल बा। रौद्र, हास्य, वीभत्स, भयानक कुल्हि रसन के उदाहरण एम्मे मिलि जाई। वात्सल्य के अतना प्रभावशाली आ मर्म छूवे वाली पंक्ति बहुत कमे जगहन पर मिली–

"प्रिय गउतम कऽ देखि भेख मुनि–सन्यासी कऽ।
मन राजा कऽ बेकल भइल सहज ममतावश।
कंठ रुन्हाइल। बोली बंद। ऊ परि मोह भरम में
ना उनुका के मुनि कहि सकलन
ना कहि सकलन पूत।"

आखिरी पंक्तियन में भावना के चरम उत्कर्ष आ आवेगन के कशमकश देखल बनता। ठीक अइसही 'कुमार संभवम्' का नवम् सर्ग में कालिदास पार्वती का मनोवेगन के कशमकश के चित्र खड़ा कइले बाड़न। पार्वती जी के उठल डेग ना आगा परि सकल न पाछा लवट पवलस –

"तं वीक्ष्य बेपथुमती सरसांगयष्टिः शैलाधिराज तनया न ययौ न तस्थौ।"

'बौद्धायन' में अलंकारन के प्रयोग कतहीं जान–बूझि के कइल गइल होखे अइसन बाति नइखे। अलंकार अनासो अपना सहज रूप में आ गइल बाड़न स आ एह तरे स्वामी जी के रचना में सहजता आ प्रवाह आ गइल बा। ईहे ना, कथा–विन्यास में रोचकता आ प्रभाव (इम्प्रेशन) देबे खातिर 'नाटकीयता' के सुघर समावेश कइल गइल बा।

कुल मिला के इहे कहल जाई कि 'बौद्धायन' भोजपुरी साहित्य के एगो बड़हन आ अनोखी (यूनिक) कृति बिया जवन अपना विषय वस्तु, रचना–विन्यास आ संगतिपूर्ण संरचना का कारन मूल्यवान हो गइल बिया। इतिहास, परंपरा आ समसामयिकता का संतुलन से उत्पन्न आधुनिकता एह कृति के निहित सृजनात्मकता के अर्थवत्ता दे रहल बिया। बौद्धायन सचहूं एगो युग, एगो परिवेश, एगो संस्कृति आ विचारधारा के प्रामाणिक दस्तावेज बा। ऊहो लोकभाषा भोजपुरी में। स्वामी विमलानन्द जी के काव्य–प्रतिभा के ई अनुपम जोगदान भोजपुरी का ओर से भारतीय वाङ्मय के सचहूँ समृद्धि प्रदान कइले बा।

●●●

विमर्श / आलोचना

भोजपुरी लोक के भाव बोध के प्रतिबिंब : 'भोजपुरी कहानी'

❑ विष्णुदेव तिवारी

परंपरा :

भोजपुरी मन निश्च्छल, निर्विकार, शीलवान आ प्रण के आगे समरपन ना करे वाला होला, भलहीं एह जिद्द आ संकोची सोभाव के कारने ओकर जान काहे ना चल जाउ ! 'कवि कयलास' के कयलास जी के रूप में अइसने भोजपुरिहा चरित्र के सृजन करत 'सुमन' जी उनका बारे में कहत बानीं – "दुनिया मानसरोवर ठहरलि त कलम चलावे वाला हंस। जल में डुबकी लगाइ के मोती चुनल ओकर काम ह। दुनिया फुलवारी ठहरलि त कलमि चलावे वाला भँवरा। किसिम–किसिम का फूलन क रस लेइ के समाज–सेवा खातिर मधु तइयार कइल ओकर काम ह। आज का कलमि चलवनिहार का आगा माहुर क कटोरा धइल बा। समाज क भलाई सोचि के ओकरा माहुर घोंटही के परी। एह से कलमि चलावे वाला बिदमान, दुनियाँ क कलयान करेवाला महादेव बा!"[1]

स्वतंत्रता संग्राम में भोजपुरियन के, समूचा अस्तित्व के साथ शामिल होखे के कहानी आजुओ कई साहित्यिक कृतियन, लोकगीतन में सहेज–सँगेर के रखल बा। आचार्य शिवपूजन सहाय के 'कुंदन सिंह केसर बाई' भोजपुरी लोक के स्वदेश–प्रेम के अइसने मिसाल प्रस्तुत करत बिया, जेमे दूनो चरित्र– पति–पत्नी भारत के स्वतंत्रता के बलि–वेदी पर आपन सबकुछ सुंदर, श्रेष्ठ, कमसिन जिनिगी–होम क देत बा लोग। देश खातिर ई त्याग, समरपन आजुओ दुर्लभ नइखे। रामनाथ पाण्डेय के कइगो कहानी अइसने विषय पर प्रकाशित भइली स, जेके, 'देस के पुकार पर' नाँव के कहानी–संग्रह (1999) में संग्रहीत कइल गइल। बाद में स्वतंत्रता के बाद जब देश–प्रेम–व्रती लोगन के सरकार का ओर से पेंशन आदि सुविधा मिले लागल त एह में कतने तिकड़मी लोग छल–प्रपंच–घूस आदि के जरिये स्वतंत्रता–संग्राम सेनानियन में आपन नाँव दर्ज करा लिहले आ स्वर्ग आ अपवर्ग के सुख भोगत अपना आवे वाली 'जेनरेशनो' खातिर धन, वैभव, यश छोड़ के परलोक गमन कइले। छल, छद्म आ कृतघ्नता के एह यथार्थ के दर्शन–प्रत्यक्ष भोजपुरी के कई कहानियन में देखनउक भइल बा, जइसे बरमेश्वर सिंह के कहानी 'अमर कथा'[2] में गाँव के एगो बुढ़ऊ काका गाँवे के एगो छद्म स्वतंत्रता सेनानी के शवयात्रा में शामिल होत उनकर (अ)– महान कथा बड़ा रस ले–ले श्मशान तक कहत चलल जात बाड़े। बुढ़ऊ काका में जइसे कहानीकारे परकाया–प्रवेश कइले होखे आ कथा के व्यंग्यात्मक धार देत होखे।

अपना ऊपर होखे वाला अत्याचार के प्रतिकार कइल भोजपुरी लोक के आपन निजी चरित्र ह, जेमे ऊ अनाचारी ना होला। प्रेम से जे गरदन देबे में ना हिचके उहे लाज, लेहाज आ मजबूरी के फायदा उठावे वालन के खिलाफ तन के खाड़ हो जाला। गाँधी जी भोजपुरी क्षेत्र चंपारने से अपना देशव्यापी आंदोलन के शुरूआत कइले रहले। पांडेय नर्मदेश्वर सहाय के कहानी 'हरताल' में दलित वर्ग अपना प्रतिष्ठा पर भइल आघात के खिलाफ गाँधीवादी ढंग से संघर्ष खातिर एकदम से एकवट जाता बा। "किसान भगवान" में किसान सामी जी के नेतृत्व में बाबू दलसिंगार राय के जुलुम–जमींदारी के खिलाफ जूझ पड़त बाड़े स आ आपन हक लेके मानत बाड़े स। द्रष्टव्य बा कि किसानन के ई संघर्ष न्याय के नेंइ से उठल बा, अन्याय के गड़हा से ना। "पिपरदाहाँ कऽ पनरह सइ बिगहा जमीनि–ओइजा का किसान भाइन के मिलल आ सइ बिगहा बाबू साहेब का खाये–पीये के छोड़ि दियाइल।"[3]

आदर्शवाद भोजपुरिहा जन के मन, बचन आ कर्म तीनू में परिलक्षित होला, एह से जदि कबो ऊ गिरबो करेला, ओकरा से कुछ ऊँचो–खाल हो जाला, तबो ऊ आदर्श से नीचे ना जाय। भोजपुरी लोक के

एह खासियत के देखावत कई गो स्तरीय कहानी बाड़ी स, जइसे पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के 'गुरु–दक्षिणा' में बेकारी के वजह से पढ़ल–लिखल... संस्कारित युवा के चोर–डकइत बनत देखावल गइल बा, जबकि 'सतवंती' में भूख के मार से नायिका के तन बेंचत। दूनों जगहा अभाव बा, दूनो जगहा पतन (स्थान–च्युति) बा, तबो आदर्श स्थापन बा, भलहीं एह में सह आदर्श कपूर अस काहे न बिला जाइ। 'गुरु दक्षिणा' में प्रिंसिपल डॉक्टर करमरकर अपना ओह बेचीन्हल चेला का पेशा पर गंभीर हो के सोचत रहले[4] आ 'सतवंती' में अपना पत्नी (जे अपना पति के भूख मिटावे खातिर आपन तन बेंच के आइल बिया) के "अँकवार में कस के खींचत आ ओकर मुँह चूमत मनबोध कहले– रुपिया हमरा आज बुझाइल ह, ते साँचो के सतवंती हइस।"[5]

एहिजे ब्रजकिशोर के कहानी 'सजाय' में साँचो (नायिका) अपना पर कुदृष्टि डाले वाला आ अपना मरद के आँख फोरे वाला अय्यास जमींदार के जननेन्द्रिय काट के ओके अइसन सबक सिखावत बिया कि ऊ अब (यदि बाँच गइल होखे तब) अपने मेहरारू खातिर नाकाबिल हो जाता, दोसरा के टाटी का फारी?

प्राध्यापक अचल, डॉ0 रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', डॉ0 चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल', अक्षयबर दीक्षित, सूर्यदेव पाठक 'पराग', रामवृक्ष राय 'विधुर', स्वामी फन्दोतीर्णानन्दपुरी, भगवान सिंह भास्कर, अनिल ओझा 'नीरद', जय बहादुर सिंह, डॉ0 आशारानी लाल, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, डॉ0 अजय कुमार ओझा, कन्हैया पांडेय, अनंत प्रसाद 'रामभरोसे' आदि कहानीकार कवनो ना कवनो आदर्श से प्रेरित होइए के कहानी लिखेला लोग। एकरा से एगो अइसन स्थिति बनेले, जेकरा से जीवन के संघर्ष से पलायन के राह खुलेला, जे कवनो काल आ कवनो युग में उचित ना कहाइल आ ई आम भोजपुरी स्वभाव के समानान्तरो नइखे चलत। कन्हैया पाण्डेय के 'मिरजई'[6] संग्रह के कहानियन में अइसने राह बेर–बेर खुलत बा। जिनगी में कतनो बाबरी मस्जिद ढहासु, कर्फ्यू उठला के बाद देवी पंडित (देवी काका?) आ उस्मान मियाँ के आदर्श दोस्ती पर कवनो खरोंच ना लागी। तनी–मनी शक सुबहा के बाद सब ठीक आ राते भर में फटाफट मिरजई तइयार हो जाई।

शिवपूजन लाल विद्यार्थी के कहानियनो के इहे स्थिति बा। अलबत्त, **रामलखन विद्यार्थी** के कहानी (जइसे 'भूमिहीन', 'पह ना फाटल रहे', 'भूखे जिनगी ह' आदि कई कहानी) ऊपर से आदर्शवादी संरचना के होखऽ स, इहनी में जीवन यथार्थ हरमेस अदृश्य रूप से वर्तमान रहेला, कहानी उद्देश्यपूर्ण होखला से 'विजन' स्पष्ट रहेला जबकि हर सोच, हर पक्ष के साथ ताल–मेल बइठा के चलेवाला भगवती प्रसाद द्विवेदी के कवनो–कवनो कहानी 'विजन' क्लीयर ना होखला के वजह से मुकम्मल प्रभाव डाले में असमर्थ साबित हो जाली स, जइसे 'फीलगुड'[7] कहानी के चरित्र सुकांत बाबू के गढ़े में लेखकीय दृष्टि स्पष्ट नइखे हो सकल। एगो मनबढ़ू पुत्री के बिआह के बात सोच–सोच सुकांत बाबू अपना के एगो कमरा में बन क के जरा के मुआ घालत बाड़ें– एकरा पीछे लेखक के मंशा का स्थापित कइल बा, एकदमे स्पष्ट नइखे हो सकल। परिस्थितियन में द्वंद्व आ संघर्ष के स्थिति कबो बनते नइखे। जान दे दिहल कवनो समस्या के समाधान त नाहिंए भइल।

भोजपुरी लोक प्रकृति–प्रेमी होला। प्रकृति से ओकर लगाव कबो ओकरा सौन्दर्य के वजह से आ कबो ओकरा प्रति ममत्व–भाव के साकार से निभत रहेला। भोजपुरी कहानियन में सामान्यतः प्रकृति के उद्दीपक रूप के वर्णन भइल बा बाकिर आलंबन आ आश्रयो रूप के अभाव नइखे, जइसे –

प्रकृति के आश्रय रूप

"फेर इयाद पड़ल – एही बगइचा में कनिया वाला डोली रखाइल रहे आ शिवपूजन कँहार एक लोटा पानी ओहार के सटले ध के अलगा हट गइल रहले। मेंहदी रचाइल एगो सुबुक सुघड़ हाथ बहरी निकल के भीतर लोटा खींच लेले रहले। ओहार के फाँक से हरिन अइसन एगो आँख झलकल त बुझाइल

रहे, जइसे सउँसे बगइचा मोजरा गइल होखे।"[8]

प्रकृति के आलंब रूप

"साँझि खान लवटत बेर एने सूरज बूड़त रहत होखे आ उनकर लाल किरनि नहर ओह पार के पेड़न के नवकी धानी पतइन पर कुछ अइसन अकस डाले कि लागे जे नहर ओ पार के किनारे–किनारे के कुछ पेंड़ आ झाड़–झंखाड़ नीचा से ऊपर से मधिमाह लाल फूलन से लदाइल होखे। उनकर ई गुलाबी छाँही जब नहर के पानी में झिलमिला त लमाई में आधा नहर के पानी लहरात गुलाबी हो जा। ई अद्भुत लुभावे वाला सृष्टि के लीला देखत हमनी का नहर के किनारा धइले कोसन चलि आइल करीं जा।"[9]

प्रकृति के उद्दीपक रूप

"दुपहरिया भइल रहे। बेजोड़ पछेया डंकले रहे। गरमी के दिन होखे से लूक सन–सन चलत रहे। बधारी से माल–गरू चर–चुरि के लवटि आइल रहन। ऊँखि के खेत के आरि पर से भरि–भरि खाँचिन घास गढ़ि कि घासगढ़वा लोग घरे आ गइल रहन। स्कूल से लइका–लइकी पढ़ि–लिखि के आ गइल रहन स। घर में सभे आराम करत रहे। खरवरिया नाचे के काम लगा देले रहे।[10]

इहे ना, आदमी के मन–मिजाज–व्यवहार के बरक्स प्रकृति के खाड़ करत भोजपुरी कहानीकार मनुष्य के हीनई, मूर्खता आ हृदयहीनता के बड़ा मार्मिक, हृदय–द्रावक वर्णन करत बा–

"धूर्त! बेहूदा! एकदम हृदयहीन! छिः..... छिः..... ई अपना चिक्कन, मीठ आ मोलायम शब्दन में कतना बीखि छिपवले बाड़न स।" ऊ भुनभुनात चलल जात रहलन। उनके लागल कि गाँव के बब्बुर त हरियर आ थोर–ढेर छाँहदारो बाड़न स, बाकि एइजा त खाली सुखले बब्बुर के फेंड़ बाड़न स। अपना सूखल, बिखियाह काँटन का साथ गतरे–गतर आ मन तक ले बींधे वाला बब्बुर के फेंड़।[11]

बरमेश्वर सिंह के 'हैलो कामरेड' कहानी के प्रकृति तऽ परिवेश निर्माण के संगे–संगे एगो विचार धारा के पतन के उद्घोषणा बड़ा निरीह, बड़ा मद्धिम आ बड़ा उदास–उदास शब्दन में व्यक्त करब बिया। एह उदास प्रकृति से व्यक्त कहानी के परिणति के दिशो खुलत बिया (बाकिर जले कहानी खतम नइखे होत, तले ई उत्सुकता बराबर बनल रहत बा कि कहानीकार के द्वारा रचल एह प्राकृतिक ताम–झाम–बितान के पीछे अन्तर्निहित उद्देश्य का बा ?)

"कामरेड के मुँह पच्छिम दिशा का ओर बा। ओने नदी का रेत पर झाड़–झंखाड़ आ कास–वन उपजल बा। कामरेड का पीठ पीछे समतल रेत बा। ओकरा बाद नदी के धार। कलकल–छलछल। मछुआरन के नाव पानी का सतह पर रेंगत। कछार पर लाइन में बइठल बगुला कुल्हि ध्यान लगवले बाड़ें स। कामरेड का दहिने, कुछ दूरी पर सार्वजनिक घाट बा। घाट खूब चालू बा। लोग–बाग नेहाय – धोवाय में लागल बड़ें। पनिहारिन कुल्हि के आगा–जाहि लागल बा। माल–मवेशी पानी पिये खातिर उतरत–चढ़त बाड़ें स। कामरेड का बायें, ठीक उनुका कान्ह का ऊपर वाला आकाश पर, दिन भर के थाकल–खेदाइल सूरूज अब आराम करे के फिराक में बा। सूरूज के मुँह पर थकान के लाली बा। कहल जाला कि कामरेड लोग एह लाली पर मर मिटेला। बाकिर, एह कामरेड के नजर त ना आगे ना पीछे, ना ऊपर ना नीचे, बलुक ऊ त जमीन में गड़ाइल बा। कामरेड के मुँह बेमरिहा गोरू के मुँह अस काहे लटकल बा ?[12]

भोजपुरी प्रदेश वीर भूमि ह, एह से एहिजा प्रेमो के निर्वाह एगो उत्सवे के रूप में होला आ मनुष्य के एह करनी से कला छूंछ रह जाउ, ई संभव नइखे, बाकिर अचरज बा कि कविता आ उपन्यास में प्रेम के डंका बजावे वाला भोजपुरी साहित्यकार कहानी के क्षेत्र में अतना मुखर काहें नइखे? **'बिन्दिया' (रामनाथ पांडेय, 1956), 'फुलसुँघी' (पांडेय कपिल, 1977)** से लगाइत **'आवऽ लवटि चलीं जा' (अशोक द्विवेदी, 2000)** तक कई उपन्यास उदात्त प्रेम के उत्कर्ष से भरल परल बाड़ें स आ लोक मन के अपना कथ्य, तथ्य, शिल्प आ संवेदना से तृप्त कइले बाड़ें स। कहानी के क्षेत्र प्रेम के ममिला में अतना

उपजाऊ काहें ना भइल? अइसन त नइखे कि कहानी के क्षेत्र प्रेम खातिर वर्जित होखे ? ना। विश्व के महानतम कहानीकारन में शामिल ओ0 हेनरी (अमेरिका) के शाश्वत कीर्ति के आधार उनकर 'द गिफ्ट ऑफ द मैगी' जइसन प्रेमे कहानी बाड़ी स। हिंदी के चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के पहचान उनकर प्रेम कहानी 'उसने कहा था' के वजह से बेसी बा। जयशंकर प्रसाद के 'पुरस्कार', 'आकाशदीप' आ 'देवरथ' राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह के 'कानों में कँगना', रेणु के 'तीसरी कलम', अज्ञेय के 'रोज', कमलेश्वर के 'नीली झील', रांगेय राघव के 'गदल' जइसन प्रेम कहानी जदि हिंदी से निकाल दिहल जाव त साहित्य के एगो अंग एकदम अपंग हो जाई। हिंदी साहित्य में प्रेम कहानियन के एगो तेजस्वी परंपरा बा, जेकरा के राजेन्द्र यादव के 'हंस' तमाम विवादन के बावजूद, आजु ले निबाहत आ रहल बा। रवीन्द्र कालिया के संपादन में, भारतीय ज्ञानपीठ, आपन पत्रिका 'नया ज्ञानोदय' के चार–चार गो महाविशेषांक प्रेम कहानियन पर केन्द्रित क के निकललस। तऽ भोजपुरी कहानी साहित्य खातिर ई सोचेवाला बात बा। एहिजा प्रेम कहानी काहे नइखी सऽ? या जदि बड़लो बाड़ी सऽ त 'ऊँट के मुँह में जीरा' अस काहें? जबकि भोजपुरी क्षेत्र में प्रेम के विकृत प्रकटीकरण फिल्म आ कैसेटन के माध्यम से तुलनात्मक रूप से ज्यादा बा।

शायद एगो जवाब ई हो सकत बा कि जब अश्लील प्रेम कहानी सहजे लभ्य बाड़ी सऽ त, श्लील साहित्यिक कहानी के, बेकार के जरूरत समझ के, भोजपुरी कहानीकार लोग उपेक्षित कऽ दिहल। बाकिर जवाब के ई सरलीकरण होई। दरअसल भोजपुरी कहानीकार अनजाने एह ओर ना गइल। ओकरा पासे जवन परंपरा रहे, ऊ या त 'सुमन' जी वाली यथार्थ के, चाहे बाद वाला लोगन के आदर्श के रहे, आ जबतक आधुनिक दौर आइल, तबतक 'पेट' आ 'हेठ' के चक्कर अतना तान दिहलस कि लोग प्रेम के देखियो के ना देख पावल आ 'रिक्त स्थान के पूर्ति' फिल्म वाला करत रहले स।

दरअसल प्रेम न यथार्थ ह, न आदर्श। ई सबकुछ ह, चाहे कुछुओ ना ह। एकरा के परिभाषा में बान्हल ओइसहीं असंभव बा जइसे सूर्य के किरन के मुट्ठी में बान्हल, तबो प्रेम के पराकाष्ठा पर पहुँचे वाला लोगन से इतिहास भरल–परल बा। भारतीय वाङ्मय में राधा कृष्ण के प्रेम अद्वितीय, अनुपम बा। शीरी–फरहाद, रोमियो–जूलियट, लैला–मजनू – कतने साँच–झूठ चरित्र प्रेम के दुनिया में 'मिथ' बन गइल बाड़ें। प्रेम खातिर अभावो उर्वर ह, समृद्धियो उर्वर ह। एहिजा भाव आ स्वभाव साँच होखे के चाहीं। शुरूआती भोजपुरी कहानीकारन के ध्यान 'भंडार भरे के बा' पर जतना गइल, ओतना एह पर ना गइल कि भाव से भरे के बा। आजुओ भोजपुरी कहानी के क्षेत्र में 'भंडार' आ 'भाव' के द्वंद्व देखल जा सकत बा।

तत्कालीन परिवेश के प्रभावो भोजपुरी कहानी–साहित्य में प्रेम कहानी के कमी के वजह हो सकत बा। दरअसल भोजपुरी कहानी के हर दौर में रचनाकारन के सामने व्यक्ति आ समष्टि के बीच उभरे वाला क्रिटिकल सम्बन्धन के महाजाल रहे, जेकर रेशा समाज के साथे–साथे धर्म, राजनीति, अर्थ लोकाचार आ लोक–व्यवहार से बनत रहे। जातिगत, वर्गगत आ अर्थगत विभेद त पनकते जात रहे, राजनीति आ नेति दूनो के बंटाधार होखे शुरू हो गइल रहे। धर्म आडंबर, शोषण आ लंपटई के गर्भ–गृह बनत जात रहे। अइसना में, अतना आसान ना रहे कि युगीन परिवेश के गुरुत्वाकर्षण के तूर के प्रेम कहानी रचाव। जे रचल, ओकर उतजोग बेशकीमती रहल। ओकर रचनो साधारण त नाहिंए रहल।

'भैरवी के साज' (ईश्वर चन्द्र सिन्हा), 'केकरा पर करब सिंगार' (रामवृक्ष राय 'विधुर')[13], 'अलबम' (ऋषीश्वर), 'बाजल बैरनि रे बाँसुरिया' (गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश')[14], 'लाल निशान' (बिन्दु सिन्हा), 'कुजतिहा' (नरेन्द्र शास्त्री), 'काहे कहनी कि आएब' (रमाशंकर श्रीवास्तव), 'जाए कि बेरिया' (प्रेमशीला शुक्ल), 'कबहूँ न नाथ नींद भर सोयो' (कमलाकर त्रिपाठी)[15], 'हम जरूर आइबि' (गदाधर सिंह) आदि रचना श्रेष्ठ प्रेम कहानी हई स – भाषा, भाव, कथ्य, प्रस्तुति आ ट्रीटमेन्ट – हर स्तर–कोन के लेहाज से 'गिरिजेश' के कहानी जरूर कुछ–कुछ फिल्मी हो

गइलि बा – चाहे राधा बाई के उपेक्षा से मदन साहु के मानसिक आघात आ उनके गीत सुनावते तुरत स्वास्थ्य–लाभ के बात होखे चाहे मदन के प्रताड़ना–उपेक्षा से राधा बाई के जहर पी लिहल – ई सब आ कहानी के ट्रीटमेन्टो 'मेलोड्रैमेटिक' हो गइल बा। मदन साहु के पगलइलो के ठोस आधार ना होखला से ऊ अस्वाभाविक लागत बा।

परदुःख–कातरता, जीवंतता आ उन्मुक्त हास्य भोजपुरी लोक–जीवन के हिगरावे वाला लक्षण ह आ एकरा से भोजपुरी कहानी भरल–पूरल बिया।

यद्यपि सामाजिक सोच आ संरचना में होत छीजन आरी–डँड़ारी सुसुके खातिर छोड़ दिहल गइल बाड़ें, तबो भोजपुरिया समाज आ ओकरा साहित्य में कूल्हि जबून के बादो इंसानियत के प्रेमिल हाथ पकड़े वाला व्यक्ति आ ओके सृजन के धार बनावे वाला साहित्यकार मौजूद बा। **डॉ0 अशोक द्विवेदी के 'सकून'[16], 'निस्तार'[17] आ कन्हैया पाण्डेय के 'सुख'[18]** अइसने कहानी हई स, जेमे भोजपुरी लोक के ई विशिष्ट छवि उरेहल गइल बा। कन्हैया पाण्डेय के 'सुख' यथार्थ से विलग होके आदर्श का ओर झुक जात बा, जब माधो के मिल से बोलावा आवत बा आ ऊ बूढ़ महतारी आ बियहे जोग बहिन रंजू के दुःख–तकलीफ में छोड़ के शहर प्रस्थान करत बाड़े। बाकी अचके नाटकीय रूप से मिलल संवेदनशील हीत के व्यवहार के कारन मंजू के बिआह बड़ा सुंदर ढंग से सम्पन्न होता। माधो का माई खातिर अचके मिलल ई 'सुख' कवनो दोसर 'सुख' से बड़हन बा।

द्विवेदी जी का 'निस्तार' में कन्हई मिसिर के बेटी सिलवा के बिआह मिसिर के लइकँइए के परम मित्र बलभदर के मास्टर लइका से होत बा आ मिसिर गरीबी के मार, अपना लइकन आ पतोह के प्रताड़ना आ थलिआइल बुढ़ौती के बादो जब मूअत बाड़े तऽ उनकर अस्तित्व सच्चाई, स्वाभिमान आ नेह के अँजोर से दिप्–दिप् बरत लउकत बा। बलभदर जइसन आ खुद कन्हई मिसिर जइसन चरित्र आज सहज सुलभ नइखे बाकिर लेखकीय कौशल एह दुर्लभ यथार्थवादी चरित्रन के सहज लभ्य प्रेरक आ मनभावन बना देले बा। 'सकून' में एगो क्लर्क कर्ज के पइसा से अपना चपरासी के महतारी के दवाई करवावत बा आ जरूरी काम खातिर ओकरा के कुछ रुपयो देत बा। ऑफिस के माहौल ओह ईमानदार क्लर्क खातिर नीक ना रहला के बावजूद आ ओकर अपना खुद के लइका के बेमार भइला के बावजूद ओकरा सुख–शांति आ सकून मिलत बा कि ऊ केहू के कामे आ सकल। ओकर मेहरारूओ ओकर सच्ची सहधर्मिणी बिया।

'सच के सोर पाताल में' (मिथिलेश्वर)[19], 'बड़प्पन' (चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह)[20], 'मूड़ी गड़ाइले रही' (अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी')[21], 'दुलहा के दहेज' (सिपाही सिंह श्रीमन्त)[22], 'मरजादा' (राजवल्लभ सिंह)[23] आदि कहानी आदमियत के सरोकार के कहानी हई स।

डॉ0 मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध', डॉ0 विजय बलियाटिक, रामजी पाण्डेय 'अकेला' आदि कहानीकार हास्य–व्यंग्य के माध्यम से भोजपुरी लोक के मन–मिजाज आ भावबोध के उरेहे के जतन कइले बा।'बेसुध' के स्थान शेष दूनो जाना से ऊपर बा।

आधुनिकता

आधुनिकता परंपरा के विरोध में ना होके, परंपरा के सड़ल–गलल रूढ़ियन, अंध–विश्वास ढकोसलन आ मानवतावाद के खिलाफ कइल जा रहल वृत्तियन आ आचरणन से मुठभेड़ करेके हियाव के नाँव ह, जेकरा में नवीनता आ सामाजिक–बोध खुद ब खुद समा जाला, स्वतः अनुस्यूत हो जाला। आधुनिकता में वैज्ञानिक सोंच–समझ आ तद्नुसार आचरण कइल आवश्यक हो जाला। आधुनिकता होखे के मतलब कवनो तरह के ग्रन्धि से मुक्त होके जीवन जे तरी से बा, ओह तरी से जीए के ललक होखल होला, बाकिर दुर्भाग्य से आधुनिकता के मतलब दोहरा चरित्र आ स्वार्थपरता के साथे यौन स्वच्छन्दता समझल जात बा। ई सुखद बा कि भोजपुरी कहानी में आधुनिकता पंरपरा के विकास के रूप में आइल बा,

हिंदी कहानी अस पंरपरा के राख से पनकल कवनो अपशिष्ट के रूप में ना। इहे कारण बा कि समूच भोजपुरी कहानी साहित्य में कृष्ण बलदेव वैद के कहानी 'दूसरे का बिस्तर'[24] जइसन कहानी के कथ्य आ संवेदना एकदम ना मिली। अत्यन्त सजग आ हिंदी आ भोजपुरी दूनो भाषा में समान तीव्रता आ तरंगदैर्ध्य से लिखे वाला डॉ0 रामदेव शुक्लो के भोजपुरी कहानियन में एह तरह के भावबोध ना मिली, जइसन 'दूसरे का बिस्तर' में बा यद्यपि डॉ0 शुक्ल पुरुष आ नारी सम्बन्धन के गहिर पारखी आ ओकरा बारीकियन के मुखर उद्गाता हवन। कारण, शुक्ल जी मनुष्य के मनुष्यता के पैरोकार हवन, ओकरा सेक्स द्वारा चुनल सरोकार के प्रचारक ना।

'दूसरे का बिस्तर' कहानी में नायिका बिया सिन्थिया, जेकर बिआह हो गइल बा आ ओकरा एगो लइकियो बिया। बिनोद सिन्थिया के दोस्त बा। दूनों एकांता में मिलल चाहत बाड़े सऽ, बाकिर घात नइखे लागत। एक दिन सिन्थिया के मदर आ ओकर बेटी कुछ देर खातिर बाहर जात बाड़े लोग, त सिन्थिया बिनोद के बोलावत बिया आ अनंग–रंग में डूब जात बिया। मस्ती आ तृप्ति आ बिदाई के संगे सिन्थिया विनोद के फोन पर बात करेके वादा करत बिया। देखे लायक ई बा कि दूनों में से कवनो के कवनो पाप आ अपराध नइखे बुझात। बलदेव वैद के एगो दोसर कहानी 'त्रिकोण' में त पति अपना मेहरारू के अपना एगो दोस्त (पति के दोस्त) के संगे मस्ती करत देख लेत बा, तबो कुछ नइखे कहत। ऊहो दूनों ई जानऽतारें स कि पति उहनी के देखत बा, तबो उहनी के मस्त बाड़े स। तीनों अपना–अपना में मस्त अपना दृष्टि से पूर्णता के खोज के आनंद लेत बाड़े स।

भोजपुरी कहानी **'हम कुन्ती ना हईं'** में सशक्त ढँग से आधुनिकता बोध उभरल बा, जब कान्ती अपना (तथाकथित) नजायज पेट से उत्पन्न लइका के मरवा के सल्तंत होखे आ घर–परिवार के इज्जत बचावे से इंकार कर देत बिया। लोग बिहँसत मजमा से उठत बा कि 'भोर होखे का पहिलहीं' काम तमाम क के कान्ती के पवित्तर बना दिआई! तब कवना के बाप के मजाल होखी कि अँगुरी उठाई!

बाकिर काम तमाम करे वाला लोग खोजत रह गइल। ना लइका मिलल ना लरकोरिए। मिलल एगो छूँछ चिट्ठी – 'हम कुन्ती ना हईं' ।[25]

डॉ0 अशोक द्विवेदी, डॉ0 रामदेव शुक्ल, सुरेश कांटक, बरमेश्वर सिंह, जितेन्द्र कुमार, विनय बिहारी सिंह, सुमन कुमार सिंह, तैयब हुसैन पीड़ित, प्रो0 ब्रजकिशोर, भगवती प्रसाद द्विवेदी, कृष्णानंद कृष्ण, प्रकाश उदय, जइसन सुधी कहानीकारन के कहानियन में आधुनिक युगबोध व्यक्त भइल बा। अशोक द्विवेदी के कहानियन में जहाँ युग के दबाव आदमियत पर कबो भारी नइखे हो पावत, ओहिजे अन्य कहानीकार युग के चाल के, जइसन ऊ बा, ओइसहीं अधिकांश चले देबे खातिर सुतंत्र छोड़ देले बा लोग। यथार्थ के दबाव आ अंकन त हर जगह बा, दृष्टि के स्पष्टतो बा, अंतर बा त सत्य के देखे, समझे आ कहे के निजी ढँग में। अशोक द्विवेदी के कहानियन में समय के साँच के साथे सार्वभौमो साँच गुहाइल रहेला, एह से ऊ उगे वाला सूर्य के साँच जइसन सहाउर गुलाबी होला, मध्य भभाउर दुपहरिआ के दँवकत आँच अस ना।

'वर्ग–संघर्ष के नाँव पर, विद्वेष के जातीय जहर के जलन आ ओकरा टभकन के' महसूस करे वाला निश्छल–निर्दोष लोगन के व्यथा के उकेरत **अशोक द्विवेदी** के कहानी **'अकेल हंस रोवेला ए राम'** एह तथ्य के प्रत्यक्ष प्रमान बिया। ई कहानी 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के दुसरका कहानी विशेषांक (अंक14 / पृ0सं0 76–92) में प्रकाशित भइल रहे आ बाद में 'आवऽ लवटि चलीं जा!' (2000) में संग्रहीत। एह कहानी के माध्यम से कहानीकार छोट–बड़ आ जाति के आधार पर बँटाइल लोगन के वैचारिक अतिवादिता का बीच रहे वाला सोहिया भलमानस लोगन के व्यथा उकेरत, इरिखा–द्वेष आ वर्ग–संघर्ष का नाँव पर हो रहल मार–काट के भीतरी विसंगतियन के उजागर करे के साथे–साथ मानवी प्रेम के संदेश

देबे में सफल रहत बा।

भगवती प्रसाद द्विवेदी के कहानी 'ठेंगा' आ तैयब हुसैन 'पीड़ित' के 'लाश के आस–पास' भोजपुरी कहानी के विषय–विस्तार के रूप में देखल जा सकेला।[26] 'लाश के आस–पास' कहानी में एगो बूढ़ मेहरारू के मुख्य पात्र के रूप में खाड़ क के लेखक एगो रेल–दुर्घटना के केन्द्र में राख के समाज, सरकार आ व्यक्ति (जेकरा में रकत, मांस, जान, घृणा आ प्रेम होला, कहल जाला) के उदासीनता, कर्त्तव्यहीनता, अपराध–वृत्ति आ संवेदना के छिदिर–बिदिर होखे के जइसे साँचे सोझा रख देत बा। 'ठेंगा' हिजड़न के दुःख आ शोषण के करुण–गाथा ह। **प्रकाश उदय के 'कथा सतनरैना के अठवाँ अध्याय'** उपन्यासी फलक पर एगो काल–खंड के कथा ह, जेमे जय प्रकाश आन्दोलन के फलस्वरूप केन्द्र में आसीन नया सरकार के बाद के शक्ति, सत्ता आ समाज के बने–बिगड़े वाला सम्बन्धन आ समीकरणन के तटस्थ उरेह भइल बा। एह कहानी में गाँव आ देश के अंतर–सम्बन्धन के एगो लेखा–जोखा, जइसे प्रस्तुत भइल बा।

भोजपुरी कहानी के क्षेत्र में सुधा वर्मा, उषा वर्मा, प्रेमशीला शुक्ल, किरण श्रीवास्तव, सीमा स्वधा, सीमा सुमन जइसन नारी–कहानीकार लोगन के योगदान कमतर नइखे बाकिर एहिजा नारी–विमर्श जइसन कवनो तथाकथित आन्दोलन नइखे। ई जरूर बा कि कवनो विषय पर नारी आ पुरुष के लिखलका में अंतर हो जाता बाकिर ऊ अंतर समूहगत ना होके व्यक्तिगत बा आ दृष्टि आ संवेदना के अलग–अलग आयाम के वजह से बा।

परिवार सामूहिक जीवन के सबसे छोट इकाई ह आ पारिवारिक स्तर पर विघटन, देश के स्तर पर विघटन के संकेतित करेला। **सुमन कुमार सिंह के कहानी 'ट्रैक्टर'[27]** पारिवारिक बिखराव के सूचित करत बा, खासकर चढ़बाँक मेहरारू के मानसिक प्रताड़ना में पिसात ओह पुरुष के बिथा के दरसावत बा, जे परिवार में सबके सुख–चैन के कामना करत ओह खातिर जतनो करत बा, बाकिर ऊ कुछुओ करत बा – ओकर मेहरारू संतुष्ट–खुश नइखी होत आ बेर–बेर खोभस के ओकर प्रेमिल उत्साह के तँवा देत बिया।

सुरेश कांटक के 'अँजोरिया के पीछे'[28] कहानी में चुनाव करावे जाये वाला कर्मचारी लोगन के कठिनाई के व्यंग्य–परक बाकिर मार्मिक अभिव्यक्ति भइल बा। जितेन्द्र कुमार के आधुनिकता आँखी देखी आ मने भोगी आधुनिकता ह, जे उनकरा कहानियन में बहुते तटस्थ रूप से व्यक्त भइल बा। जितेन्द्र कुमार जहाँ जिनगी में अपनहूँ उपस्थित बाड़े, ओकर वर्णन अइसे करेले, जइसे ऊ रहबे ना कइले आ कथा के भोक्ता कवनो थर्ड परसन रहे, ओहिजे चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह अपना कहानियन में अइसे ठुंसा जाले, जइसे भीड़ भरल रेल के डब्बा में बकरी। चौधरी साहेब के आधुनिक बोध स्व–निर्मित आत्मबोध से आगा ना हेल पावे। वस्तु के व्यापकता के बावजूद, समय के दशा–दिशा के समझ के बावजूद, विषयान्तर आ कबो–कबो विचारगत उजबुजाहट के वजह से, इनकरा कहानियन में, मूल वस्तु में कई दोसर वस्तु मिल के, कथा–प्रवाह आ प्रभाव के मधिमाह क देली स। 'बड़प्पन' कहानी एकर अपवाद बा।

जितेन्द्र कुमार के 'कलिकाल'[29], 'परिवेश'[30], 'ठग'[31], 'कींचड़'[32] आदि कहानी भोजपुरी के पत्रिकन में अइली हा सऽ आ विषय के सामयिकता आ युगबोध के सार्थक उरेह के वजह से चर्चित भइली हा स। 'कलिकाल' में पारिवारिक स्वार्थ, नोंच–चोंथ–हड़प आ मउअत के कथा बा, त 'परिवेश' में प्राइवेट स्कूलन के चउतरफा शोषण के। 'ठग' में दहेज के लोभ आ ओकर परिणति बा आ 'कीचड़' में अवैध प्रेम के व्यक्ति, परिवार आ परिवेश पर पड़त प्रभावन के जिअतार अभिव्यक्ति। जितेन्द्र कुमार के कहनाम बा – 'जवन कथाकार समाज खातिर ना सोची, ओह कथाकार के बारे में समाज काहें सोची?'[33]

आधुनिक भोजपुरी जीवन के सड़ाँध के जतना वस्तुपरक चित्रण **बरमेश्वर सिंह** अपना कहानियन में कइले बाड़ें, ऊ समझल जा सकता बा। समाज आ व्यक्ति, समाज आ जाति, जाति आ वर्ग, जाति, समाज

आ राजनीति के अंतरसंबंधन में कुटात–पिसात आम जन के दुःख–दर्द के कबो व्यंग्य के माध्यम से तऽ कबो आक्रोश के माध्यम से जइसन जिअतार उरेह श्री सिंह कइले बाड़ें ऊ भोजपुरी के आधुनिक कहानी के प्रति एगो आश्वस्ति–भाव जगावत बा। 'जोजना'34 नाँव के इनका कहानी के आरंभ आ अंत व्यंग्य में होत बा आ बीच में समरथ लोगन के भ्रष्टई के लाइव रिपोर्टिंग। ई कहानी रिपोर्ताज शैली में लूट आ कचरमकुट के एगो दीठगर झलक प्रस्तुत करत बिया। विश्व बैंक से चलल 'जोजना' वाया राजधानी गाँवे पहुँचत बिया आ मुसहरन के दू–दू हजार के बदले दू–दू सइ दिआके, मुखिया से लगाइत बी.डी.ओ., बैंक मैनेजर, दारोगा – सब छोटकी–बड़की मछरिन के 'दाना' खिया के स्वाहा हो जात बिया। मुसहर ताड़ी पी के मस्त हो जा तारे स आ बूढ़ बाप के दवाई, मेहरारू के लूगा, लइकी के फ्रॉक के माँग हेरा के सरकारी किरिपा के बड़ग्गी हाँके में रम जा तारे स। मुखिया जी के दुआरी जवन 'हाई–प्रोफाइल पार्टी' जमत बा ऊ 'जोजना' के सफलता के उद्घोषणा के साथे भारतीय जनतंत्र के ताबूत में एगो अउरी खपचाल ठोंक के, सत्ता के विकेन्द्रकरण के नाटक के पराभव के मेष–रूदन सुना देत बिया।

सारांश

स्पष्ट बा, भोजपुरी कहानी भोजपुरी–लोक के भाव–बोध के प्रतिबिंब के रूप में परंपरा, आधुनिकता, आ उहनी के भल–अनभल के उरेह करे में सक्षम रहत बिया। यद्यपि इहँवां अन्य भारतीय भाषा सब में आ हिंदी में घूमगज्जर मचावल नारी–विमर्श आ दलित–विमर्श ओह रूप में नइखे चरचराइल, जइसन एह भाषा सब में भइल बा, तबो नारी आ दलित भोजपुरी कहानियन में आधुनिक बोध के अनुरूप आइल बाड़े। **उषा वर्मा के 'लाइची'[35], आशा रानी लाल के 'सितली'[36] आ प्रेमशीला शुक्ल के 'पियासल पंडुक'[37] आ 'जाये कि बेरिया' में कवनो–ना–कवनो रूप में नारिए–व्यथा चित्रित भइल बा।** सेक्स के तेजाबी उन्मुक्तता इहँवा अप्राप्य बा। डॉ0 रामचन्द्र के 'बदलाव'[38] आ **डॉ0 शत्रुघ्न कुमार के 'दादी अम्मा के उत्तर'[39] में दलित–विमर्श** के विचारगत तत्व पइसल बाड़े स।

संदर्भ सूची

1. जेहल कऽ सनदि, पृ0 95।
2. अमरकथा : प्रथम संस्करण, 2012 ई0, भोजपुरी संस्थान, 3/9, इन्द्रपुरी, पटना, पृ0– 128–134।
3. जेहल कऽ सनदि, पृ0 95।
4. खरोंच, भोजपुरी संस्थान, पटना संस्करण, 1984, पृ0 13।
5. सेसर कहानी भोजपुरी के, पृ0 48।
6. 'पाती' प्रकाशन–47, टैगोर नगर, बलिया, संस्करण 2002।
7. ठेंगा, किताब पब्लिकेशन, मुजफ्फरपुर, 2009, पृ0 18–22।
8. पाण्डेय सुरेन्द्र, मुक्ति : जीये–मरे के बेबसी, पृ0– 45।
9. ऋषीश्वर : अलबम : सेसर कहानी भोजपुर के, पृ0 237–238।
10. कृष्ण कुमार, अढ़ाई कोस : बरमूदा त्रिकोन, सावित्री शिक्षा सदन, करमन टोला, आरा, पृ0 6–7।
11. अशोक द्विवेदी, सुखल बब्बुर, आवऽ लवटि चलीं जा!, भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना, पृ0 92।
12. अमरकथा, भोजपुरी संस्थान, 3/9, इन्द्रपुरी, पटना, पृ0 82।
13. समकालीन भोजपुरी साहित्य (धरोहर अंक), अंक 26, 2007, पृ0 13–15।

14. सेसर कहानी भोजपुरी के, संपादक – प्रो0 ब्रजकिशोर, पृ0 98–104।
15. समकालीन भोजपुरी साहित्य, अंक 7–8, संयुक्तांक, जनवरी–जून, 1998, पृ0 16–20।
16. 'पाती' 30–31, संयुक्तांक (कथा विशेषांक), दिसंबर, 1999, पृ0 92–100।
17. 'गाँव के भीतर गाँव', भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना, 1998, पृ0 98–118।
18. मिरजई, 'पाती' प्रकाशन, बलिया, पृ0 19–23।
19. समकालीन भोजपुरी साहित्य, अंक 14, (कहानी विशेषांक), पृ0 28–33।
20. बड़प्पन, मधु प्रकाशन, नोनार, भोजपुर, पृ0 1–6।
21. डागा बाजि गइल, अतुत बन्धु, शिवाजी पथ, यारपुर, पटना, पृ0 20–24।
22. सेसर कहानी भोजपुरी के, पृ0 57–65।
23. उहे, पृ0 285–287।
24. मेरा दुश्मन ("दूसरे के बिस्तर पर") कृष्ण बलदेव बैद।
25. हम कुन्ती ना हंई, भोजपुरी संस्थान, पटना, 1977, पृ0 19।
26. डॉ0 बलभद्र, भोजपुरी कहानी के फिलहाल, 'समकालीन भोजपुरी साहित्य', अंक 23, 2006, पृ0 106।
27. 'पाती' 30–31 (संयुक्तांक), दिसंबर, 1999, पृ0 88–91।
28. 'पाती' 30–31 (संयुक्तांक), दिसंबर, 1999, पृ0 65–76।
29. गुलाब के काँट, अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, 2011, पृ0 83–91।
30. उहे, पृ0 13–18।
31. उहे, पृ0 92–102।
32. उहे, पृ0 60–70।
33. उहे, भूमिका।
34. अमरकथा, भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना–24, पृ0 51–56।
35. 'लाइची', भोजपुरी संस्थान, पटना, पृ0 33–35।
36. 'पाती', अंक 51–52, सितंबर, 2008, पृ0 102–105।
37. समकालीन भोजपुरी साहित्य, अंक 4, 1997, पृ0 101–104।
38. 'पाती', अंक 60, मार्च–जून, 2011, पृ0 4–6।
39. भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, जुलाई–अगस्त, 2009, पृ0 8–16।

उत्सव कार्ड/पुस्तक आदि के
उत्कृष्ट अक्षर संयोजन के (कंपोजिंग) के लिए
कम्प्यूटर्स प्वाइण्ट
नारायणी तिराहा, भृगु आश्रम, बलिया, मो0- 9415860896

कहानी

केकरा के कोसीं ?

❑ अतुल मोहन प्रसाद

छुट्टी के दरखास दिया गइल का ? दू महीना समय रह गइल बा। तबकी बिआह में जाये घरी वाला लफड़ा ना लाग जाय, एहू बेरी हमरा इआद पड़ल–

लगन–पताई के दिन रहे। हम का जानत रहीं हरेक स्टाफ के नाता रिश्ता में शादी पड़ गइल बा। जब हम छुट्टी के दरखास लेके मैनेजर साहब के पास पहुंचली तब पता चलल हमार प्रभार लेबे वाला कोई नइखे। अइसहूं बैंक में चाभी वाला क चार्ज लेबे वाला बहुत कमे मिलेलन।

"चाभी रउरे पास नू बा। जब केहू प्रभार लिही तबे न रउरा छुट्टी मिली ?" मेहरारू हमरा पर तगादा बनवली।

"हँ ! सोचत बानी। छुट्टी के दरखास दे दीं। हेड आफिसे से छुट्टी मंजूर होके आवो। कम से कम एहिजा के मैनेजर के सिफारिस त ना करे के पड़ी।– हम कहली।"

आफिस जाते सबसे पहिलका काम छुट्टी के दरखास लेके मैनेजर साहब के पास पहुंचली।

"अरे ! अबे त रउरा छुट्टी जाये में दू महीना के देरी बा। अतना पहिले दरखास..."–छुट्टी के दरखास देखत साहब पूछलन।

"ओह बेर हमरा भतीजी के बिआह में जाये खातिर छुट्टी ना मिलल रहे। एह से पहिलहीं दरखास देत बानी ताकि हेड आफिस से स्वीकृत होके छुट्टी आ जाव। रउवो कवनो परेशानी ना होखे।"

"हमरा रहते, रउरा छुट्टी के कवनो परेशानी ना होई। छुट्टी जाये के एक हफ्ता पहिले दरखास देब। ओह बेर त हम ना रहीं नू?"

"ना रउवा त ना रहीं, बाकिर व्यवस्था त एकही नू चलेला ?"

"हमरा प विश्वास करीं। जाईं काम करी।"

हम साहब के चेम्बर से निकल के अपना टेबुल पर आके काम करे लगली। रात घरे अइली त मेहरारू से साहब के साथ भइल बात बतवनी। साहब नीक आदमी बानी। कहले हा, हमरा समय कवनो स्टाफ के छुट्टी के दिक्कत ना होखी।

गते–गते समय बीते लागल। बिआह के दिन नियराये लागल। दस दिन बाँच गइल रहे त मेहरारू फेनु इयाद पड़वली – "दरखास दे देनीं ?"

"अबे ना! अब दे देब।"

ठीक एक हफ्ता बाकी रहे तब हम आपन दरखास लेके साहब के चेम्बर में गइलीं–

"सर! अब बिआह के दिन एकदम नजदीका गइल बा। एह से दरखास ले आइल बानी।"

"ठीक बा ! दे दीं।"

"एही तारीख में त लेखपालो साहब के छुट्टी में जाये के बा। उनका कवनो बिआह में जायेके बा।"–दरखास देखत साहब कहलन– "एके संगे.... अच्छा कवनो बात नइखे। हम व्यवस्था कर देब। बाकिर एगो शर्त बा।"

"अब का ? – हम शंका से घेरा गइली।"

"एही समय में आडिटर के आवे के चर्चा हेडआफिस में सुने में आइल बा। हम राउर छुट्टी स्वीकृत कर देत बानी बाकिर यदि आडिट आ जाई त हम केहूके छुट्टी देबे में असमर्थ हो जाइब।"– दरखास पर

छुट्टी स्वीकृत करत मैनेजर साहब कहलीं।ऐहू बेर हमरा के छुट्टी ना मिली। एकर शंका हमरा मन में घर करे लागल। रात में घर अइलीं तब मेहरारू से छुट्टी पर बात भइल।

"एही से हम दू महीना पहिले दरखास देबे के कहत रहीं। मैनेजर लोगन के उनका छुट्टी के जरूरत होई त गते से निकल जाई लोग। दोसरा स्टाफ के छुट्टी देत छींक आवेला। लंका में जे रहेला, सब रावण हो जाला।"– अपना बहिन के बेटी के बिआह में जाये में आवे वाला विघिन देखत मेहरारू कहली।

"बात त तू सोरह आना ठीक कहत बाड़ू।"– गते से हम कहलीं।

छुट्टी में जाये के दू दिन पहिले आडिट आ गइल। हम फेनु मैनेजर साहब से भेंट कइली। मैनेजर साहब हमरा के देखत कहलीं– "अब हम कुछ नइखीं कर सकत। रउवा अपना भाग के कोसीं। राउर भागे खराब बा त हम का करीं ? लेखापालो के छुट्टी रद्द होई।"

छुट्टी ना मिलला के जगह पर हम अपना के मानसिक रूप से तइयार करे लगलीं। दिनभर आफिस में मन ना लागल। एकाध गाँहक से बाताबाती भइल। रात में घरे आके साहेब के निर्णय के जानकारी आ आडिट अइला के जिक्र कइलीं। बिआह में मेहरारू अउर लइकन के अलग से जाये के व्यवस्था पर बिचार भइल। योजना बनल। मेहरारू मैनेजर अउर आडिटर के भला बुरा कहली।

दुसरका दिन आफिस पहुँचते लेखापाल महोदय से भेंट भइल। उनका चेहरा पर खुशी दमकत रहे। मालूम भइल लेखापाल महोदय के छुट्टी मिल गइल बा। उनकर चार्ज लेवे के व्यवस्था हो रहल बा। हम भीतरे–भीतर जल–भुन गइलीं बाकिर चुप रहलीं – चलऽ एगो स्टाफ के त छुट्टी मिलल। सांझ के जब आडिटर साहब ब्रांच से निकललन त मैनेजर साहब के चेम्बर में घुसते हम पुछलीं– "अब हम केकरा के कोसीं ?"– ब्रांच मैनेजर साहब चेहरा ऊपर उठवलीं, बाकिर उनका मुंह से बकार ना निकलल। ●●●

लघु–कथा

हरदी–नीम

❑ **राजगुप्त**

एक दिन, जब सुनलीं कि अमेरिका नीम आ हरदी पर आपन अधिकार (पेटेन्ट) जमावे खातिर भारत से बरजोरी करऽता त हमहूँ नीम हरदी के महातम के बारे में सोचे बिचारे लगली। अनका धन पर अधिकार जमावे खातिर गाँव जवार में ना जाने केतना मार फउदारी आ मोकदिमा देखले रहलीं। ओइसहीं हमरा बुझाइल कि आन का धन पर कनवा राजा बनि के दोसर केहू फायदा उठा सकेला, त हम अपने चीजु के काहे ना अपनाईं ? एम्मे ढेर गुन बा, तब्बे नऽ बड़ बढ़ुआ अमेरिका हाथ धोके नीम–हरदी के पाछा पड़ल बा। एतना सोचि के हमरो दाढ़ी में खरिका अटकि गइल। तहिये से होत फजिरे नीम के दतुवन करे लगलीं आ चाय छोड़ि हरदी–दूध पीये लगलीं। जइसे ईस्ट इंडिया कम्पनी भारत के लूटि के राजा हो गइल, हमहूँ नीम हरदी के सेवन क के दारा सिंह के सोझा ताल ठोंके लायक हो गइलीं।

एक दिन हमरा के सनेसा मिलल कि हमार इयार अमरनाथ बहुते घाही हो गइल बाड़े। अपना दोस्त दीना बाबू के साथे हम अमरनाथ के गाँवे पुछारि करे खातिर चोहँपली। अमरनाथ के दुआरि पर बड़ी भीड़ि लागल रहे। गाँव के लोगन से सवचलीं। "का बाति ह भाई ? कइसन भीड़ि लागल बा ?"

एक जाना बूढ़ बतवले, 'पट्टीदारी के झगड़ा रगड़ा, कबो सुलझेला ना। बाबा दादा के जमाना से अमरनाथ के दुआरि पर उनका सहन में नीम के फेड़ बा। बाकिर झूर से झगड़ा करे खातिर पट्टीदार नीम के डारि बेरि–बागर अन्हे में काटि लेत रहलें। आजु अमरनाथ के सोझहीं नीम के डाढ़ि काटे लगले हऽ त अमरनाथ बरिजले हा। पट्टीदार सवँगर बाड़े स। खुनुस निकाले खातिर मारि के घाही कई देले बाड़े स। बेचारू के हरदी–दूध पीये के पड़ी। जग जाहिर बा, 'जेकर लाठी ओकर भँइँसि'। अपने चीजु के रच्छा खातिर बरियार भइल जरूरी बा। हम सोचलीं... 'त का, अमेरिका बरियार भइला का जोरे हमनी क नीम हरदी अपना नाँवें पेटेन्ट करा लीही ?' ●●●

लघु–कथा

जरूरी काम करावे वाला आदमी

❑ विनोद द्विवेदी

हमरा छोट भाई के जमानत मंजूर करे से पहिले, जज; जमानतदार के मकान का सत्यापन खातिर, 'नगर निगम' का दफ्तर में कागज भेजे के आडर कइलस। काम जल्दी हो जाव, एहसे हम कचहरी में बाबू से ऊ कागज दस्ती ले लिहलीं आ ओके सत्यापित करावे नगर निगम का दफ्तर पहुँचलीं। उहाँ दफ्तर प्रमुख बोलल, 'थोरकी देर में बाबू आ जाई, रउवा बइठि के इन्तजार करीं।' ऊ जवना टेबुल का ओर इशारा कइलस उहाँ जाके बइठ गइलीं। मन उबियाए लागल बइठल–बइठल। घंटा भर बाद एगो आदमी थाकल माँदल नियर आइल आ कुरुसी पर बइठते आँखि मूनि लिहलस। "भइया, हई मकान के कागज सत्यापित करे के बा, कमवा जल्दी हो जाई त हम कचहरी एही बेरा जमा क देतीं, भाई के जमानत हो जाइत।" हम ओसे निहोरा कइली। जब ऊ आँखि ना खोललस त हम फेरू आपन बात दोहरवलीं। "हम बहिर थोरे बानी, कि बेर–बेर एकहीं बतिया दोहरावत बाड़ऽ।" ऊ आँख मुनले बड़ा इतमीनान से बोलल। पन्द्रह बीस मिनट का चुप्पी का बाद, हमसे ना रहाइल, हम फेरू निहोरा कइलीं, बाकिर ऊ अनसुन पटाइल रहे। अतने में एगो मैडम कुछ फाइल लेले अइली आ कुरुसी का दुसरा ओर धइल कुरुसी पर बइठि गइली। फेर ऊ एगो फाइल खोलली आ ओमे आँख गड़ा लिहली। हम आपन बात फेरू कहे सुरू कइनी, त पहिलका अदिमिया आपन अँगुरी से मैडम का ओरी इशारा कइलस। "देखीं हम घंटन से हई मकान क कागज सत्यापन खातिर बइठल बानी, तनी हई देख लीं।" हम कागज मैडम का ओर सरकवलीं।

–'देखते नहीं, मैं काम कर रही हूँ। इससे भी जरूरी और इंपार्टमेंट है। तीनों फाइल निपटाने के बाद ही कुछ होगा।' ऊ टेढ़ुवाइल बोलली। हम खीस पीयत फेर कुछ देर इन्तजार कइनी। ऊ आदमी हमार मनोदशा बुझला बूझि गइल। हाथ का अँगुठा आ अँगुरी से इशारा कइलस, हमरा तुरंते समझ में आइल। हम सौ–सौ क दू गो नोट निकाल के अपना कागज पर धइनी आ मैडम का ओर सरकावत विनती कइलीं, 'ईहो कमवाँ जरूरिये बा मैडम।' मैडम आपन जरूरी फाइल बन क के, एकोर सरका दिहली आ हमार कागज उठा के आलमारी खोलली। एगो रजिस्टर उलटली–पलटली फेर कुछ लिख–पढ़ि के मोहर मरली आ ओह आदमी से साहब क दस्तखत कराके हमरा के देबे के कहलीं।

प्राथमिकता से काम निपटवला खातिर हम मैडम के धन्यवाद देत ओह आदमी का पाछा चल दिहनी। ऊहो बड़ा तत्परता से दस्तखत कराके हमके कागज थमा दिहलस। बुझइबे ना कइल कि ई ऊहे उँघाइल, सूतल अदिमी हऽ। मने–मन हम ओकरा के दिल से धन्यवाद दिहलीं, जवन हमरा के इशारा से, काम करवला के, नया तरीका बतवलस। हम सोचलीं कि हर जरूरी काम, जल्दी से करवला खातिर, हर आफिस का जरूरी काम वाला टेबुल पर अइसना आदमी के नियुक्ति होखे के चाहीं, जेसे लोगन के अतना कीमती समय बर्बाद बा होखो, जइसे हमार बर्बाद भइल।

●●●

झाड़ू के आत्मकथा

हमके हीन मत समझीं

❑ डॉ0 आशारानी लाल

हम अपना बारे में रउवा सभे से कुछ बतावल चाहत रहीं। कुछे नाहीं, बहुत कुछ बतइतीं, चाहें भर जिनगी के कहनी कहतीं, बाकी का कहीं – अपन नउँवें बतावत के नऽ हमरा लाज घेर लेले बा। सोचतानी कि हमार नउँवा सुनिये के लोग अपन नाक–मुँह कुल बिचकावे लागी, चाहे एने–ओने घुमा के लोग लागी कहे कि तोहरा के, के नइखे जानत ?

अइसे त हमार निवास हर घर में रहबे करेला, काहे कि हमरा बिना केहू रहिए ना सके। हम ना रहब तऽ सब जगहा माछी भिनभिनात रही। कूड़ा–करकट आ गंदगी देखिए के सबका ओकाई आवे लागी, एही चलते सब हमके अपना–अपना घरवे में रखले रहेला। हमहीं सबका घर के साफ–सुथरा करत रहिलाँ। अब त रउवा सभे हमार नाँव बिना बतवले बूझ गइल होखब। हमरा के लोग कइगो नाँव से बोलावेला। केहू हमके झाड़ू कहेला, त केहू बढ़नी, केहू कूँचा कहेला त केहू कूँची आ केहू खरहरा। चाहे कवनो नाँव से हमके केहू पुकारो, हम हर घर में घुस के बइठल–सुतल रहिलाँ। हमके भले केहू हीन बूझो, बाकी हम बड़ा मजिगर धरोहर सब घरन के हँई, एके केहू नकार ना सकेला।

जे निपढ़ आ गूढ़–गँवार होला उहे हमरा देंहिया के रोंवाँ–रोंवाँ के रच–रच के सजावेला आ बनावेला। जवन तरह–तरह के, कई खान के आ कई तरह से बनेला। कहीं हमके मूँज से बनावल जाला तऽ कहीं रसरी, पतलो आ खजूर के पतई से। कहीं–कहीं हमके लोग नरियर के सींक से बनावेला, तऽ केहू लमहर–लमहर घास से। इहे नाहीं जहाँ हमके फूल–झाड़ू कहल जाला ऊहाँ त सचहूँ हमरा देंह से फूल झरत रहेला। अब त हम प्लास्टिको के सींक से बनावल जातानी जवन लाल–पीयर–हरियर तरह–तरह के रंग में बने लागल बा। इहे कुल देख के बड़–बड़ शहरन में हमार कीमतो बड़े–बड़ लागे लागल बा। देहात में न हम बेमोल बिकात रहीं बाकी शहरियन में ई बात नइखे। सभकरा न हमरा से पाला पड़ेला चाहे ऊ धनी हो या गरीब। इ कुल हमार रूप जब गउँवाँ वाला देखेला लोग तऽ कहेला कि अरे ! ई – तऽ बड़ा महँग बिकाता रे, जनती तऽ हमहूँ एक बोझा अपना गउँवें से ले–ले न अवतीं।

हमरा देंह–धजा, रूप–रंग का नाँव के तऽ सभ केहू जानता एह से कि हमरा बिना कवनो घर शोभबे ना करेला। केहू के काम हमरा बिना ना चले तबो लोग हमसे घिनाला, काहे कि जब–जब हमके लोग छुएला तब–तब अपन हाथ धोवेला, जइसे हम अछूत होखीं, कहेला लोग कि झाड़ू न छुअले रहलीं हँऽ। ई बात त ओइसने बा के अन्हरा के देख के अँखियो पिराला आ अन्हरा बिना रहियो ना जाला।

रउवा सभे सुनले होखब की कवनो चीज के ना रहला पर ओकर कीमत सबका बुझाला। जइसे चउका में नून के बिना खाना सून हो जाला ओइसही हमरा बिना घर में आदमी–जन–सर–सवाँग सब भरलो रहलापर घर–घर ना लउकेला। ई कहिके हम अपन बखान कइल नइखीं चाहत बस इहे बतावतानी कि हम बेकार ना हँई। कवनो घर में अगर हम तनी लुका के सुत जाइलाँ तऽ भोर होते लागेला लोग पुछे कि झड़ुवा केने बा रे...., चाहे बढ़निया कहाँ धइल बा। लागेला चारों ओरी हमार खोजाहट होखे, कहेला लोग कि बेर चढ़ गइल आ अभी ले घर में बहारन पड़ल बा। घर में अलियार रही त लछिमीजी के बास कइसे होई रे। ई कुल बात सुनके हमहूँ जाग जाइलाँ आ अपना काम प चल देइलाँ।

हमरा अइला से सब घर में खुशी आ जाला। पूरा घर साफ–सुथरा होके चमके लागेला। इहे कुल

देख के बूढ़–पुरनिया लोग हमके अपना घर के लछिमी कहेला लोग। हमार दोस्ती ओही लोग से ढेर रहेला, काहे कि ऊ लोग हमके अपना निगिचा राखेला। लड़िका–सेयान केहू हमके तनिको तलिया देला चाहे उठाके पटक देला या फेंक देला, तऽ बूढ़ लोग लागेला ओके बोले आ कहे कि अइसे ना करे के हो। साचों हम कहल चाहतानी कि पुरनिया लोग हमार बड़ा इज्जत करेला आ हमके बड़ा जतन से सइहार के धरेला।

उत्तर से दक्खिन आ पूरब से पश्चिम ले सेबेरे उठते हर घर में लोग हमरे के लागेला खोजे। मेहरारू लोग त आँख खोलते पहिले हमही के अपना हाथे में उठावेली आ लागेली अपन पूरा घर दुआर झार बहार के चिकन–चाकन कके घर में घुसल दरिदर के सबेरहीं भगावे। कहेली ओग कि घर में बहारन रही त लछिमी जी के प्रवेश कबो केहू के घरे ना होई। इहे कुल अपन गुन जान के अब हमहूँ कहिलाँ कि– हमहीं न लछिमी जी के सुआगत के राह बनावेलीं। हम ना रहब त दुअरा पर आइयो के ऊ उलटे पाँव लवट जइहन। हमरा एकर नाज बा कि हमरे इशारा पर लछिमीयो जी चलेली।

हम दिन भर घर के सब लोगिन के इशारा पर अपन काम धन्धा करत रहिलाँ, बाकी सुरूज बाबा के डुबते लोग हमके आराम के मोका दे देला। दिन भर के थकान हम सुतिएके बिताइलाँ। साँझे सुत जाइलाँ तऽ भोर होखे से पहिले हमके केहू जगावेला ना। हम खूब पसर के आराम से फों–फों कइके निचिन्ते पह फटला ले सुतत रहिलाँ। लोगवा कहेला कि अगर केहू साँझ भइला पर हमके सुतला में जगाई चाहे हमरा आराम में खलल डाली या झकझोर के झारे–बहारे के कही, तब ओकरा घर से लछिमीए जी भाग जइहन। ऊ घर दरिदर हो जाई, उहाँ मलेछ के राज होई– एही डरे सुरूज बाबा के अलोत होते केहू न–तऽ हमके हिलावे डोलावेला न छुएला।

मेहरारू लोग त हमके अपना जान–परान से बेसी माने–जानेला–काहेंकि हम उन्हन लोगिन के इज्जतो–आबरू के खयाल हरदम राखिलाँ। मेहरारून के इज्जत बड़ा नाजुक होला, तऽ जब ओपर आँच आवेला तब ऊ लोग अपना हाथे में हमरे के उठा लेला आ हम लागिलाँ सोझा आइल विपत के ओसहीं झटकारे आ भगावे जइसे अँजोर–अन्हार के भगावेला। हमरा के देखते कुल कुकर्मी अपन मुँह चोरा के पोंछिटा दबवले भाग जालनसन। इहे बात बा कि मेहरारू लोग अपन रक्षाकवच हमरे के बुझेला आ बाते–बात में कहेला कि– बढ़नी मारो रे, चाहे–बोहार जाव रे।

ई औरत लोग बखूबी हमरा गुन के जानेली आ हमरा के बड़ा चाव से धरेली लोग, काहे कि जब ऊ लोग सितला माई लगे उनके पूजे जाली तऽ देखेली कि माई अपना हाथे में हमरे के लेके बइठल बाड़ी। ई माई सबकर रोग–बलाय के अपना एक नजर से अपना हाथ के झाडू से झार–बहारके दूर भगा देली। एही गुन के चलते हम सब मेहरारू लोगिन के अपन दुलरूवा बन जाइलाँ।

का बताई सब घर में तऽ ना बाकी जवना घर में बूढ़–पुरनिया रहेला लोग–तऽ ऊ लोग हमरो रहे के एगो जगह जरूर बनावेला आ अपना घर के देवता–पित्तर नाही हमरो के लुकवा के धइले रहेला। ई पुरनिए लोग जानेला कि हमरा के सबका सोझा धरे के ना चाँहीं। घर में आवे–जाये वाला लोगिन से हमके लोग बचा के राखेला। जइसे हर घर में मरद–मेहरारू लइका सेयान, जीव–जन्तु, देवता–पित्तर के बसे के एगो निश्चित ठौर–ठिकाना बनावल रहेला ओसहीं हमरो खातिर एगो जगह रहेला। बड़े–बूढ़ जानेला कि अपन–अपन हरवाही कइला के बाद सब थाकेला–तऽ ओसही हम बढ़नी बानी त–का हमहूँ थाक जाइलाँ – एहिसे हमरो आराम के एगो जगह चाँहीं आ ऊ जगह सबका नजर के अलोते रहे के चाँहीं। हम तऽ झाडू–बढ़नी बानी एहीसे हम सबकर लेहाज करींलाँ। हम सबका सोझा न–तऽ सूत पाइलाँ न ओठघें के मन करेला, तबे न अलोते पड़ल रहिलाँ।

कईगो घरन में त लोग हमके जल्दी सुतहीं ना देला, थकला के बादो खड़ा होके रहेके सजा

दे—देला। तब हम का करीं, हमार रग—रग काम करे से बथत रहेला आ फेरू खड़ा भइला से अवरी हमार पीड़ा बढ़ जाला। लोग भुला जाला कि हम लछिमी माई के अंश हईं। माई जब हमार दुःख दर्द आ पीरा देखेली त दुःखी हो जाली। कबो—कबो त माई हमार दुरदसा देख के ओह घर से अपन मुँहो फेर लेली। ई बात जब सब जान जाला तऽ कबो हमके केहू खड़ा होके रहे के ना कहेला, न त कवनो दूसर सजा देला। जवन घर के लोग एह रहस्य के बूझ लेले बा ऊ लोग हमरो रहे के जगह जरूर बनावेला आ हमरा आराम में कवनो खलल कबो ना डालेला। अरे ! हम ई त नइखीं कहत कि केहू हमके फूल—अछ्त आ धूप देखावो, बाकी बस इहे कहब कि थकला पर तनी आराम से सुते के जगह जरूर मिले के चाहीं — इहे हमार मनो होला। एतने करे से हमरो के आराम भेंटाई आ घरहूँ के लोग के सुख—शान्ति मिली आधन—दउलत से लछिमी माई उनकर घर भर दीहन। माई के किरिपा हमरे आराम से सबका भेंटा जाई। लोगो के कहल हम सुनले बानी कि जे हमके खड़ा रहे के सजा देला ओकरा घर में हरदम कलह मचल रहेला, उत्पात होत रहेला — एही सब के चलते हमहूँ हरदम ओठँघिए के रहल चाहिलाँ।

बहुते गरीब भाई—बहिन लोग हमरे सहारे अपन खेवा खरचा चलावेला। कवनो सरकारी आफिस चाहे संस्था में झाड़ू—बहारू आ सफाई करे खातिर जब निपढ़ आ गरीब तबका के भरती होखे लागेला तब उहाँ हमरे परधानता बेसी रहेला। एक बेरी अचानके इहे देखे में आइल कि हमरा के चाहेवाला कुल मरद—मेहरारू अपना हाथ में हमके उठवले सड़क पर चल रहल बा। हमरा बुझाइल त कुछ ना बाकी सुनली कि अपन महिना के पइसा बढ़ावे खातिर ऊ लोग हड़कम्प मचवले रहे आ नारा बोलत हड़ताली रहे। हम झन्डा बन के ओह लोगिन के हाथ में लहरात रहीं, एहि से जल्दिए सरकार ओह लोगिन के माँग मान लिहलस। सरकारो के हमरा गूढ़ रूप आ एकता के बोली के सोझा झुकहीं के परल। अपन इहे कुल करतब के चलते हम त कहिलाँ कि गरीबी के दूर भगावल त हमरा बाएँ हाथ के खेल होला। हम अपना मुँहे अपन ढ़ेर बखान कइल नइखी चाहत बाकी तनी—मनी कुछु—कुछु बताके अपन नाँवहँसाई रोकल चाहतानी आ बस एतने कहल चाहतानी कि हमके देख के केहू अपन मुँह मत फेरो — हम बड़ा काम के चीज बानी।

हमार जनम गरीबे लोग के घर में होला। ऊ लोग घास—पात, मूँज—पतलो कुल बटोर—बटोर के आ रच—रच के ओके रसरी से बान्ह के हमार रूप बनावेला, फेरू एगो बोझा में हमके बान्ह के अपना कान्हा पर धर लेला आ घरे—घरे घूम—घूम के हमके लोग बेचेला। इहे कइला से ओह लोगिन के खरची चलेला। हमहूँ एह गरीब लोग के चीन्ह लेले बानी ओहिसे उन्हने लोगिन से सटल रहींलाँ।

हमार एगो अउरी गूढ़ मरम बा जेके सब ना बुझेला, ऊ हऽ कि जब केहू अपन पुरान घर छोड़के नया घर में जाला तब हमके पुरनका घर में ऊ कबो ना छोड़ेला। सबसे पहिले नया घर में हमरे प्रवेश होला। हमरा के लेके लोग एहसे जाला कि अपना लछिमीजी के लोग ओह पुरान जगह पर छोड़ल ना चाहेला। दूसर बात ई बा कि नया घरवा साफ ना होई त लोग, जीव, जन्तु, देबी—देवता रहिहन कहँवा। ई बात ठीक ओसहीं बा कि लाठियो ना टूटे आ सँपवो मरा जाला। नयका घर हम साफो कर देइलाँ आ ओह में धनो—दउलत भर जाला। भले हमरा एह गूढ़ रहस्य के केहू बूझ ना पावेला बाकी ई साँच बात बा। हम लोगिन से इहे कहब कि हमके पुरान बुझके अपना पुरनका घर में कबो छोड़ीं लोग मत नाहीं तऽ लछिमी माई ऊहें छुटल रह जाइब।

हम अपन कहनी रउवा सभे के सुनवलींहँ एहसे कि हमार गुन—अवगुन रउवा सभे जान जाइब त कबो हमके हीन ना बूझबऽ। फेरू अपन अवरी गुन—ढंग इयाद परी तऽ जरूर बताइब — अबे ना।

●●●

शब्द–अरथ पर ललित रचना

भाषा ज्ञान के भूत

❑ अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'

हम जवना शहर के बात करत हईं, ऊ एगो हइए ह। पढ़ुआ आ गियानी लोगन के त पथार परल ह उहाँ। एक से एक गियान के गोहरउर मिल जइहें एह शरि में। अइसन लोगन के संग साथ से हमरो समुझदानी कुछ अधिके – बुझनउक हो गइल रहे। एहसे केहू के चिट्ठी पतरी लिखत समय हमरा पर गियान के भूत सवार हो गइल लाजमी रहे।

हमरा लिखला के ई मतलब कतई ना ह कि एह शहर के छोड़के दुनिया में अउर कहीं बुझक्कड़ हइए ना हउअन। एगो दोसरा शहर में हमके अइसन एगो गियानी मिललन कि उनके देख के हमार गियान फुस्स हो गइल। कवनो काम से हम उहाँ गइल रहीं। जब खाये के बेरा भइल त उहाँ के चिकरलीं – 'मिस्टर आर बी रोसे ! चलीं लंच भकोसे।।' पहिलेत उनकर ई विद्वतापूर्ण बाते समुझदानी में ना घुसल। जोर दिहले बुझाइल कि उहाँ के हमरा नाँव 'रामभरोसे' के अंगरेजी कइ देले बानी 'आर बी रोसे'। उनकर अंगरेजी, हिंदी आ भोजपुरी तीनों भाषा के अथाह गियान के साथे उनकर काव्यो प्रतिभा के हम कायल हो गइलीं।

हम कहत रहीं कि गियानी लोगन के संग साथ पाइके हमरो गियानी दिमाग बाँस के पुलुई चढ़ि के इतरात रहे। आपन संपर्क प्रगाढ़ करे के खियाल से एक जने के चिट्ठी लिखलीं। चिट्ठी पावते ऊ फोन से हमके हड़कवलन– हम बड़ पेट वाला हईं जे तूँ हमके महोदर से संबोधित कइले बाड़ऽ।

महोदय की जगहा महोदर लिखा गइल रहे शायद। अब बताईं, लिखावट खराब भइला से भा हाथ काँप गइला से य के र लिखा गइल त हमार का दोस ? हम कान धइलीं, आगे से केहू के महोदय ना लिखब। एगो दूसर गियानी भाई के पाती लिखलीं त महाशय से संबोधित कइलीं। हमार किस्मते खराब रहे जे उनहूँ के डाँट सुने के परल। गलती से महाशय की जगहा महाशन लिखा गइल रहे। ऊ कहलन– कइसे जानत बाड़ऽ कि हम बहुत खाये वाला हईं, कबो खिअवले बाड़ऽ का? ओहू महाशय के कोपभाजन बने के परल बाकिर एगो नया शब्द के जानकारी भइला से हमके खुशी भी बहुत भइल।

एगो कवि महोदय के पाती लिखत समय बहुत सावधानी बरतलीं। विशेष रूप से महोदय शब्द के बार बार देखलीं। पाती पावते उनकर ओरहन आ गइल। कवि के कबि लिखा गइल रहे शायद। ऊ लिखलन, तोहार का नोकसान पहुँचवले बानीं कि कबि से सम्बोधित कइले बाड़ऽ हमके। जानेलऽ कबि के मतलब ? कबि के मतलब होला– हानिकारक भा नुकसान पहुँचावे वाला। एह बात के जिकिर जब हम अपना एगो गियानी दोस्त से कइलीं त कहलन– अच्छा भइल कि उनके कवि ना लिखलऽ। कवि लिखला पर ऊ अउर खुनुसइतन। जानेलऽ, गियानी लोगन खातिर कवि के एगो अउर अर्थ होला आ ऊ होला 'उल्लू'।

हम तय कइ लिहलीं कि अब केहू के चिठिए ना लिखब। गियानी लोगन के त बिल्कुल ना। तबो बातचीत में हमार गियान बघारल ना छूटल। एक दिन रस्ता चलत अपना एगो लँगोटिया यार से भेंट हो गइल। सलाम बंदगी, हालचाल के बाद हम उनका लइको के बारे में जाने चहलीं। लइका के नाँवे इयाद ना परत रहे। बड़ा मुश्किल से ओही अर्थ के दूसर एगो नाँव इयाद परल। झट पुछलीं– यमराज जी के का हाल बा। कहीं नोकरी ओकरी पवलन कि ना।

यमराज ! कवन यमराज ? ऊ पुछलन।

आरे तोहर लइका, अउर के ?

.......(शेष भाग पृष्ठ सं0 64 पर)

किताब–चरचा/समीक्षा

[एक] 'परिवार सतक' दोहा के बहाने पारिवारिक सरोकार के पड़ताल

❑ डॉ0 अरूणमोहन भारवि

"परिवार सतक"/कवि–हरिहर प्रसाद 'किसलय'/प्रकाशक : किसलय निलय, ग्राम + पोस्ट : राजापुर, भोजपुर, बिहार/पृष्ठ : 115, मूल्य : 120।

कविवर हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' के दोहा संग्रह 'परिवार सतक' में उनकर कल्पना के उभार के बखान देखे के मिलऽता। 'किसलय' ओह कालखण्ड के प्रतिनिधि बाड़न जब संयुक्त परिवार टूट चुकल बा। एघरी परिवार के माने बा – 'हम दो–हमारे दो'। दादा–दादी, नाना–नानी, काका–काकी, फूफा–फूआ – पुरान दिनन के पुरान बात हो गइल बा। 'परिवार सतक' में सइ–सइ दोहन के एगारह भाग–माने कुल एगारह सइ दोहा संकलित बा, जवन लगभग सबके सब नाता–रिस्ता, घर–परिवार आ सामाजिक–पारिवारिक सरोकार से जुड़ल बा। एह दोहन में पारिवारिक सरोकार, रिस्ता के मिठास, कड़वाहट, नया युग–बोध, भक्ति भाव, दिखावापन, बनावटीपन, रीति–नीति, व्यंग्य आ चुटकी के समावेश भइल बा। एह किताब के पूरा होखे में पांच साल के समय लागल बा। कवि के शब्दन में –

'तारिख मास एगारह, लिखल मन गढ़न्त
समहुत हऽ सन् सात में, सन एगारह अंत।'

दोहा एगो अर्धसम मात्रिक छन्द ह। एकर पहिला आ तिसरा आउर दूसरा आ चौथा चरण समान होला। दोहा में कुल 24–24 मात्रा होला। पहिला आ तिसरा में 13–13 आउर दूसरा आ चौथा चरण में 11 मात्रा होला आ अन्त में लघु होला। जइसे –

'नइहर के सिकाइत सुन, तन में लागे आग।
सास ससुर के सामने, जस फुफुकारे नाग।'

'किसलय' के 'परिवार सतक' पढ़ि के महाकवि बिहारी के सतसई इयाद आई– 'सतसइया के दोहरे औ नाविक के तीर। देखन में छोटन लगे घाव करे गम्भीर।'

बाकिर किसलय के भक्ति भावना अस सगुण नइखे, बलुक कबीर अस निरगुन बा–

'लोकलाज सब तेज के धइनी राउर हाथ।
करीं निमाह अब हमरो मानी स्वामीनाथ।'

'किसलय' के सामाजिक गैर–बराबरी, ढ़ोंग आ सरोकार पर मजाकिया चुटकी देख के कबीरदास के इयाद टटका हो जाता –

'चोर ठग पांडा बने, मंदिर करे बसेर
जनता सब आन्हर रहे, पूजा देत सबेर।'
देखि–देखि के मत हहरऽ नीक–नीक सौगात
सूखले रोटी घर के, नीके चोखा–भात।

माई–बाप के बेटा–पतोह से तिरस्कार पर किसलय चुप नइखन रह पावत –

'बाप मतारी बोझ बा चउकठ अस लतमार।
जे आवे से धांग दे, ढो न सके परिवार।'

'किसलय' के दोहन में मुहावरा के सटीक प्रयोग देखे के मिलता –

'ना घर के ना घाट के भइल कुकुर के हाल
बनल बनावल राज के कलह ले गइल खाल।'

ई नारी सशक्तिकरण के जमाना बा। युगबोध के एगो स्वर देखीं –

'निरभय नारी आज के, खुल्ला घुमे बजार।
दाँव न लागे केकरी, भंवरा चले हजार।'

'किसलय' के सामाजिक,पारिवारिक आ दुनियादारी के गहिरा अनुभव बा। इहाँ के जिनगी के प्रेम, स्नेह, कलह, छल–कपट के भोगल अनुभव के बेबाक बखान अपना दोहन में कइले बानी। परिवार, समाज आ बदलत समय के साँच अपना दोहन में सहजे ढंग से अभिव्यक्त कइले बानी।

एह किताब में कई दोहन के पुनरुक्ति खटकतबा, जइसे पन्ना 29 आ 32 पर एके दोहा छपल बा, जवन शायद भूल बस भइल होई। असहीं पन्ना 73 पर एगो दोहा छपल बा जवना में संख्या दोष बुझाता –

'चार पदारथ न लवटे, पानी, बानी, बान।
डाढ़ि से चूकल बानर, सभा चूकल जवान।'

एहिजा पानी, बानी, बान, बानर आ जवान के संख्या चार ना बलुक पांच हो जाता बा।

'परिवार सतक' साएद भोजपुरी के पहिला संकलन बा, जवना में एगारह एइ दोहन के बटोरल बा। विश्वास बा एह से भोजपुरी–साहित्य के भण्डार भरी।

●●●

[दू] मानवीय संवेदना के दिशा तलाश करत – 'भूमिहीन'

❑ कन्हैया सिंह 'सदय'

'भूमिहीन' (कहानी संग्रह)/: राम लखन विद्यार्थी/प्रकाशक : वनांचल प्रकाशन, तेनुघाट साहित्य परिषद्, सिंचाई कॉलोनी तेनुघाट (दाँया तट)–1,: बोकारो (झारखंड), प्रथम संस्करण– सन् 2012/पृष्ठ : 112, मूल्य : 175।

'भूमिहीन', हिंदी–भोजपुरी के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार श्री रामलखन विद्यार्थी जी के दोसरका भोजपुरी कहानी संग्रह ह। विद्यार्थी जी एगो कुशल कथा–शिल्पी के साथ–साथ सफल नाटककार, उपन्यासकार आ गीतकारो बानी। पुस्तक के नामकरण, संग्रह के कहानी 'भूमिहीन' के नाँव प कइल गइल बा। मौलिक कहानियन के एह संग्रह में जीवित रचयिता के जगही संपादक के नाँव (डॉ0 इन्द्रदेव नारायण सिंह) देखके विस्मय भइल। निश्चित रूप से ई कथाकार के मजबूरी आ संपादक/प्रकाशक के महत्त्वाकांक्षा के उजागर करत बा।

भोजपुरी के साहित्यिक कहानी के उद्भव, यथार्थवाद, आदर्शवाद आ आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के भाव–भूइं से भरल बा। चूँकि विद्यार्थी जी भोजपुरी कहानी के शैशव काल से जुड़ल कहानीकार रहल बानी, एह से एहू संग्रह के कहानियन प पुरनकी कथा–प्रवृतियन के प्रभाव, महसूस कइल जा सकत बा। गवईं आ कस्बाई परिवेश में रचल–बसल दलित वंचित लोगन के जिनिगी में विद्यमान गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, अंधविश्वास, कुरीति, कुव्यवस्था, सामाजिक बहिष्कार, सामंतवादी शोषण आ प्रशासनिक अत्याचार के भित्तिन प उदारता, हृदय–परिवर्तन आ आदर्शवाद के चित्ताकर्षक रंगोली देख के प्रेमयुगीन कहानियन के इयाद ताजा हो जाता।

संग्रह के पहिलकी कहानी 'किरिन फूटि गइल', नारी विमर्श प आधारित बिया। लाचार लखपतिया के जिनिगी के सहारा बा, कासी मूंज के बगान। जब ओकरा पता चलत बा कि बगान–मालिक ओकरा के

जोतवा के गाछ–बिरिछ लगावे जा रहल बाड़ें त ऊ मर्माहत हो जात बिया। दोसरे दिन ऊ मालिक से अपना अस्तित्व–रक्षा खातिर गोहार करत बिया। उनकर दिल पसीज जात बा आ ऊ बगान उजाड़े से मना कर देता बाड़े। इहे हाल बा 'मछरी' में बाहुबली ओह तिलेसर सिंह के जे जबरदस्ती चटुरा मछुवारा से मछरी झपट लेत बाड़ें आ दाम मंगला पर ओकरा के घाही कर देत बाड़ें। बाकिर, जेंवत समय उनका अपना करनी प पछतावा होता बा आ ऊ चटुरा के इलाज करावत बाड़ें

'मुनिया महरानी', समाज में फइलल जातिगत भेदभाव, छूआछूत, अंधविश्वास आ विसंगतियन के दफनावे आ इन्सानियत के अपनावे के संदेश देत बिया। कुलीन गनेसी आ चमारिन मुनिया के प्रेम विवाह जहाँ एक ओर अंध–परंपरा के अंगूठा देखावत बा, उहवें दूसरा ओर गांव में शिक्षा के अलख जगावे खातिर स्कूल खोलले ओह लोग के सकारात्मक सोच के उजागर करत बा। 'समझौता', डोमन के रीति–रिवाज, व्यवसाय आ रहन–सहन से सम्बन्धित कहानी बिया। बिसेसर के बढ़ंती से छोट भाई तिलेसर का अन्दर ईर्ष्या, जलन, प्रतिद्वंद्विता आ मनमोटाव के भाव जागत बा। बाकिर, जब ऊ अपना भतीजा के बियाह के बात सुनत बाड़ें त उनकर मन बदल जाता आ ऊ स्थिति से समझौता कर लेत बाड़ें।

'जानवर' के मछुवारिन गंगिया जहाँ एक तरफ सामंती साजिश, छल–कपट आ यौन–शोषण के आइना देखावत मानवीय संवेदना के आग्रह करत बिया, उहवें दोसरा तरफ 'पानी' के अतवरिया अइसन लोगन से हरकाह रहे के चेतावनी देत बिया।

'दोस्ती', समानता में सुशोभित होले, इहे सोचके 'एगो आउर सुदामा' के गरीब बिससेर अपना अमीर दोस्त के बेटी के बियाह में सम्मिलित नइखन हो पावत। बाकिर, अमीर घनश्याम बाबू के सोच एकरा विपरीत आ उदारवादी बा। 'मुनरी' कहानी के मुख्य स्वर बा– नशाखोरी, सुखमय दाम्पत्य जीवन के सबसे बड़ दुश्मन होला... प्यार, सुविधाभोगी नइखे हो सकत।

'भूमिहीन' कहानी ओह खानाबदोसन के जिनिगी प आधारित बिया जवनन का ना रहे के ठेकाना होला ना रोजी–रोटी के कवनो स्थाई जोगाड़। झुग्गी उजड़ला का बाद रात के पकड़ी–गाछ के नीचे सुभागी के प्रसव जहाँ आर्थिक समानता आ सामाजिक न्याय के खिल्ली उड़ावत बा, उहवें पुत्र–जनम के खुशी में रमता के थरिया बजावल सरकार, समाज आ प्रशासनिक व्यवस्था के गाल प तमाचा जड़त बा। तबो सहुवाइन के करुणा से अइसन लागत बा कि संवेदना अभी मरल नइखे।

'कुजात', महादलित मुसहरन के जिनिगी के अइसन दस्तावेज बा, जवना में गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, अभाव आ नशाखोरी के आधिपत्य बा। श्राद्ध भोज में दूर–दूर तक पैदल जायेवाला एहू लोगन तक विकास के किरिन पहुंचावे के उतजोग ई कहानी करत बिया। शहरी अपसंस्कृति के प्रभाव से उत्पन्न संवेदनहीनता पारिवारिक विघटन आ खुदगरजी के खुलासा कहानी 'चाँचर' में भइल बा। बड़ भाई, आपन पेट काट के छोट भाई के पढ़ावत बा। बाकिर, उहे जब नौकरीशुदा हो जात बा, त पारिवारिक दायित्व से विमुख होके अपना हिस्सा के पुश्तैनी जमीन बेंच देत बा आ शहर में मकान बनवा लेत बा। 'गरम कोट' के निरमल बाबू परदुख कातर बाड़ें। ऊ अपना खातिर गरम कोट खरीदे खातिर बाजार त जात बाड़ें। बाकिर, परिवार खातिर सुइटर–साल खरीद के लवट आवत बाड़ें।

'आजादी के लाश', तिकड़म आ शक्ति प्रदर्शन के बल जीतल तथाकथित नेतन के वादा खिलाफी आ भ्रष्टाचार से आहत एगो स्वतंत्रता सेनानी के पीड़ा, पछतावा आ मोहभंग के कहानी बिया। सवाल बा– जवना आजादी खातिर स्वतंत्रता सेनानी लो आपन सर्वस्व निछावर क दिहल ऊ आम लोगन तक काहें ना पहुंचलि? आपन अधिकार हासिल करे खातिर संघर्ष जरूरी बा।

कहानी 'गुनहगार', सांप्रदायिक सद्भाव आ भाईचारा के संदेश देत बिया। गरीबी आ बेरोजगारी

से उबरे खातिर पान गुमटी चलावे वाला किशोरवय राजू जब दबंग रहमान से उधार के पइसा मांगत बा त ऊ ओकरा के मारके घाही क देत बा। बाकिर, दोसरके दिन जब ऊ ओकरा माई के गोहार सुनत बा, त मर्माहत हो जाता बा। फेर त ऊ आपन भूल स्वीकार करत ईद के उपहार के साथ राजू के इलाजो करावत बा। 'बसंत फेरू बहुरल' में विधवा विवाह के वकालत कइल गइल बा।

एह कुल्हि कहानियन के पढ़ला का बाद निष्कर्ष रूप में कहल जा सकत बा कि संग्रह के अधिकतर कहानियन के मुख्य पात्र ऊ लोग बा जे समाज के सबसे निचला पावदान प खड़ा बा। लगभग सभ कहानी समाज में व्याप्त विसंगतियन, विकृतियन अंधविश्वास आ कुरीतियन पर कहीं ना कहीं अवश्य चोट करता मानवीय मूल्यन के संरक्षण आ संवर्द्धन काप्रति संवेदनशील आ सचेत देखाई देत बाड़ी सन। कुछेक कहानियन के कथ्य में संशय, जिज्ञासा, संघर्ष आ नवीनता के अभाव बा। जवना का चलते आधा कहानी पढ़त-पढ़त अंत के अनुमान हो जाता। शिल्पगत कसीदाकारी सामान्य स्तर के बा। शैली वर्णनात्मक आ भाषा खांटी भोजपुरी बिया। एह सभ का बावजूद, एह संग्रह के कहानी आजो प्रासंगिक बाड़ी सन। आज जब हर चीज बिकाऊ हो रहल बा, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक आ नैतिक मूल्यन के क्षरण हो रहल बा... कृतज्ञता, लोकलाज, एहसान आ आत्मीयता जइसन शब्दन के चरित्र शब्दकोश से पलायन हो रहल बा... अइसन हालत में सही दिशा-निर्देश आ आत्मबोध करावे वाली एह कहानियन के महत्त्व से इंकार नइखे कइल जा सकत। आशा बा एह कहानी संग्रह के भोजपुरी जगत में स्वागत आ सराहना होई। ●●●

[तीन] भोजपुरी में जपनिया छंद आ 'लुतुकी'

❑ **शिवजी पाण्डेय**

'लुतुकी' (हाइकू संग्रह) : डॉ0 शारदा पाण्डेय, प्रकाशक : तख्तोताज, इलाहाबाद प्रथम संस्करण-सन् 2012, मूल्य : 175।

भोजपुरी में सुनील कुमार पाठक (सीवान) के काव्य संग्रह 'नेवान' से हाइकू काव्य रूप के जवन पइसार भइल, त भोजपुरी में लिखे-पढ़े वालन के धेयान अपना ओर खिचलस। आगा चलि के भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के एही काव्य रूप पर केन्द्रित एगो अंक आइल। 'पाती' में 'छिउकिया' शीर्षक से कुछ हाइकू छपलन सऽ। हाइकु जापानी काव्यरूप रहे, जवना के अनुसरन हिन्दियो में भइल रहे। भोजपुरीयो में अनघा हाइकू लिखाइल। एह काव्यविधा भा रूप पर कुछ किताबो छपली सन। भोजपुरी में त सुनील पाठक का संग्रह अइला के ढेर दिन बाद 'लुतुकी' के रूप में विदुषी रचनाकार श्रीमती शारदा पाण्डेय के हाइकू संग्रह देखे के मिलल। अभिव्यक्ति खातिर कवनो विशेष काव्य रूप तबे माने राखेला जब ऊ अभिव्यक्ति के सोद्देश्य आ सार्थक बनावेला। भोजपुरी पढ़निहार-सुननिहार खातिर 'हाइकू' भलहीं रूचे-पचे वाला ना होखे, बाकि नया प्रयोग के लेहाज से एकर स्वागत भइल। हाइकू में प्रायः कवनों भाव विचार पर अभिव्यक्ति, तात्कालिक टिप्पणी भा संक्षिप्त क्षिप्र-कथन के होला, ऊ काव्यात्मक भइले पर सवदगर लागेला। वर्ण भा अक्षरन के तीन-पाँति, जवन पाँच, सात आ पाँच के क्रम में रहेले, गहिर-गम्भीर आ व्यापक जीवन अनुभूति, विचार आ दर्शन के 'सोगहग' रूप में प्रगट क देव, ई बहुत कठिन काम बा ओहू में मौलिक ढंग से भाषा का अनुरूप सुभाविक रंग-रूप में आ जाय त वाह-वाह, ना त... जै सीताराम होखे में देरी ना लागी।

ओइसे शारदा जी खुदे भूमिका में लिखले बाड़ी - "एह हाइकू में समाज प्रकृति, संस्कृति, संस्कार, अध्यात्म, आत्ममंथन, राजनीति, भ्रष्टाचार आस्था लगभग कूल्ही विन्दुअन के आभास बा" एकर मतलब ईहो भइल कि एह छोट काव्य रूप में 'आभास' करावे भर गुंजाइश बा।

अइसन कठिन काव्य रूप के आँकुस में कइके विदुषी कवियित्री शारदा पाण्डेय का 'लुतुकी' में कतने

लुत्ती दबाइल बाड़ी स जवना के – 'अगिन–बीज' अपना ऊष्मा आ आँच से भरल बा, जवना के जियतार अनुभव पढ़ला पर होत बा। ई सुधी–सुमझदार आ गुन–ग्राही पाठक का समझ आ ग्राहकता पर निर्भर करत बा कि आठ सौ लुतुकी में काम लायक लुत्ती ओकरो भेंटा जाव। ओइसे, कुछ असरदार आ सुभाविक लुत्ती लेसे लायक बाड़ी सन–

सूर्य चिन्हाला/दिशा से ना, चिन्हाले/दिशा सूर्य से।
मँजला पर/चमके बरतन/दमके मन।
अंगार खाईं/अंजोर दीहीं लोर/ना, हँसी बाँटी।
अत्याचारो/उमिर होला, कबो/ बितवे करी।

एह संग्रह में मन जिनिगी, दर्शन, प्रकृति, होली, राजनीति, देश चिन्ता, अन्ना सत्याग्रह, विविध, विश्वास, कामना, पर लिखल हाइकु अलगा–अलगा बारह अध्याय में दिहल गइल बाड़न स। कहल–सुनल सुनावल आ पढ़ल बहुत बातन के फेरू से इयादि दियावे में ई हाइकु समरथ बाड़न स। लोकोक्ति, मुहावरा, वैदिक–मंत्र, सूक्ति वाक्य आ भोजपुरी जीवन–संस्कृति से जुड़ल, कहावतन के हाइकू छन्द में फेर से बान्हें–छाने के कोसिस सराहनीय बाटे –

करेला सभे/उगते सुरुज के/पूजा, प्रणाम
सनसनात/तीर के घाव सहाला/बात के ना
सराहले धी/डोमघरे चलली/आँकुस बिना
हम आत्मज/अमृत के, मृत्यु से/काहे डरबि ?
भाव इहे बा/आपन दीया बनीं/अपने बल।
सभे निरोग/सुखी, शुभचिंतक/अदीन होखे।
इच्छा बा करीं/अन्हार–से अँजोर/अंतिम यात्रा।

एह संग्रह में विचार प्रधानता, सपाटबयानी, दुरूहता, कथन के अस्पष्टता का कारन कुछ हाइकु प्रभाव नइखन स छोड़ पावत बाकिर जहाँ जीवन आ प्रकृति से जुड़ल रागात्मक अभिव्यक्ति भइल बा, ऊहाँ कविता मन छू लेति बा। भोजपुरी भाषा के मन मिजाज आ सुभाव में रचाइल कुछ पाँति मौलिक बन पड़ल बाड़ी स। उमेद बा लेखिका के ई 'लुतुकी' प्रयोगवादी काव्य परम्परा का दिसाई आपन विशिष्ट पहिचान बनाई आ साहित्य के पढ़निहारन के सूक्ष्म आ सारगर्भ कथन, आ अभिव्यक्ति के आस्वाद कराई। ●●●

एह अंक के लेखक

डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव ए–1/601 बेवरली पार्क, सेक्टर –22/2 द्वारका, नई दिल्ली–75
डा0 प्रेम शीला शुक्ल, दक्षिणी उमा नगर, सी0सी0 रोड, देवरिया–274004
डा0 वशिष्ठ अनूप, प्रोफे0, हिन्दी विभाग, बी0एच0यू0 वाराणसी। मिथिलेश गहमरी, गहमर, गाजीपुर। अक्षय कुमार पाण्डेय, रंजीत मुहल्ला, रेवतीपुर, गाजीपुर, डा0 अरुण मोहन 'भारवि' आर्या एकेडमी, बंगाली टोला, बक्सर (बिहार), अतुल मोहन प्रसाद, डी0 के0 धर्मशाला मार्ग, बंगाली टोला, बक्सर (बिहार) 802101। कन्हैया सिंह 'सदय'कार्तिक नगर, खड़ंगाझार, टेल्को वर्क्स, जमशेदपुर–831004। विष्णुदेव तिवारी, तिवारीपुर, दहिबर, बक्सर (बिहार)। शिवजी पाण्डेय, मैरीटार, बलिया। शशिप्रेम देव, प्रवक्ता, कुँवर सिंह इण्टर कालेज, बलिया। ओम जी प्रकाश द्वारा शशिप्रेम देव, अरुणाचल प्रदेश। डा0 आशारानीलाल, 823 टाइप–4, लक्ष्मी बाई नगर, नई दिल्ली–23, अनन्त प्रसाद रामभरोसे, सागरपाली, बलिया। ओम प्रकाश सिंह द्वारा अरोरिया डाट काम। ब्रम्हेश्वर नाथ शर्मा, महाबीर हास्पिटल के पास नई बस्ती, काशीपुर, बलिया।

संस्था/साहित्यिक/सांस्कृतिक गतिविधि रिपोट

विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया इकाई के सालाना गतिविधि

❑ **प्रस्तुति : हीरालाल 'हीरा'**

विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया इकाई के पछिला अधिवेशन मार्च 2012 में विभिन्न जनपदन से जुटल भोजपुरी के विद्वान आ कवि, लेखकन के विचार विमर्श में भोजपुरी भाषा साहित्य के वर्तमान स्थिति के आंकलन का बाद अन्य भाषा सब के समानान्तर भोजपुरी में नया लेखकन के नाव ना उभर पावल (खासकर गद्य साहित्य में), प्रकाशन वितरण आ प्रोजेक्शन कम भइला के बात उठावल गइल रहे। डॉ0 अरूणेश नीरन, डॉ0 प्रेमशीला शुक्ल, डॉ0 रघुवंशमणि पाठक, विष्णुदेव तिवारी, डॉ0 कमलेश राय, डॉ0 प्रकाश उदय, डॉ0 अशोक द्विवेदी आदि लोग श्री शम्भुनाथ उपाध्याय के अध्यक्षता में संपन्न विचारगोष्टी से निकलल निष्कर्ष, सम्मेलन के बलिया इकाई के एकजुट कार्यप्रणाली में नया उछाह के संचार कइलस। एह अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में भोजपुरी के चर्चित कवि, गीतकार लोग भाग लिहल, जवना से समकालीन भोजपुरी कविता के नया तेवर, नया विषय वस्तु आ नया ठाट से बलिया के लोग रूबरू भइल। गिरधर करुण, डॉ0 कमलेश राय, डॉ0 प्रकाश उदय, डॉ0 अशोक द्विवेदी, भालचन्द त्रिपाठी, मिथिलेश गहमरी, कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र', रामानन्द रमन, विष्णुदेव तिवारी, विजय मिश्र, कन्हैया पाण्डेय, श्री त्रिभुवन सिंह 'प्रीतम', श्री शम्भुनाथ उपाध्याय, मऊ से आइल श्री दयाशंकर तिवारी, हीरालाल 'हीरा', शिवजी पाण्डेय 'रसराज', बृजमोहन प्रसाद 'अनाड़ी', जनार्दन प्रसाद चतुर्वेदी, राजेन्द्र भारती, डॉ0 शत्रुघ्न पाण्डेय, शशि 'प्रेमदेव', अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' आदि लोगन के काव्य–पाठ से बलिया भोजपुरी सम्मेलन के गरिमा बढ़ल आ रचनात्मकता गति मिलल।

अइसे त हरेक महीना सम्मेलन के मासिक बइठकी आ कवि गोष्ठी होत रहेले। श्रीराम विहार कॉलोनी में खुलल सम्मेलन कार्यालय एह दिसाईं हमेशा उतजोग करत रहेला। एमें से एगो विशेष कवि गोष्ठी अपना वरिष्ठ सदस्य श्री शशि 'प्रेमदेव' जी के आग्रह पर उनुका आवास पर आयोजित कइल गइल। शरद ऋतु के अगवानी में एह कवि गोष्ठी में बाहर से आइल कवि भगवती प्रसाद द्विवेदी आ विष्णुदेव तिवारी शामिल रहलन। एकरा अलावा सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्य डॉ0 श्रीराम सिंह के उल्लेखनीय जोगदान रहे। नया सक्रिय सदस्यन में डॉ0 ओमप्रकाश सिंह, श्री बृजमोहन प्रसाद 'अनाड़ी', श्री रमेश चन्द्र, श्री रवीन्द्र ओझा 'एडवोकेट', डॉ0 अमर नाथ शर्मा, श्री गोपाल सिंह, प्रवक्ता रामेश्वर सिंह, प्रो0 रामसुन्दर राय, श्री नरेन्द्र यादव 'एडवोकेट', श्री धीरा प्रसाद, श्री ब्रजेश कुमार द्विवेदी, श्री कौशलेन्द्र कुमार सिंह, श्री कैलास प्रसाद चौरसिया आदि लोग सम्मेलन के बइठक आ विशेष आयोजन में आपन सक्रिय भागीदारी कइल।

एही क्रम में जनपद के चर्चित समाजसेवी, साहित्यकार, डॉ0 भरत पाण्डेय के श्रद्धांजलि सभा के बाद भोजपुरी के सुप्रसिद्ध कथाकार गिरिजा प्रसाद राय 'गिरिजेश' के निधन पर बलिया इकाई शोकसभा आयोजित कइलस। जनवरी महीना में 'पाती' पत्रिका के संपादक डॉ0 अशोक द्विवेदी जी का आवास पर काव्यसंगोष्ठी आयोजित कइल गइल, जवना में सर्व श्री शम्भुनाथ उपाध्याय, डॉ0 अशोक द्विवेदी, श्री विष्णुदेव तिवारी, शशि 'प्रेमदेव', हीरालाल 'हीरा', शिवजी पाण्डेय 'रसराज', रमेश चन्द्र, राजीव पाण्डेय, कन्हैया पाण्डेय, विजय मिश्र, के0के0 सिन्हा, डॉ0 श्रीराम सिंह आदि लोग भाग लेले रहल।

02 दिसम्बर के सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्य डॉ0 श्रीराम सिंह के किताब 'सबेरा हो गया है' के विमोचन विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय, सचिव आ 'पाती' पत्रिका के संपादक डॉ0 अशोक द्विवेदी जी कइलीं। एह कार्यक्रम के आयोजन सम्मेलन कुँवर सिंह इण्टर काजेल, बलिया के सभागार में कइल गइल। जनपद के बरिष्ठ साहित्यकार डॉ0 जनार्दन राय कथा संग्रह के कहानियन पर आलेख पाठ कइलन। डॉ0

शत्रुघ्न पाण्डेय कहानिय के विषय वस्तु पर प्रकाश डललन, डॉ0 जैनेन्द्र पाण्डेय कहलन कि चौहत्तर बरिस के उमिरि में छपल डॉ0 श्रीराम सिंह के एह कहानी संग्रह से ई सनेस मिलता कि लेखन खातिर कवनों साहित्यिक विद्वता आ उमिरि माने नइखे राखत। एकरा खातिर संवेदना महत्वपूर्ण बा। कथाकार विष्णुदेव तिवारी कहानी के रचना विधान के लक्ष्य करत आपन विचार रखलन। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ0 अशोक द्विवेदी कहलन के 'सबेरा हो गया है' के कहानी मानवीयता आ जीवन मूल्यन के फेरू से स्थापित करे आ सम्बन्धन के रचनात्मक संरक्षण का कोशिश के कहानी बाड़ी स। एमे जिनिगी के प्रेम, सुघराई आ सामाजिक टूटन के साथ विसंगतियन के सहज अभिव्यक्ति भइल बा। अध्यक्ष डॉ0 रघुवंशमणि पाठक जी कहलन कि डॉ0 श्रीराम सिंह के किताब में भाषा, भाव आ विचार के समन्वय भइल बा। एह समारोह में विनीता पाण्डेय आ प्रो0 रामसुन्दर राय के सुन्दर गायन सुने के मिलल। आयोजक श्री शम्भुनाथ के साथ जनपद के चर्चित साहित्यकार श्री त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम', हीरालाल 'हीरा', विजय मिश्र, कन्हैया पाण्डेय, अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे', शिवजी पाण्डेय 'रसराज', डॉ0 राजेन्द्र भारती, बृजमोहन प्रसाद 'अनाड़ी', डॉ0 जनार्दन चतुर्वेदी, शशि प्रेमदेव अउर डॉ0 ओम प्रकाश सिंह के अलावा नगर के कई पत्रकार, साहित्यकार आ विद्वान जुटल रहे लोग।

आयोजन में सम्मेलन के सक्रिय सदस्य आ कुँवर सिंह इण्टर कॉलेज, बलिया के वरिष्ठ प्राध्यापक शशि 'प्रेमदेव' के सहजोग आ व्यवस्था सराहे जोग रहे। ●●●

'पाती' के 'अक्षर-सम्मान' समारोह

❏ प्रस्तुति : शशिप्रेमदेव

भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका 'पाती' 1979 में सुरू भइल भोजपुरी में पत्रिका के उद्देश्य भाषा–साहित्य के रचनात्मक मंच तइयार कइला का साथ राष्ट्रीय स्तर पर नया पहिचान दियावल रहे। भोजपुरी के उभरत कवि, लेखकन के रचनात्मक प्रतिभा के स्वर आ सार्थकता प्रदान करे में एह पत्रिका के सम्वाद क साधनहीनता के बेरोजगारी आ अर्थाभाव का कारन पत्रिका के प्रकाशन रूकि गइल। फेरू नया सिरा से जनवरी 1990 में 'नरेन्द्र शास्त्री स्मृति' अंक का जरिये फिर एकर प्रकाशन होखे लागल। धीरे–धीरे पत्रिका के नया टीम बनलि आ सामयिक संकटन का बादो ई पत्रिका लगातार छपे लागलि। फेरू त पत्रिका के स्तर, नया तौर तरीका, सम्पादकीय कौशलस्तरीय रचना सामग्री एह पत्रिका के एगो विशिष्ट रूप सभका सोझा रखलस। कथा प्रध ाान पत्रिका रहला का बावजूद एमे वैचारिक, ललित निबन्ध, आलोचनात्मक सामग्री, भाषा, समाज, संस्कृति से जुड़ल आलेख का कारन, दोसरो भाषा से जुड़ल रचनाकारन में 'पाती' आपन पइठ बनवलस। कविता, एकांकी, कहानी, आलोचना, मीडिया जगत, लोकसाहित्य, बाल साहित्य, नाटक, गजल आदि पर 'पाती' के पचासवाँ आ इकावन, बावन अकादमिक संग्रहणीय अंक बनलन स।

वरिस 2010–11 में 'पाती' से जुड़ल साहित्यकारन के बइठक में एगो विचार आइल कि 'पाती' से प्रारम्भिक रूप से जुड़ल भोजपुरी के वरिष्ठ, कवि, कथाकारन के पत्रिका का ओर से सम्मानित कइल जाए के चाहीं। वरिस 2012 में एकर रूप रेखा बनल त ईहो तय भइल कि दिहल जाए वाला सम्मान गरिमामय आ भव्य लागे। एह क्रम में मार्च 2013 में विश्व भोजपुरी सम्मेलन (बलिया इकाई) का सहयोग से, कुँवर सिंह इण्टर कॉलेज, बलिया में 17 मार्च 2013 के 'पाती–अक्षर–सम्मान समारोह' आयोजित भइल।

सम्मेलन के अध्यक्षता करत डॉ0 श्रीराम सिंह (जीव विज्ञानी आ भू0पू0 प्राचार्य) कहलन कि 'पाती' वास्तव में एगो अइसन रचनात्मक मंच बनल जवन भोजपुरी भाषा–साहित्य आ पत्रकारिता के एगो नया पहिचान दिहलसि। एकरा रचनात्मक आन्दोलन से जुड़ के कइगो लेखकन के राष्ट्रीय स्तर पर पहिचान बनल आ सम्मान बढ़ल। मुख्य अतिथि श्री दयाशंकर तिवारी, सम्पादक डॉ0 अशोक द्विवेदी आ अध्यक्ष डॉ0 श्रीराम सिंह के सरस्वती के चित्र माल्यार्पण आ शिवजी पाण्डेय 'रसराज' के सरस्वती वन्दना का बाद सम्मान समारोह के भव्य शुरुआत

भइल। पत्रिका परिवार का ओर से सम्पादक डॉ0 अशोक द्विवेदी 'अक्षर–सम्मान प्रमाण पत्र', स्मृति चिन्ह, शाल, आ नारियत देके चर्चित कवि श्री आनन्द सन्धिदूत, जनपदीय वरिष्ठ कवि श्री शम्भुनाथ उपाध्याय के साथे साथे प्रसिद्ध युवा कथाकार श्री विष्णुदेव तिवारी आ वरिष्ठ जनपदीय भोजपुरी लेखक श्री राजगुप्त के सम्मानित कइलन। एही अवसर पर चर्चित कथाकार श्री रमेशचन्द्र के कहानी संग्रह 'चिमनी के धुँआँ' के विमोचन मुख्य अतिथि आ डॉ0 प्रकाश उदय कइलन। एह अवसर पर सम्मानित कवि लेखक लोग आपन–आपन विचार प्रगट कइल। डॉ0 ओमप्रकाश सिंह (अँजोरिया डाट कॉम) कवि–लेखकन से नेट पर जुड़े खातिर एगो पम्फलेट वितरन कइलन।

समारोह के दुसरा चरण में प्रतिनिधि कवि सम्मेलन भइल जवना में सर्व श्री दयाशंकर तिवारी, डॉ0 कमल राय, आनन्द संधिदूत, डॉ0 प्रकाश उदय, शम्भुनाथ उपाध्याय, डॉ0 अशोक द्विवेदी, मिथिलेश गहमरी, अक्षय कुमार पाण्डेय, विजय मिश्र, कन्हैया पाण्डेय, शशिप्रेमदेव, हीरालाल 'हीरा', शिवजी पाण्डेय 'रसराज', बृजमोहन प्रसाद अनारी, डॉ0 जनार्दन चतुर्वेदी, त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम', अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे', रामेश्वर सिंह, शंकर शरण काफिर आदि कवि लोगन के समय–सन्दर्भ से जुड़ल, सरस काव्य पाठ से श्रोता आ बटुराइल जनसमुदाय भाव विभोर हो उठल। ●●●

भाषा ज्ञान के भूत......... पृ0 55 का शेष

ई सुनते ऊ बिगड़ के खाड़ हो गइलन। यमराज हऽ हमरा लइका के ?

तब का ह भाई ? हमरा त इयाद नइखे परत।

धरमेन्दर ह !

अरे यार, धरमेन्दर आ यमराज में का अंतर बा ? दूनो त एक दूसरा के परवाची ह।

देखऽ, परवाची अरवाची हम ना जानीं। आगे से अइसन कहिहऽ जिन–कहत ऊ आगे बढ़ि गइलन।

एक दिन संग के पढ़ल हमार एगो दोस्त राह में मिल गइलन। उनकरो नाँव इयाद ना परत रहे। बड़ा मुश्किल से इयाद परल, कलंकी नाँव ह शायद !

कलंकी नाँव सुनते ऊ बिदक गइलन– हमके पहिचानत नइखऽ का ?

पहिचानत हईं भाई ! कइसे ना पहिचानब भला। साथे पढ़लीं–लिखलीं जा। अतना दिन के साथ बा। भला भुला जाइब तोहरा के?

तब कलंकी काहे कहलऽ हमके। हमार नाँव चंद्रमा न हऽ – ऊ कहलन।

हँ, हँ चंद्रमा भाई ! असल में बुढ़उती में समुझदानी कमजोर होइए जाला। अच्छा चलऽ, चंद्रमा आ कलंकी में कवनो अंतर नइखे। दूनो के मतलब एक्के भइल। देखऽ, मतलब–ववलब हम ना जानीं। केहू के नाँव बिगारल ठीक ना ह– कहत ऊ आगे बढ़ि गइलन।

हमार पड़ोसी के तेल–घीव के दोकान बा। एक दिन कवनो आदमी उनका बारे में पुछलस त हम कहि दिहलीं–तेल बेचे गइलन। ओकरा ई बात बाउर बुझाइल। कहलस–ठीक से जबाब ना दे सकेलऽ।

हमरा ना बुझाइल, हम बेठीक का कहि दिहलीं।

एक दिन अपना बड़ साली के साथे बाजार में घूमत रहीं। उनका हाथ में सामान से भरल झोरा रहे। कवनो परिचित मिललन त उनसे परिचय करवलीं– ई हमार कुली हईं। साली आँख तरेरे लगली। घरे आके अपना बहिन से शिकायत कइली त घर में बखेड़ा खड़ा हो गइल। हमरा लाख समुझवला के बादो केहू माने के तइयार ना भइल कि बड़ साली के कुली कहल जाला। कई दिन ले घर में मुँह फुलउअल बनल रहे। हम कान धइलीं कि आगे से गियानी बने के कोशिश त नाहिए करब, कवनो गियानी–धियानी के चक्करो में ना पड़ब। गियान के भूत अब हमरा कपार पर से उतर गइल रहे। ●●●